

लुम्बिनी प्रदेशको आर्थिक गतिविधि अध्ययन

वार्षिक प्रतिवेदन

(आ.व. २०७८/७९)



नेपाल राष्ट्र बैंक

सिद्धार्थनगर कार्यालय

पुस २०७९

भूमिका

नेपाल राष्ट्र बैकद्वारा जारी “आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन २०७६ (प्रथम संशोधन, २०७९)” बमोजिम लुम्बिनी प्रदेशको कार्यक्षेत्रभित्र पर्ने १२ वटा जिल्लाहरूको कृषि, उद्योग, सेवा र पूर्वाधार तथा यस अन्तर्गत तोकिएका अन्य शीर्षकहरूको निर्दिष्ट ढाँचामा वार्षिक तथ्याङ्क संकलन गरी सो बमोजिम आर्थिक गतिविधिको अध्ययन विश्लेषणमार्फत आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को यस वार्षिक प्रतिवेदन तयार पारिएको छ ।

प्रदेशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको ३०.१ प्रतिशत, उद्योग क्षेत्रको १५.४ प्रतिशत र सेवा क्षेत्रको ५४.५ प्रतिशत योगदान रहेको छ । यसले अर्थतन्त्रको संरचनामा क्रमिक परिवर्तन भई अर्थतन्त्र क्रमशः कृषिप्रधानबाट सेवाप्रधान तर्फ रूपान्तरण हुँदै गएको देखाउँछ । यद्यपि, कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान न्यून रहेकोले सोमा वृद्धि गरी उत्पादनशील रोजगारी सिर्जना गर्न थप प्रयास गर्नुपर्ने अवस्था रहेको छ । यस प्रदेश मलिलो कृषि भूमि, बहुखेति गर्न सकिने भौगोलिक अवस्था लगायतका कारणहरूले गर्दा कृषि उत्पादन तथा पशु व्यवसायको लागि संभावित क्षेत्रको रूपमा रहेको छ । त्यसैगरी, भारतीय नाकासँग जोडिएको देशको प्रमुख व्यापारिक नाकाले यस क्षेत्रलाई व्यापारिक महत्त्वको रूपमा समेत विकास गरेको छ । थप औद्योगिकीकरणको संभावना, कृषि क्षेत्रको गतिशील विकास एवं बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूको बाक्लो उपस्थितिले वित्तीय पहुँच बढ्न गई यस क्षेत्रको बहुआयामिक विकास हुने संभावना रहेको छ ।

हाल लुम्बिनी प्रदेशको पहिचानमा थप हुन पुगेको गौतमबुद्ध अन्तराष्ट्रिय विमानस्थलले आन्तरिक तथा अन्तराष्ट्रिय हवाई सेवा उपलब्ध गराइरहेको छ । यद्यपि, हालसम्म उक्त विमानस्थल आफ्नो क्षमताअनुसार संचालन हुन नसकेतापनि आवश्यक पहल भई क्षमताबमोजिम संचालन हुन सकेमा यसबाट लुम्बिनी प्रदेशका विभिन्न धार्मिक तथा ऐतिहासिक क्षेत्रहरूमा पर्यटकिय गतिविधि बढ्नुका साथै यसबाट श्रृंखलाबद्ध रूपमा अन्य आर्थिक गतिविधिमा समेत व्यापक बिस्तार हुने देखिन्छ । यसैगरी, थप औद्योगिक क्षेत्रको रूपमा रूपन्देहीको मोतिपुरमा र बाँकेको नौवस्तामा नयाँ औद्योगिक क्षेत्रहरू स्थापना एवं भैरहवाको विशेष आर्थिक क्षेत्र पूर्ण क्षमतामा सञ्चालनमा ल्याउने कार्यपश्चात् औद्योगिक गतिविधिमा समेत उल्लेखनीय वृद्धि हुने अनुमान गर्न सकिन्छ । साथै लुम्बिनी प्रदेश सरकारको बजेट कार्यान्वयन तथा यस प्रदेश अन्तर्गतका स्थानीय तहको बजेट, कार्यक्रम तथा अघिल्लो अवधिको बजेटको कार्यान्वयन अवस्थाको बारेमा समेत यस प्रतिवेदनमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रादेशिक आर्थिक गतिविधीहरूलाई समेटि तयार पारिएको यस प्रतिवेदन सरकारी निकाय, अर्थशास्त्री, अनुसन्धानकर्ता, उद्योगपति, व्यवसायी, शिक्षक, लगायत सबै सरोकारवालाहरूलाई उपयोगी हुने विश्वास लिएकी छु । अन्त्यमा, प्रतिवेदन तयार पार्न आवश्यक विवरण र तथ्याङ्क उपलब्ध गराउनु हुने सबै निकाय र पदाधिकारी तथा संयोजन गर्नुहुने उप निर्देशक श्री गुलाव धवल तथा आर्थिक अनुसन्धान इकाईका सहायक निर्देशक श्री सुसिल खनाल, प्रधान सहायक श्री कमल प्रसाद आचार्य र सहायकद्वय श्री सुमना पाण्डे र श्री मनिश श्रीवास्तव एवम् नेपालगञ्ज कार्यालयका उप-निर्देशक श्री पञ्चलक्ष्मी मानन्धर, सहायक निर्देशकद्वय श्री लवली श्रीवास्तव र श्री दिपेश यादव, प्रधान सहायक श्री विष्णु बहादुर के.सी. र सहायक श्री रवि कनौजीयालाई समेत धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

रञ्जना पण्डित पौडेल
निर्देशक
नेपाल राष्ट्र बैक, सिद्धार्थनगर

| | विषय-सूची | पेज नं. |
|--------------|--|---------|
| आवरण पृष्ठ | | |
| भूमिका | | ii |
| विषय सूची | | iii |
| सारांश | | vi |
| परिच्छेद १ : | अध्ययन परिचय | |
| | १.१ पृष्ठभूमी | १ |
| | १.२ अध्ययनको उद्देश्य | १ |
| | १.३ प्रतिवेदन तर्जुमा विधि, संरचना र तथ्याङ्क संकलन | १ |
| | १.४ अध्ययनको सीमा | ३ |
| | १.५ अध्ययन प्रतिवेदनको ढाँचा | ३ |
| परिच्छेद २ : | प्रदेशको तुलनात्मक स्थिति | |
| | २.१ राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा प्रदेशको क्षेत्रगत हिस्सा | ४ |
| | २.२ अन्तरप्रदेश तुलना (अघिल्लो अवधिसँग) | ४ |
| | २.३ प्रादेशिक क्षमता, सम्भावना तथा चुनौती | १३ |
| परिच्छेद ३ : | कृषि क्षेत्र | |
| | ३.१ कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र | १६ |
| | ३.२ कृषि उत्पादन | १९ |
| | ३.३ पशुपंक्षी, माछा उत्पादन | २३ |
| | ३.४ वनजन्य उत्पादन | २५ |
| | ३.५ सिँचाइ तथा मौसम | २६ |
| | ३.६ क्षेत्रगत कृषि कर्जा | २६ |
| | ३.७ कृषि क्षेत्रका सम्भावना र चुनौती | २८ |
| परिच्छेद ४ : | उद्योग क्षेत्र | |
| | ४.१ उद्योगको क्षमता उपयोग, उत्पादन तथा रोजगारी | ३२ |
| | ४.२ क्षेत्रगत औद्योगिक कर्जा | ३४ |
| | ४.३ औद्योगिक क्षेत्रको सम्भावना र चुनौती | ३६ |
| परिच्छेद ५ : | सेवा क्षेत्र | |
| | ५.१ पर्यटन | ३८ |
| | ५.२ सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट | ४१ |
| | ५.३ वित्तीय सेवा | ४१ |
| | ५.४ यातायात तथा संचार | ४७ |
| | ५.५ शिक्षा तथा स्वास्थ्य | ४७ |
| | ५.६ सेवा क्षेत्र कर्जा | ४९ |
| | ५.७ सहकारी क्षेत्र | ५० |
| | ५.८ सेवा क्षेत्रको सम्भावना र चुनौती | ५१ |
| परिच्छेद ६ : | पूर्वाधार र रोजगारी | |
| | ६.१ पूर्वाधार क्षेत्र | ५३ |
| | ६.२ पूर्वाधार क्षेत्रका सम्भावना र चुनौती | ५६ |
| | ६.३ रोजगारी | ५९ |
| | ६.४ रोजगारीका सम्भावना र चुनौती | ६० |
| परिच्छेद ७ : | संघीय एवम् प्रादेशिक कार्यक्रम तथा योजना | |
| | ७.१ कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन | ६२ |
| | प्रादेशिक सरकारी बजेटको प्रगति अवस्था | ६३ |
| | स्थानीय तहको कार्यक्रम तथा परियोजना कार्यान्वयन | ६४ |
| | ७.२ अन्य कार्यक्रमको कार्यान्वयन | ६६ |
| परिच्छेद ८ : | आर्थिक परिदृश्य | |
| | ८.१ कृषि उत्पादन | ६९ |
| | ८.२ औद्योगिक उत्पादन | ७० |
| | ८.३ सेवा क्षेत्र | ७० |
| | ८.४ पूर्वाधार क्षेत्र | ७१ |

| तालिका-सूची | पेज नं. |
|--|----------------|
| तालिका २.१: कुल जलविद्युत् उत्पादन र पहुँच जनसंख्यामा प्रदेशगत योगदान | ६ |
| तालिका २.२ प्रदेशगत वित्तीय अवस्था | ७ |
| तालिका २.३: प्रदेशगत वन क्षेत्रको अवस्था | ८ |
| तालिका २.४: लैङ्गिक अनुपात र जनघनत्वको प्रदेशगत अवस्था | १३ |
| तालिका ३.१: खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको भू-क्षेत्रको जिल्लागत अवस्था | १६ |
| तालिका ३.२: तरकारी बालीले ढाकेको भू-क्षेत्रको जिल्लागत अवस्था | १७ |
| तालिका ३.३: फलफूलले ढाकेको भू-क्षेत्रको जिल्लागत अवस्था | १८ |
| तालिका ३.४: मसलाले ढाकेको भू-क्षेत्रको जिल्लागत अवस्था | १८ |
| तालिका ३.५: खाद्य तथा अन्य बाली उत्पादनको जिल्लागत अवस्था | १९ |
| तालिका ३.६: तरकारी बालीको जिल्लागत उत्पादन अवस्था | २० |
| तालिका ३.७: फलफूल उत्पादनको जिल्लागत अवस्था | २१ |
| तालिका ३.८: मसला उत्पादनको जिल्लागत अवस्था | २१ |
| तालिका ३.९ लुम्बिनी प्रदेशमा मौरी पालनको अवस्था | २२ |
| तालिका ३.१०: दुध उत्पादनको जिल्लागत अवस्था | २३ |
| तालिका ३.११: मासुको जिल्लागत उत्पादन अवस्था | २४ |
| तालिका ३.१२: जिल्लागत कृषि कर्जाको अवस्था | २७ |
| तालिका ४.१: लुम्बिनी प्रदेशमा २०७९ असार मसान्तसम्ममा दर्ता भएका उद्योगको विवरण | ३१ |
| तालिका ४.२: समीक्षा अवधिमा औद्योगिक उत्पादनको अवस्था | ३३ |
| तालिका ४.३: कुल औद्योगिक कर्जामा जिल्लागत हिस्सा | ३५ |
| तालिका ५.१: पर्यटक आगमन, रोजगारी तथाहोटल अकुपेन्सी दरको अवस्था | ३८ |
| तालिका ५.२: हवाई सेवा कम्पनीको सिट क्षमता अवस्था | ३९ |
| तालिका ५.३: सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेटको अवस्था | ४१ |
| तालिका ५.४: जिल्लागत निक्षेप, कर्जा र कर्जा/निक्षेप अनुपातको अवस्था | ४३ |
| तालिका ५.५: बिपन्न वर्ग कर्जा, पुनरकर्जा र सहूलियपुर्ण कर्जाको जिल्लागत हिस्सा | ४४ |
| तालिका ५.६: इजाजतपत्रप्राप्त मनिचेञ्जर तथा विदेशी मुद्रा सटही एजेन्सीहरुको विवरण | ४५ |
| तालिका ५.७: फण्ड ट्रान्सफर | ४५ |
| तालिका ५.८: परिवर्त्य विदेशी मुद्रा खरिद विवरण | ४६ |
| तालिका ५.९ : भारतीय मुद्रा खरिद विक्री विवरण | ४६ |
| तालिका ५.१० : यातायात सेवाको अवस्था | ४७ |
| तालिका ५.११ : सञ्चार क्षेत्रको अवस्था | ४७ |
| तालिका ५.१२ : शिक्षा सेवा क्षेत्रको विवरण | ४८ |
| तालिका ५.१३: स्वास्थ्य क्षेत्रको स्थिती विवरण | ४९ |
| तालिका ५.१४: कुल सेवा कर्जाको जिल्लागत अवस्था | ४९ |
| तालिका ५.१५: बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाको विवरण | ५१ |
| तालिका ६.१ : लुम्बिनी प्रदेशमा प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम | ५९ |
| तालिका ६.२: जिल्लागत रोजगारीको विवरण | ६० |
| तालिका ७.१: प्रादेशिक सरकारी बजेटको प्रगति विवरण | ६३ |
| तालिका ७.२: प्रादेशिक सरकारी राजश्व | ६४ |
| तालिका ७.३ : प्रादेशिक अनुदान र हस्तान्तरण | ६४ |
| तालिका ७.४: छनौटमा परेका स्थानिय तहहरुको खर्च | ६४ |
| तालिका ७.५: छनौटमा परेका स्थानिय तहहरुको राजश्व संकलनको | ६५ |
| तालिका ७.६: छनौटमा परेका स्थानिय तहहरुको अनुदान तथा हस्तान्तरण | ६६ |

| चाई-सूची | | पेज नं. |
|--|--|----------------|
| चाई २.१: कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्रदेशगत योगदान | | ४ |
| चाई २.२: प्रदेशगत आर्थिक वृद्धिदर | | ५ |
| चाई २.३: कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्रदेशको क्षेत्रगत योगदान | | ५ |
| चाई २.४: मुलुकको कुल उद्योग दर्ता र लगानीमा प्रदेशगत योगदान | | ६ |
| चाई २.५: प्रदेशगत बीमा तथा निर्जीवन बीमा शाखा संख्या | | ८ |
| चाई २.६: विदेशी लगानी स्वीकृती पाएका उद्योगहरूको प्रदेशगत अवस्था | | ९ |
| चाई २.७: प्रदेशगत रुपमा दर्ता भएका कम्पनीको अवस्था | | १० |
| चाई २.८: प्रदेशगत सडक संजालको अवस्था | | १० |
| चाई २.९: प्रदेशगत बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको अंश | | ११ |
| चाई २.१०: प्रदेशगत विद्यालयको अवस्था | | ११ |
| चाई २.११: प्रदेशगत जनसंख्या वितरणको अवस्था | | १२ |
| चाई २.१२: प्रदेशगत जनसंख्या वृद्धिदरको अवस्था | | १२ |
| चाई ३.१: खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको भू-क्षेत्रको अवस्था | | १६ |
| चाई ३.२: फलफूलले ढाकेको भू-क्षेत्रको परिवर्तन अवस्था | | १७ |
| चाई ३.३: मसलाले ढाकेको भू-क्षेत्रको परिवर्तन अवस्था | | १८ |
| चाई ३.४: खाद्य तथा अन्य बाली उत्पादनको अवस्था | | १९ |
| चाई: ३.५: फलफूल उत्पादन परिवर्तनको अवस्था | | २० |
| चाई: ३.६: मसला उत्पादन परिवर्तनको अवस्था | | २१ |
| चाई ३.७: मासु उत्पादन परिवर्तनको अवस्था | | २४ |
| चाई: ३.८ वनजन्य उत्पादन अवस्था | | २५ |
| चाई ३.९: सिञ्चित क्षेत्रफलको परिवर्तन अवस्था | | २६ |
| चाई ३.१०: कृषि कर्जाको अवस्था | | २६ |
| चाई ४.१: आ.व. २०७८/७९ मा दर्ता भएका लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरूको | | ३२ |
| चाई ४.२ : उद्योगको क्षमता उपयोग | | ३२ |
| चाई ४.३: क्षेत्रगत औद्योगिक कर्जाको अवस्था | | ३५ |
| चाई ५.१: छनौटमा परेका होटलहरूको अकुपेन्सी | | ३९ |
| चाई ५.२ : जिल्लागत बैंक तथा वित्तीय संस्थाको शाखा संख्याको अवस्था | | ४२ |
| चाई ५.३ : जिल्लागत मोबाईल बैंकिङ, इन्टरनेट बैंकिङ तथा शाखा रहित बैंकिङ सेवा | | ४२ |
| बक्स | | पेज नं. |
| बक्स १: मौरी पालन | | २२ |
| बक्स २: गुल्मी जिल्लामा मुल्यवान काठ अगरउडका विरुवा | | २५ |
| बक्स ३: प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना | | २७ |
| बक्स ४: विशेष आर्थिक क्षेत्र, भैरहवा (Special Economic Zone, SEZ) | | ३३ |
| बक्स ५: मोतिपुर औद्योगिक क्षेत्र | | ३६ |
| बक्स ६: पर्यटन पुर्वाधार | | ४० |
| अनुसूची | | पेज नं. |
| अनुसूची १ : लुम्बिनी प्रदेश सरकारले आ.व.२०७८/७९का लागि लिएका नीति, कार्यक्रम तथा परियोजनाहरूको कार्यान्वयन अवस्था | | ७२ |

कार्यकारी सारांश

समष्टिगत स्थिति

१. आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा मुलुकको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा लुम्बिनी प्रदेश १४.१ प्रतिशत हिस्सा सहित तेस्रो ठुलो योगदान गर्ने प्रदेशको रूपमा रहेको छ । आर्थिक वर्ष २०७७/७८ मा यस प्रदेशको आर्थिक वृद्धि ३.९ प्रतिशत रहेकोमा समीक्षा वर्षमा ५.४ प्रतिशत रहने अनुमान रहेको छ ।
२. देशको समग्र कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा यस प्रदेशको हिस्सा क्रमशः १७.३ प्रतिशत, १५.८ प्रतिशत र १२.५ प्रतिशत रहेको छ । तर यस प्रदेशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा ५४.५ प्रतिशत योगदान सहित सेवा क्षेत्र उच्च योगदान गर्ने क्षेत्रको रूपमा रहेको छ भने कृषि क्षेत्रको ३०.१ प्रतिशत र उद्योग क्षेत्रको १५.४ प्रतिशत योगदान रहेको छ । यसैगरी, देशभित्र बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुबाट संकलित कुल निक्षेपमा ८.३१ प्रतिशत हिस्सा सहित यो प्रदेश निक्षेप संकलनमा दोस्रो ठुलो प्रदेशको रूपमा रहेको छ ।
३. फलफूल तथा तरकारी, दुग्ध एवं मासुजन्य उत्पादनमा वृद्धि, लगायत भारत र तेस्रो मुलुकबाट पर्यटक आगमन तथा होटल व्यवसायहरुमा क्रमिक सुधार हुँदै गएको कारण लुम्बिनी प्रदेशको समग्र आर्थिक अवस्था सन्तोषजनक रहने अपेक्षा रहेको छ ।

कृषि क्षेत्र

४. आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा लुम्बिनी प्रदेशमा खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको कुल क्षेत्रफल १.३२ प्रतिशतले ह्रास आएको छ । यस अवधिमा फापर, कोदो, आलु, भटमास र तेलहनले ढाकेको क्षेत्रफलमा वृद्धि भएको छ भने धान, मकै, गहुँ, उखु र दलहनले ढाकेको क्षेत्रफलमा ह्रास आएको छ ।
५. समीक्षा वर्षमा लुम्बिनी प्रदेशमा समग्र खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादनमा ७.५९ प्रतिशतले ह्रास आएको छ । यस अवधिमा गहुँ, कोदो फापर, आलु, तेलहन र दलहनको उत्पादन वृद्धि भएको छ भने धान, जौ र उखुको उत्पादनमा ह्रास आएको छ ।
६. समीक्षा वर्षमा तरकारी बालीले ढाकेको क्षेत्रफल २.०८ प्रतिशत र उत्पादन ७.६१ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफल ९.८९ प्रतिशत र उत्पादन २१.३२ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । समीक्षा वर्षमा, केरा, स्याउ, सुन्तलाले ढाकेको क्षेत्रफलमा वृद्धि भएको छ भने आँपले ढाकेको क्षेत्रफलमा ह्रास आएको छ ।
७. समीक्षा वर्षमा नवलपरासी पश्चिम जिल्लामा केराले ढाकेको क्षेत्रफल ११६.०१ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने केरा उत्पादन ९३.९६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ ।
८. समीक्षा वर्षमा मसलाले ढाकेको क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा ४.४२ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने उत्पादन १२.५४ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ ।
९. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा कफीको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा २७.८४ प्रतिशतले ह्रास आएको छ ।
१०. यस प्रदेशमा किसानहरुलाई माहुरी पालन सम्बन्धी प्राविधिक सहयोग र क्षमता अभिवृद्धि तालिम दिईएको कारण मह उत्पादन उल्लेख्य वृद्धि भएको देखिन्छ । समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा महको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ११.२८ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ ।
११. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा पशुपंक्षी उत्पादन मध्ये दूध उत्पादन २.९४ प्रतिशत, मासु ३.४६ प्रतिशत र माछा उत्पादन ३.२९ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ ।
१२. समीक्षा वर्षमा वनजन्य उत्पादन अन्तर्गत काठ उत्पादन ९.३३ प्रतिशत, दाउरा उत्पादन १.९३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने औषधीजन्य वस्तु उत्पादन ३२.३४ प्रतिशतले ह्रास आएको छ ।
१३. समीक्षा वर्षमा कुल खेती गरिएको क्षेत्रफलको ४२.२९ प्रतिशत हिस्सा सिंचित भएको छ । सिंचित क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा २.२७ प्रतिशतले वृद्धि भई २ लाख ३२ हजार ३ सय ४५.५ हेक्टर पुगेको छ ।
१४. समीक्षा वर्षमा कृषि क्षेत्रमा प्रवाहित कृषि कर्जा १६.२४ प्रतिशतले वृद्धि भई ५० अर्ब ३२ करोड १२ लाख पुगेको छ भने कुल कर्जामा कृषि कर्जाको हिस्सा ७.१० प्रतिशत रहेको छ ।

उद्योग क्षेत्र

१५. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशका नमूना छनौटमा समेटिएका उद्योगहरूको औसत क्षमता उपयोग ५८.३७ प्रतिशत रहेको छ। गत अवधिमा यस्ता उद्योगको औसत क्षमता उपयोग ६२.९१ प्रतिशत रहेको थियो। चाउचाउ, कर्कट, ट्याबलेट, आल्मुनियम, तोरीको तेल, रोजिन, प्लाईउड, पशुदाना र मदिरा उद्योगहरूले औषतभन्दा बढी क्षमता उपयोग गरीरहेका छन् भने ड्राई सिरप, बिजुलीका तार र केवल, चामल, सिन्थेटिक कपडा, फलामका छड र पत्ति, प्लाष्टिकका सामान र सिमेन्ट लगायतका उद्योगहरूले औषत भन्दा कम क्षमतामा सञ्चालनमा रहेका छन्।
१६. समीक्षा वर्षमा Dry Syrup औषधि उत्पादन १०७.५० प्रतिशतले, कागज ४८.३१ प्रतिशत, रोजिन ३८.८४ प्रतिशत, Tablet ३९.१० प्रतिशत, Capsule ४२.३४ प्रतिशत, Liquid ४५.७७ प्रतिशत, गहुँको पिठो १८.४८ प्रतिशत, बिजुलीका तार र केवल १८ बढेको छ भने चामल उत्पादन २२.०९ प्रतिशत, प्लाष्टिकका सामान १२.९८ प्रतिशत, Ointment १८.२८ प्रतिशत, कर्कट ९.०३ प्रतिशत, मदिरा ५.०२ प्रतिशतले घटेको छ।
१७. समीक्षा वर्षमा औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जा गत अवधिको तुलनामा ४.४९ प्रतिशतले घटेको छ भने कुल कर्जामा औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको अंश १६.८३ प्रतिशत रहेको छ।

सेवा क्षेत्र

१८. यस प्रदेशमा कोभिड-१९ को असहज परिस्थितिका कारण मारमा परेको पर्यटन क्षेत्र क्रमिक रूपमा सुधारोन्मुख दिशातिर अगाडी बढीरहेको छ भने होटलहरूको निर्माण कार्य बढेसगै शैया संख्याको वृद्धि तथा गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल सञ्चालनमा आएकाले पर्यटकहरूको आवागमनको अवस्था पनि विगतका वर्षहरूको तुलनामा सुधार हुँदै गएको देखिन्छ।
१९. समीक्षा वर्षमा नमूना छनौटमा समेटिएका होटल शैया संख्या गत अवधिको तुलनामा ९.४६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ। यसैगरी, कोठा/शैया बिक्री संख्या गत अवधिको तुलनामा २५.९६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने अकुपन्सी दर ४८.७६ प्रतिशत रहेको छ।
२०. समीक्षा वर्षमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन संख्या र राजस्व संकलनमा विरोधासपूर्ण नतिजा देखिएको छ। सो अवधिमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन संख्या गत अवधिको तुलनामा ६.८६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने घरजग्गा रजिष्ट्रेशनबाट प्राप्त हुने राजश्वमा ३३.३६ प्रतिशतले ह्रास आएको छ।
२१. २०७९ असार मसान्तसम्म यस प्रदेशमा 'क' वर्गको ७४०, 'ख' वर्गको २५६, 'ग' वर्गको ४६ र 'घ' वर्गको ११७० गरी कुल २२१२ वटा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरू रहेकोमा सो मध्ये रुपन्देही जिल्लामा सबैभन्दा बढी ५४९ वटा र रुकुमपूर्व जिल्लामा सबैभन्दा कम १६ वटा शाखाहरू सञ्चालनमा रहेका छन्। यस प्रदेशमा बाणिज्य बैंकहरूले २५५ वटा शाखा रहित बैंकिङ्ग सेवा उलब्ध गराएका छन्।
२२. २०७९ असार मसान्तसम्म यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूमा २९ लाख ८० हजार २७५ मोवाईल बैंकिङ्ग सेवा र २ लाख ४ हजार ५ सय ३१ ईन्टरनेट बैंकिङ्ग सेवा दर्ता भएका छन्।
२३. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा कुल निक्षेप ६.५५ प्रतिशत र कर्जा प्रवाह १४.९८ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने कर्जा/निक्षेप अनुपात १२६.१० प्रतिशत रहेको छ। प्रवाहित कुल कर्जामा विपन्न वर्ग कर्जाको ७.८८ प्रतिशत, पुनर्कर्जाको ३.४१ प्रतिशत र सहूलियतपूर्ण कर्जाको ६.१९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।
२४. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा कुल सवारी साधन संख्या गत वर्षको सोहि अवधिको तुलनामा १४.२५ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।
२५. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा टेलिफोन सेवा २९.५७ प्रतिशतले र इन्टरनेट सेवा २१.७४ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।
२६. समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले प्रवाह गरेको कुल सेवा कर्जा गत अवधिको तुलनामा २२.८८ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने कुल कर्जामा सेवा क्षेत्र कर्जाको ६८.५४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।
२७. समीक्षा वर्षमा नमूना छनौटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूको कुल पूँजी ८.६७ प्रतिशत, बचत परिचालन ४.२८ प्रतिशत, कुल ऋण प्रवाह २१.५९ प्रतिशत र सदस्य संख्या २१.६७ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ।

२८. समिक्षा वर्षमा परिवर्त्य विदेशी मुद्रा खरिद ४२.९७ प्रतिशतले घटेको छ भने भारतीय मुद्रा विक्रि ९१.९६ प्रतिशतले घटेको छ ।

पूर्वाधार क्षेत्र

२६. राष्ट्रिय गौरव आयोजना अर्न्तगत लुम्बिनी प्रदेशको बर्दिया जिल्लामा निर्माण भइरहेको बबई सिंचाई आयोजनाको २०७९ को असार मसान्त सम्मको भौतिक प्रगति ६२.२३ प्रतिशत र वित्तिय प्रगति ५८.८४ प्रतिशत भएको छ ।
२७. सिक्टा सिंचाई आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्मको भौतिक प्रगति ७३.५० प्रतिशत र वित्तिय प्रगति ७५.९ प्रतिशत भएको छ ।
२८. भेरी बबई डाईभर्सन आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म ५७ प्रतिशत भौतिक प्रगति र ४१.९२ प्रतिशत वित्तिय प्रगति भएको छ ।
२९. गुल्मी जिल्लामा रेसुङ्गा विमानस्थल, अर्घाखाँची जिल्लामा अर्घाभगवती विमानस्थल, पाल्पा जिल्लामा सिद्धबाबा सुरुङ मार्ग, रुपन्देही जिल्लामा मोतीपुर औद्योगिक क्षेत्र, तिनाउ दानव कोरिडोर सडक, लुम्बिनी केवलकार, सिद्धार्थ केवलकार र बाँके जिल्लामा नौबस्ता औद्योगिक क्षेत्रको निर्माण कार्य अगाडि बढीरहेको छ ।

परिच्छेद १ अध्ययन परिचय

१.१ पृष्ठभूमि

नेपाल राष्ट्र बैंकले देशको बैकिङ्ग तथा वित्तीय क्षेत्रको नियमनकारी निकाय, नेपाल सरकारको आर्थिक सल्लाहकार एवम् देशको वाह्य क्षेत्र व्यवस्थापन गर्ने भूमिकामा रहेर देशको मौद्रिक तथा विदेशी विनिमय नीति तर्जुमा तथा कार्यान्वयन मार्फत देशको समष्टिगत आर्थिक व्यवस्थापनमा सहयोग गर्दै आइरहेको छ। बैंकले नेपाल राष्ट्र बैंक ऐन, २०५८ मा भएका उद्देश्यहरु हासिल गर्ने क्रममा देशको आर्थिक नीति निर्माण गर्न सहयोग पुग्ने गरी गर्ने प्रकाशनहरु मध्ये आर्थिक गतिविधि सम्बन्धी अध्ययन एवम् प्रतिवेदन तयार गर्ने र सोको प्रकाशन गर्दै आएको छ। यस्तो आर्थिक गतिविधि अध्ययन प्रतिवेदन वार्षिक (साउन देखि असार मसान्त) र अर्ध-वार्षिक (साउन देखि पुस मसान्त) सम्म गरी एक आर्थिक वर्षमा २ पटक प्रकाशन गर्दै आएको छ। यसै सिलसिलामा नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर कार्यालयले लुम्बिनी प्रदेशको आर्थिक वर्ष २०७८/७९ साउन देखि असार मसान्तसम्मको वार्षिक तथ्याङ्कको आधारमा यो प्रतिवेदन तयार गरेको छ।

विगतमा लुम्बिनी प्रदेशका केही जिल्लाहरुबाट मात्रै तथ्याङ्क संकलन गरी नेपाल राष्ट्र बैंक, आर्थिक अनुसन्धान विभागले अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशन गर्ने गरिएकोमा हाल यस प्रदेशका १२ वटा जिल्लाहरुबाट तथ्याङ्क संकलन गरी अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशन गर्ने गरिएको छ। लुम्बिनी प्रदेशको आर्थिक गतिविधि अध्ययनका लागि आवश्यक तथ्याङ्क तथा सूचनाहरु नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर कार्यालयको कार्यक्षेत्र अन्तर्गतका नवलपरासी पश्चिम, रुपन्देही, कपिलवस्तु, पाल्पा, गुल्मी, अर्घाखाँची, प्युठान र रोल्पा गरी ८ वटा जिल्लाहरुबाट र नेपाल राष्ट्र बैंक, नेपालगञ्ज कार्यालयको कार्यक्षेत्र अन्तर्गतका बाँके, बर्दिया, दाङ्ग र रुकुमपूर्व गरी ४ जिल्लाहरुबाट संकलन गरी प्रतिवेदन तयार गर्ने गरिएको छ।

१.२ अध्ययनको उद्देश्य

- लुम्बिनी प्रदेशको प्रादेशिक संरचना अनुसारको आर्थिक गतिविधि अध्ययन/विश्लेषण गरी सोको प्रतिवेदन तयार गर्ने।
- लुम्बिनी प्रदेशको कृषि, उद्योग, सेवा, पुर्वाधार, पर्यटन, रोजगारी र सरकारी वित्त लगायतका क्षेत्रहरुको वस्तुस्थिति र यसमा भईरहेको परिवर्तनको अध्ययन तथा विश्लेषण गर्ने।
- लुम्बिनी प्रदेशको कृषि, उद्योग, सेवा र पुर्वाधार क्षेत्रको आगामी वर्षको आर्थिक परिदृष्य पहिचान तथा विश्लेषण गर्ने।
- लुम्बिनी प्रदेशको अर्थतन्त्रका प्रादेशिक सम्भावना तथा चुनौतीहरु पहिचान तथा विश्लेषण गर्ने।

१.३ प्रतिवेदन तर्जुमा विधि, संरचना र तथ्याङ्क संकलन

यस प्रतिवेदनमा आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को साउनदेखि असार मसान्तसम्ममा लुम्बिनी प्रदेशमा भएका प्रमुख आर्थिक गतिविधिहरुको विश्लेषण गरी यस प्रदेशको आर्थिक स्थिति विश्लेषण गरिएको छ। मुख्यगरी कृषि, उद्योग, सेवा, पुर्वाधार, पर्यटन, रोजगारी र सरकारी वित्त लगायतका क्षेत्रहरुको स्थिति र सोमा भएको परिवर्तन लगायत राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा एवं अन्य आर्थिक स्थितिको विवरण यस प्रतिवेदनमा उल्लेख गरिएको छ। समग्रमा देहाय बमोजिमको अध्ययन विधि यस प्रतिवेदनले अंगालेको छ।

- नेपाल राष्ट्र बैंकबाट जारी भएको “आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन, २०७६ (प्रथम संशोधन, २०७९)” अनुसार यस प्रदेशका विभिन्न मन्त्रालय तथा मातहतका निकायहरु, निर्देशनालयहरुका साथै जिल्ला

स्थित तोकिएका कार्यालयहरु, निजी उद्योग तथा प्रतिष्ठानहरुबाट स्थलगत तथा गैर-स्थलगत माध्यमबाट तथ्याङ्क तथा सूचनाहरु संकलन गरिएको छ ।

- संघीय कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय, सम्बन्धित जिल्लास्थित कृषि ज्ञान केन्द्रहरु, भेटेरिनरी अस्पताल तथा पशु सेवा विज्ञ केन्द्रहरु, जलस्रोत तथा सिचाई विकास डिभिजन कार्यालयहरु, जिल्ला वन कार्यालयहरुबाट कृषि, वन र पशुपालन लगायतका तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको छ ।
- नमूना छनौटमा परेका उद्योगहरु मध्ये रुपन्देहीबाट १२, नवलपरासी पश्चिमबाट २, दाङबाट २, बाँकेबाट ९ र बर्दियाबाट २ गरी जम्मा २७ वटा उद्योगहरुबाट स्थलगत भ्रमण तथा विद्युतीय माध्यमबाट उद्योग सम्बन्धी तथ्याङ्क सङ्कलन गरिएको छ ।
- खाद्य तथा अन्य बाली अन्तर्गतका धान, गहुँ, मकै, कोदो, जौ र फापरले ढाकेको क्षेत्रफल र उत्पादन, कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रको जिल्लागत कर्जा, निक्षेप, शाखा संख्या, पुनरकर्जा, सहूलियतपूर्ण कर्जा, मालपोत कार्यालयको घरजग्गा रजिष्ट्रेशन संख्या र सो वापतको राजस्व रकमसंग सम्बन्धित तथ्याङ्क नेपाल राष्ट्र बैंक, आर्थिक अनुसन्धान विभाग, काठमाण्डौँबाट प्राप्त गरिएको छ ।
- नमूना छनौटमा परेका १० वटा पर्यटक स्तरीय होटलहरुको स्थलगत सर्वेक्षण, अध्यागमन कार्यालयहरु, गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल, होटल व्यवसायी संघ प्रदेश कार्यालयबाट पर्यटनसँग सम्बन्धित तथ्याङ्क संकलन गरिएको छ ।
- सहकारी क्षेत्रको स्थिति विश्लेषण गर्न यस प्रदेशका १० वटा वचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरुको नमूना छनौट गरी विवरण संकलन गरिएको छ ।
- मनिचेञ्जर तथा विदेशी मुद्रा सटही, फण्ड ट्रान्सफर, परिवर्त्य विदेशी मुद्रा खरिद तथा भारतीय मुद्रा खरिद बिक्री सम्बन्धी विवरण नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालयबाट लिइएको छ ।
- प्रादेशिक सरकारी वित्त सम्बन्धी विवरण प्रदेश कोष तथा लेखा नियन्त्रक कार्यालयबाट र बैदेशिक व्यापार सम्बन्धी विवरण सम्बन्धित जिल्लाका भन्सार कार्यालयहरुबाट प्राप्त गरिएको छ ।
- प्रदेश सरकारको कार्यक्रम तथा परियोजना, स्थानीय तहको कार्यक्रम तथा परियोजनाहरुको कार्यन्वयन सम्बन्धी विवरण लुम्बिनी प्रदेश अर्थ तथा सहकारी मन्त्रालय तथा छनौटमा परेका ५ वटा स्थानिय तहहरुबाट लिइएको छ ।
- लुम्बिनी प्रदेशमा पूर्वाधारसंग सम्बन्धित स्थापित एवं हालसालै घोषणा गरीएका राष्ट्रिय गौरवका आयोजना, निजी क्षेत्रका आयोजना तथा केन्द्रीयस्तरका आयोजनाहरु मध्ये नमूना छनौटमा परेका ५ वटा आयोजनाहरुको भौतिक तथा वित्तीय प्रगति, आसपासका क्षेत्रमा पारेको प्रभाव र समस्या तथा चुनौतिहरु सम्बन्धी तथ्याङ्क संकलन गरी अध्ययन प्रतिवेदनमा समेटिएको छ ।
- कार्यक्षेत्र भित्र रहेका केही जिल्लाहरुबाट अवलोकन भ्रमणको आधारमा सूचना लिइएको छ ।
- तथ्याङ्क तथा सूचना संकलनको लागि इमेल, फ्याक्स, वेबसाईट तथा टेलीफोन लगायतका विद्युतीय माध्यमको प्रयोग गरिएको छ ।
- स्थलगत सर्वेक्षणबाट प्राप्त प्राथमिक तथ्याङ्क र विभिन्न स्रोतबाट प्राप्त द्वितीय तथ्याङ्कहरुको प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण प्रकृतिको आधारमा Statistical Tools र आवश्यक चार्ट तथा डायग्राम प्रयोग गरिएको छ ।
- प्राप्त तथ्याङ्कलाई प्रशोधन तथा सरलीकृत बनाउन Excel Sheet जस्ता Computer Software प्रयोग गरिएको छ ।

१.४ अध्ययनको सीमा

यो अध्ययन “आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन, २०७६ (प्रथम संशोधन, २०७९)” ले तोकेको तथ्याङ्क प्रदायक निकायहरूबाट प्राप्त तथ्याङ्कमा आधारित रहेको छ। देश प्रादेशिक संरचनामा गए पश्चात तथ्याङ्क प्रदायक निकायहरूको समेत पुनरसंरचना भएकोले तथ्याङ्क संगठित तथा सु-व्यवस्थित गर्ने कार्य अझै पनि निरन्तर रहेकाले पूर्ण एवं अध्यावधिक तथ्याङ्क प्राप्त गर्न अझै कठिनाई रहेको छ।

- छानिएका उद्योगहरूबाट मात्र प्राप्त तथ्याङ्क एवं सूचनाहरूको आधारमा उद्योग क्षेत्रको प्रतिनिधित्व गर्दै सो को विश्लेषण गरिएको छ।
- पर्यटन क्षेत्रको अकुपेन्सीदर तथा रोजगारी र सहकारी क्षेत्रको स्थिति विश्लेषण गर्न १० वटा पर्यटकस्तरीय होटल र १० वटा बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरू मात्र छनौट गरिएको छ र यसैको आधारमा यी क्षेत्रको विश्लेषण गरिएको छ।
- विभिन्न निकायहरूले प्रदान गरेका तथ्याङ्कहरूमा नियमित अद्यावधिकता र समयमा नै तथ्याङ्क उपलब्ध नगराउने समस्या यथावत रहेको देखिएको छ।

१.५ अध्ययन प्रतिवेदनको ढाँचा

यो अध्ययन प्रतिवेदन “आर्थिक गतिविधि तथा विशेष अध्ययन मार्गदर्शन, २०७६ (प्रथम संशोधन, २०७९)” ले तोकेको ढाँचा बमोजिम तयार गरिएको छ। यस अध्ययनलाई ८ वटा परिच्छेदमा प्रस्तुत गरिएको छ। परिच्छेद १ मा अध्ययन परिचय, परिच्छेद २ मा प्रदेशको तुलनात्मक स्थिति, परिच्छेद ३ मा कृषि क्षेत्र, परिच्छेद ४ मा उद्योग क्षेत्र, परिच्छेद ५ मा सेवा क्षेत्र, परिच्छेद ६ मा पूर्वाधार र रोजगारी, परिच्छेद ७ मा संघीय एवम् प्रादेशिक कार्यक्रम तथा योजना र परिच्छेद ८ मा आर्थिक परिदृष्यसँग सम्बन्धित तथ्याङ्क, सूचना र विश्लेषण प्रस्तुत गरिएको छ।

परिच्छेद २ प्रदेशको तुलनात्मक स्थिति

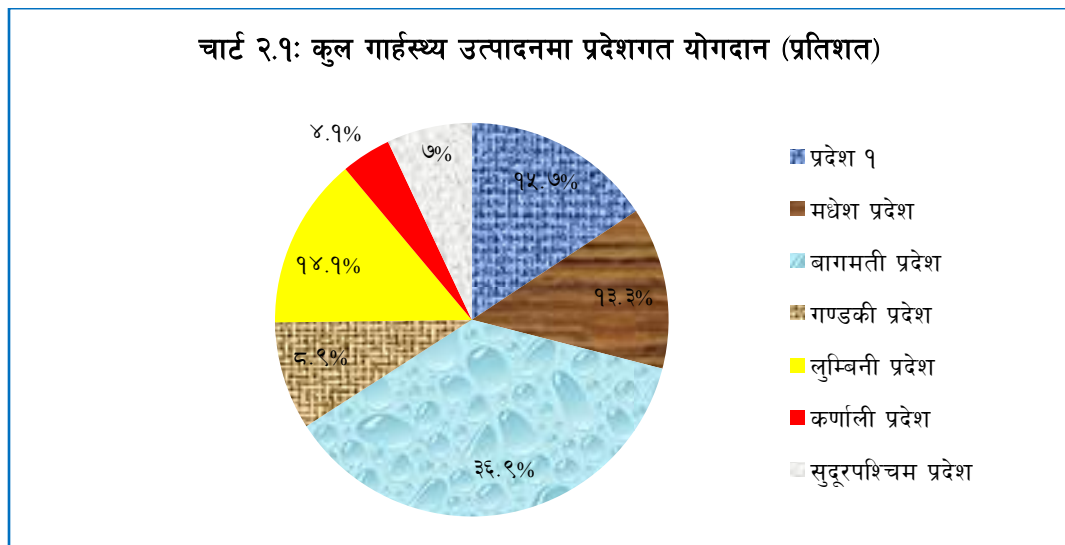
२.१ राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा प्रदेशको क्षेत्रगत हिस्सा

केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २०७९ अनुसार आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा लुम्बिनी प्रदेशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादन प्रचलित मूल्यमा रु.६ खर्ब ८५ अर्ब पुगेको छ। मुलुकको समग्र गार्हस्थ्य उत्पादनमा यस प्रदेशको १४.१ प्रतिशत योगदान रहेको छ भने आर्थिक वृद्धिदर ५.४ प्रतिशत रहने अनुमान छ। यसैगरी, मुलुकको कुल कृषि, उद्योग र सेवा क्षेत्रमा यस प्रदेशको हिस्सा क्रमशः १७.३ प्रतिशत, १५.८ प्रतिशत र १२.५ प्रतिशत रहेको छ भने यस प्रदेशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको ३०.१ प्रतिशत, उद्योग क्षेत्रको १५.४ प्रतिशत र सेवा क्षेत्रको ५४.५ प्रतिशत योगदान रहेको छ। आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९ अनुसार मुलुकको समग्र लघु, घरेलु तथा साना उद्योगको संख्यामा लुम्बिनी प्रदेशको १६.९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने मुलुकको कुल २०२३ मेगावाट जलविद्युत् उत्पादनमा यस प्रदेशको १.५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ। यसैगरी, मुलुकको कुल औद्योगिक प्रतिष्ठान ९ लाख २३ हजार ३ सय ५६ मा यस प्रदेशको १६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने कुल औद्योगिक प्रतिष्ठानमा रोजगारी संख्या ३२ लाख १ हजार ४ सय ५७ मा १४.८ प्रतिशत रहेको छ। बीमा समितिबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार आ.व. २०७८/७९ सम्म मुलुकको कुल २ हजार ३ सय २ जीवन बीमा शाखामा यस प्रदेशको १६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने कुल १ हजार ६४ निर्जीवन बीमा शाखामा १६.९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।

२.२ अन्तर प्रदेश तुलना

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्रदेशगत क्षेत्रगत योगदान

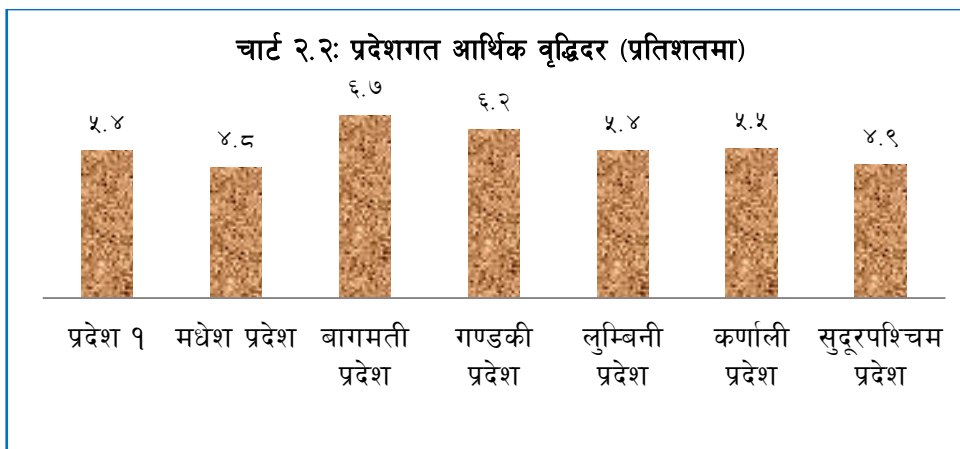
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा मुलुकको कुल गार्हस्थ्य उत्पादन रु.४८ खर्ब ५१ अर्ब ६० करोडमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ३६.९ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ४.१ प्रतिशत रहेको छ भने १४.१ प्रतिशत हिस्सा सहित लुम्बिनी प्रदेश तेस्रो ठुला योगदान गर्ने प्रदेश रहेको छ। यसैगरी, कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्रदेश १ को १५.७ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको १३.३ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको ८.९ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको ७ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.१)।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

प्रदेशगत आर्थिक वृद्धि दर

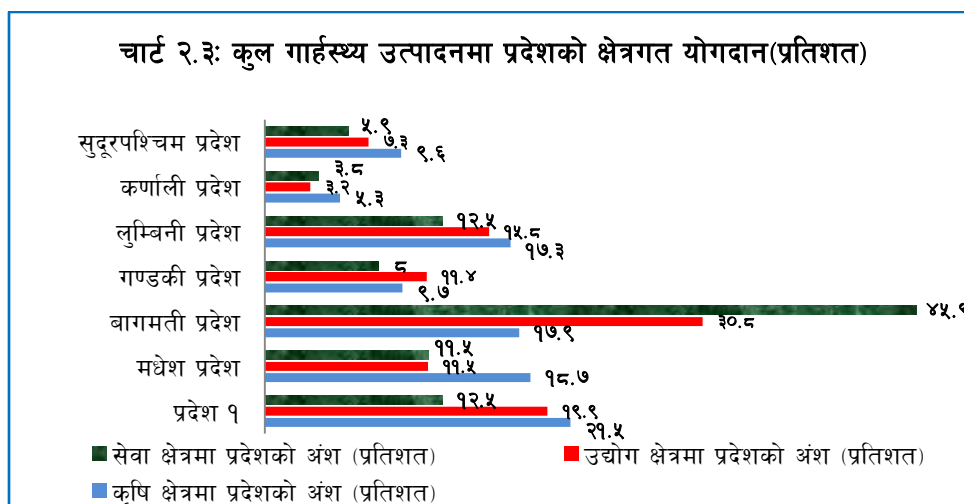
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा प्रदेशगत रूपमा आर्थिक वृद्धिदर तुलना गर्दा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको ६.७ प्रतिशत र सबैभन्दा कम मधेश प्रदेशको ४.८ प्रतिशत रहने अनुमान छ भने लुम्बिनी प्रदेशको आर्थिक वृद्धिदर ५.४ प्रतिशत रहने अनुमान छ । यसैगरी, प्रदेश १ को ५.४ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको ६.२ प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशको ५.५ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको ४.९ प्रतिशत रहने अनुमान छ (चार्ट २.२,) ।



स्रोत: केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा प्रदेशको क्षेत्रगत योगदान

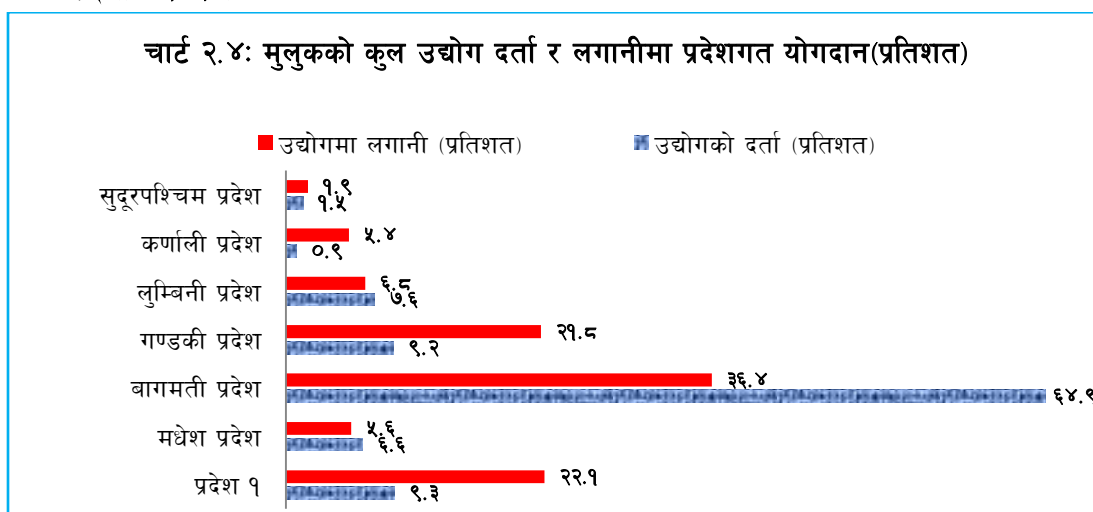
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ मा मुलुकको समग्र कृषि क्षेत्रको उत्पादनमा प्रदेश नं. १ को हिस्सा सबैभन्दा धेरै २१.५ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ५.३ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा १७.३ प्रतिशत रहेको छ । उद्योग क्षेत्रको उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी ३०.८ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ३.२ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा १५.८ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, सेवा क्षेत्रको उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा बढी ४५.९ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ३.८ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा १२.५ प्रतिशत रहेको छ (चार्ट २.३) ।



स्रोत: केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

कुल उद्योग दर्ता र लगानीमा प्रदेशगत योगदान

आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को फागुन मसान्त सम्ममा मुलुकको कुल उद्योग दर्ता संख्यामा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ६४.९ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.९ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको ७.६ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, प्रदेश १ को ९.३ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ६.६ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको ९.२ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको १.५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । मुलुकको समग्र उद्योगको लगानीमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ३६.४ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम १.९ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको ६.८ प्रतिशत लगानी रहेको छ । यसैगरी, प्रदेश १ को २२.१ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ५.६ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको २१.८ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको ५.४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.४) ।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

कुल जलविद्युत् उत्पादन र पहुँच जनसंख्यामा प्रदेशगत योगदान

आर्थिक वर्ष २०७८/७९ को फागुन मसान्त सम्ममा मुलुकको कुल २०२३ मेगावाट जलविद्युत् उत्पादनमा बागमती प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ५०.२ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.५ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको १.५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसैगरी, कुल जलविद्युत् उत्पादनमा प्रदेश १ को १६.९ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको १.० प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको २७.९ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको २.६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । कुल विद्युत् पहुँच जनसंख्यामा मधेश प्रदेशको जनसंख्या सबैभन्दा धेरै ९९.६६ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको जनसंख्या सबैभन्दा कम ४३.८७ प्रतिशत विद्युत् पहुँचमा रहेका छन् भने लुम्बिनी प्रदेशमा ९४.९१ प्रतिशत जनसंख्या विद्युत् पहुँचमा रहेका छन् (तालिका २.१) ।

तालिका २.१: कुल जलविद्युत् उत्पादन र पहुँच जनसंख्यामा प्रदेशगत योगदान(प्रतिशत)

| विवरण | जलविद्युत् उत्पादन | विद्युत् पहुँच जनसंख्या |
|--------------------|--------------------|-------------------------|
| प्रदेश १ | १६.३ | ९६.९५ |
| मधेश प्रदेश | १.० | ९९.६६ |
| बागमती प्रदेश | ५०.२ | ९५.९१ |
| गण्डकी प्रदेश | २७.९ | ९५.६८ |
| लुम्बिनी प्रदेश | १.५ | ९४.९१ |
| कर्णाली प्रदेश | ०.५ | ४३.८७ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | २.६ | ७१.०७ |

स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

बैंक तथा वित्तीय संस्थाको शाखा संख्या र प्रति शाखा जनसंख्या:

समीक्षा अवधिमा मुलुकमा कुल बैंक तथा वित्तीय संस्थाको शाखा संख्यामध्ये सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा ३००३ र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ४५५ शाखा संख्या रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा २२१२ संख्या रहेको छ । यसैगरी, समीक्षा अवधिमा कुल एटिएम संख्यामध्ये सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा २१४७ र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ८८ संख्या रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा ६१३ संख्या रहेको छ । समीक्षा अवधिमा कुल संकलित निक्षेप रकममध्ये सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा १,६३,८३,५३४ निक्षेपकर्ताहरुबाट रु. ३५ खर्व ९ अर्व ९४ करोड १४ लाख र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा १६,८८,९६५ निक्षेपकर्ताहरुबाट रु.६० अर्व ३२ करोड ७८ लाख संकलन भएको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा ७०,३२,५९५ निक्षेपकर्ताहरुबाट रु.४ खर्व २७ अर्व २४ करोड ४४ लाख संकलन भएको छ ।

समीक्षा अवधिमा कुल प्रवाहित कर्जामध्ये सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा ७,४७,८९९ ऋणीहरुलाई रु. २६ खर्व २१ अर्व १५ करोड २२ लाख र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ५२,९१४ ऋणीहरुलाई रु. ५४ अर्व ९२ करोड ९४ लाख प्रवाह भएको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा ३,१८,५९७ ऋणीहरुलाई रु. ५ खर्व ३८ अर्व ७५ करोड ६४ लाख प्रवाह भएको छ । प्रवाहित कर्जामा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा ७,४७,८९९ ऋणीहरुलाई रु. २६ खर्व २१ अर्व १५ करोड २२ लाख र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ५२,९१४ ऋणीहरुलाई रु. ५४ अर्व ९२ करोड ९४ लाख प्रवाह भएको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा ३,१८,५९७ ऋणीहरुलाई रु. ५ खर्व ३८ अर्व ७५ करोड ६४ लाख प्रवाह भएको छ ।

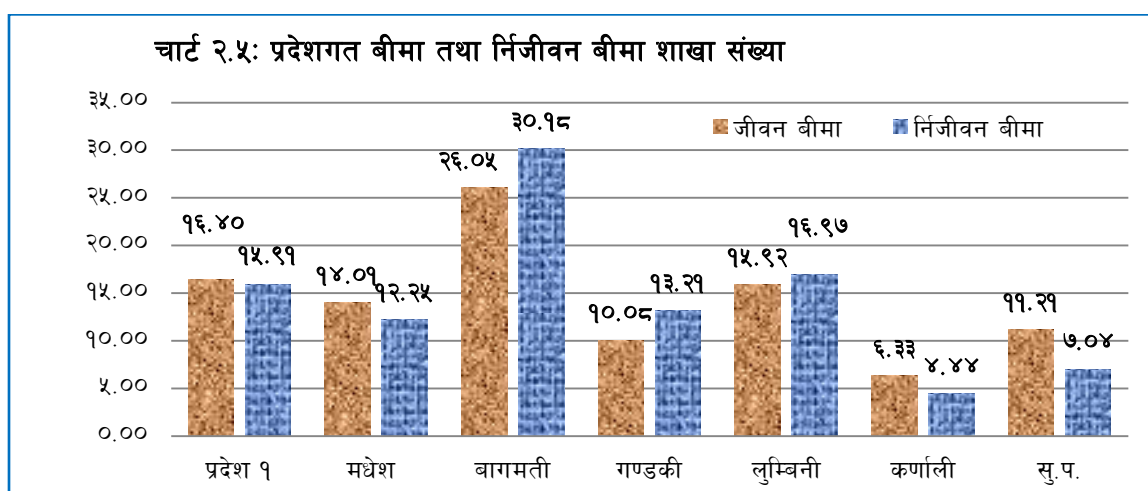
समीक्षा अवधिमा कुल प्रवाहित कर्जामा निष्कृत्य कर्जाको अंश सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा ६.७५ प्रतिशत र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ३.१६ प्रतिशत रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा ३.६९ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी कुल प्रवाहित विपन्न वर्ग कर्जा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशमा रु. १ खर्व ६० अर्व ४९ करोड २९ लाख र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा रु. ४ अर्व ८९ करोड प्रवाह भएको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा रु. ४२ अर्व ४३ करोड ३२ लाख प्रवाह भएको छ (तालिका २.२) ।

| तालिका २.२ प्रदेशगत वित्तीय अवस्था | | | | | | | | |
|------------------------------------|-------------|--------------|----------------|------------|--------------------|------------|-------------------|---------------------------|
| प्रदेश | शाखा संख्या | एटिएम संख्या | निक्षेप संख्या | ऋणी संख्या | रकम (रु. दश लाखमा) | | | निष्कृत्य कर्जा (प्रतिशत) |
| | | | | | कुल निक्षेप | कुल ऋण | विपन्न वर्ग कर्जा | |
| प्रदेश १ | १८५७ | ५७६ | ६०४२९५१ | ३०८८९७ | ३६६६८४.९० | ५४३९९५.६९ | ४७१११.२० | ३.८९ |
| मधेश प्रदेश | १७४५ | ९६२ | ५४६५६९५ | २२७२०० | २६१८१८.२५ | ४३००९०.४९ | २९१९३.७० | ४.२८ |
| बागमती प्रदेश | ३००३ | २१४७ | १६३८३५३४ | ७४७८९९ | ३५०९९४१.४४ | २६२११५२.२५ | १६०४९२.९० | ६.७५ |
| गण्डकी प्रदेश | १४१६ | ५५७ | ५०४४६३४ | २५९२६५ | ३९,८१२८.३७ | ३५३७१२.९९ | ३७७६२.०२ | ४.०० |
| लुम्बिनी प्रदेश | २२१२ | ६१३ | ७०३२५९५ | ३१८५९७ | ४२७२४४.४४ | ५३८७५६.४८ | ४२४३३.२५ | ३.६९ |
| कर्णाली प्रदेश | ४५५ | ८८ | १६८८९६५ | ५२९१४ | ६०३२७.८६ | ५४९२९.४६ | ४८९०.१८ | ३.१६ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ८४० | २१९ | ३०२०६६७ | १०७९७२ | ११५६५५.४७ | १४९४६४.४५ | १२०७३.६७ | ३.५३ |

स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक

प्रदेशगत जीवन बीमा तथा निर्जीवन बीमा शाखा संख्या

जीवन बीमा शाखाको प्रदेशगत विश्लेषण गर्दा आ.ब. २०७८/७९ सम्म मुलुकको कुल जीवन बीमा शाखामा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको २६.०५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशको ६.३३ प्रतिशत हिस्सा रहेका छ । त्यसैगरी, कुल जीवन बीमा शाखामा लुम्बिनी प्रदेशको १५.९२ प्रतिशत, प्रदेश १को १६.४० प्रतिशत, मधेश प्रदेशको १४.०१ प्रतिशत, सु.प. प्रदेशको ११.२१ प्रतिशत र गण्डकी प्रदेशको १०.०८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । मुलुकको कुल निर्जीवन बीमा शाखामा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको ३०.१८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशको ४.४४ प्रतिशत हिस्सा रहेका छ । त्यसैगरी, कुल निर्जीवन बीमा शाखामा लुम्बिनी प्रदेशको १६.९७ प्रतिशत, प्रदेश १ को १५.९१ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको १३.२१ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको १२.२५ प्रतिशत, सु.प. प्रदेशको ७.०४ प्रतिशत र हिस्सा रहेको छ । समग्र मुलुकमा २२९२ जीवन बीमा र १०३७ निर्जीवन बीमा गरी जम्मा ३३२९ शाखा संख्या रहेको छ (चार्ट २.५) ।



स्रोत: बीमा समिति

प्रदेशगत वन क्षेत्रको अवस्था

आर्थिक वर्ष २०७८/७९ फागुन मसान्त सम्म मुलुकको ४४.८१ प्रतिशत (६६,०९,९४० हेक्टर) भूभाग वनक्षेत्र रहेको छ । मुलुकको कुल वनक्षेत्रमा सबैभन्दा बढी कर्णाली प्रदेशको १७.९ प्रतिशत र सबैभन्दा कम मधेश प्रदेशको ४.० प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको १४.७ प्रतिशत हिस्सा ओगटेर पाँचौ स्थानमा रहेको छ । यसैगरी, कुल वनक्षेत्रमा प्रदेश १ को १७.२ प्रतिशत, बागमती प्रदेशको १६.५ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको १२.४ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको १७.३ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका २.३) ।

तालिका २.३: प्रदेशगत वन क्षेत्रको अवस्था

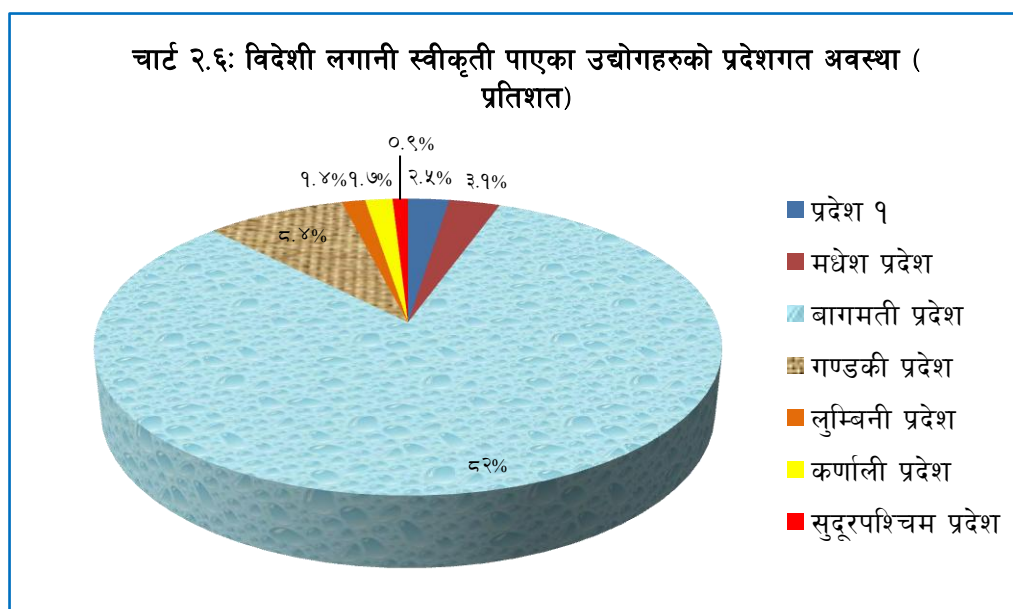
| विवरण | वन क्षेत्र (हेक्टर) | मुलुकको वन क्षेत्रमा प्रदेशको हिस्सा | प्रदेशको कुल भूभागमा वनको हिस्सा (प्रतिशत) |
|------------------|---------------------|--------------------------------------|--|
| प्रदेश १ | ११३४२५० | १७.२ | ४३.७८ |
| मधेश प्रदेश | २६३६३० | ४.० | २७.२९ |
| बागमती प्रदेश | १०९०८८० | १६.५ | ५३.७४ |
| गण्डकी प्रदेश | ८१७२९० | १२.४ | ३८.०१ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ९७४३८० | १४.७ | ४३.७२ |
| कर्णाली प्रदेश | ११८३४०० | १७.९ | ४२.२९ |
| सुदूरपश्चिम प्र. | ११४६११० | १७.३ | ५८.६६ |
| जम्मा | ६६०९९४० | १०० | |

स्रोत: वन तथा वातावरण मन्त्रालय, २०७८

प्रदेशको कुल भू-भागमा वनको क्षेत्रफल सबैभन्दा बढी सुदूरपश्चिम प्रदेशको ५८.६६ प्रतिशत र सबैभन्दा कम मधेश प्रदेशको २७.२९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको ४३.७२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसैगरी प्रदेशको कुल भूभागमा प्रदेश १ को ४३.७८ प्रतिशत, बागमती प्रदेशको ५३.७४ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको ४३.७८ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको ४२.२९ प्रतिशत हिस्सा र गण्डकी प्रदेशको ३८.०१ प्रतिशत हिस्सा वनक्षेत्र रहेको छ (तालिका २.३) ।

विदेशी लगानी स्वीकृती पाएका उद्योगहरूको प्रदेशगत अवस्था

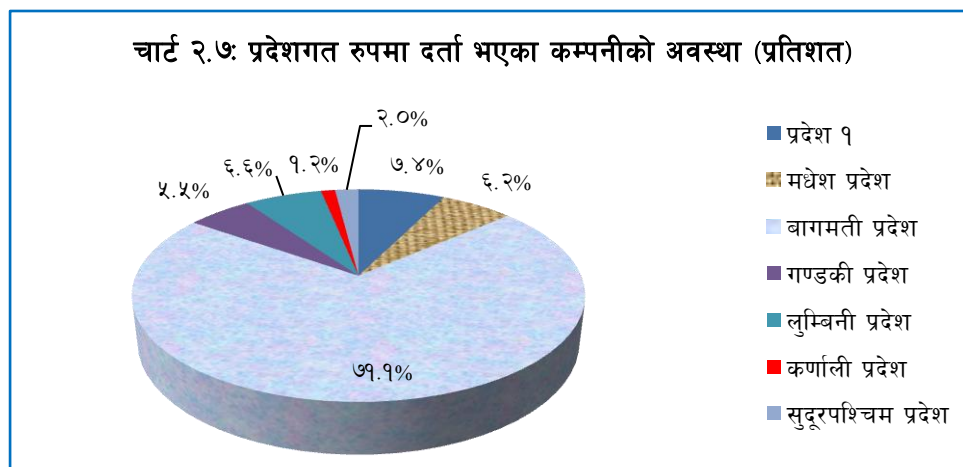
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ फागुन मसान्त सम्म मुलुकमा ५३८५ वटा विदेशी लगानी स्वीकृती पाएका उद्योगहरू रहेको छ । विदेशी लगानी स्वीकृती पाएका उद्योगहरूमा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको ८२ प्रतिशत र सबैभन्दा कम सुदूरपश्चिम प्रदेशको ०.९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको १.४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसैगरी, गण्डकी प्रदेशको ८.४ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ३.१ प्रतिशत, प्रदेश १ को २.५ प्रतिशत र कर्णाली प्रदेशको १.७ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.६) ।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

प्रदेशगत रुपमा दर्ता भएका कम्पनीहरूको अवस्था:

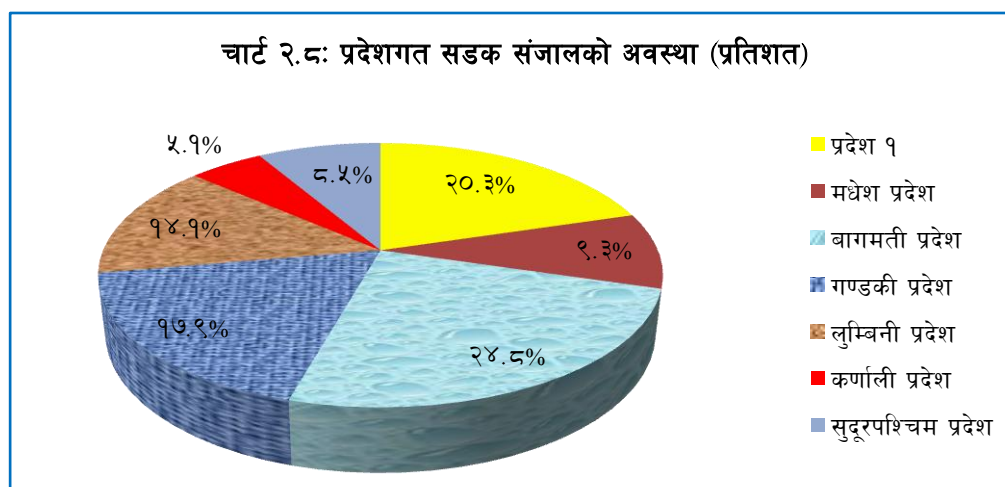
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ फागुन मसान्त सम्म मुलुकमा २,८३,३५८ वटा कम्पनीहरू दर्ता भएको छ । दर्ता भएका कम्पनीहरूमा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको ७१.१ प्रतिशत र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशको १.२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको ६.६ प्रतिशत हिस्सा सहित चौथो स्थानमा रहेको छ । यसैगरी, प्रदेश १ को ७.४ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ६.२ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको ५.५ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको २ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.७)।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

प्रदेशगत सडक संजालको अवस्था

आर्थिक वर्ष २०७८/७९ फागुन मसान्त सम्म मुलुकमा कुल ६४,६९७ कि.मी.सडक संजाल रहेको छ । कुल सडक संजालमा सबैभन्दा धेरै बागमती प्रदेशको २४.७६ प्रतिशत र सबैभन्दा कम कर्णालीको ५.९९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको १४.९४ प्रतिशत हिस्सा सहित चौथो स्थानमा रहेको छ । यसैगरी, प्रदेश १को २०.३२ प्रतिशत, गण्डकी प्रदेशको १७.९९ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ९.२९ प्रतिशत र सुदूरपश्चिम प्रदेशको ८.४७ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.८) ।

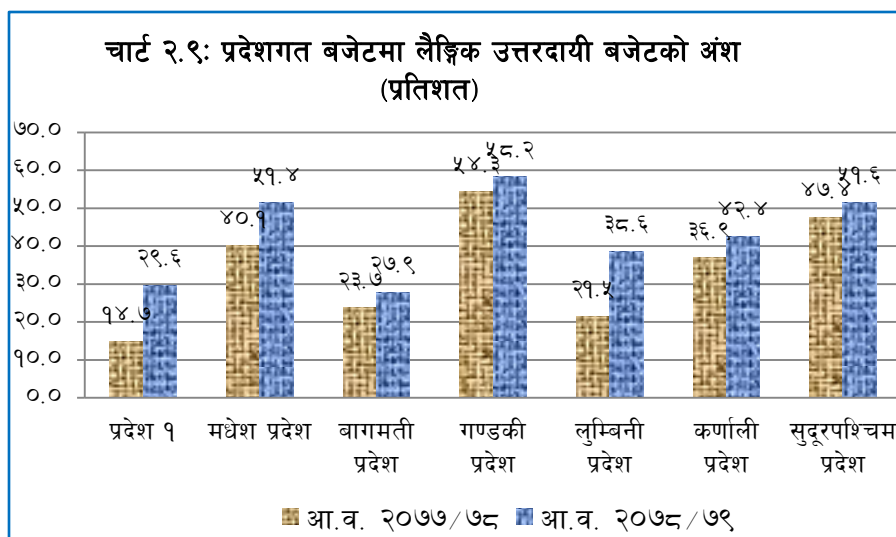


स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

प्रदेशगत बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको अंश

नेपाल सरकारले वि.सं २०६४/२०६५ बाट बजेट योजनामा महिला र पुरुषबीच लैङ्गिक समानता कायम गर्न लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको अवधारणा ल्याएको हो । समिक्षा अवधिमा गत अवधिको तुलनामा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटमा वृद्धि भएको देखिन्छ । प्रदेशगत रुपमा ल्याइएका बजेटहरूमा गण्डकी प्रदेशको सबैभन्दा धेरै ५८.२२ प्रतिशत र सबैभन्दा कम बागमती प्रदेशको २७.८५ प्रतिशत हिस्सा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशको बजेटमा ३८.६० प्रतिशत हिस्सा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको रहेको छ । यसैगरी, सुदूरपश्चिम

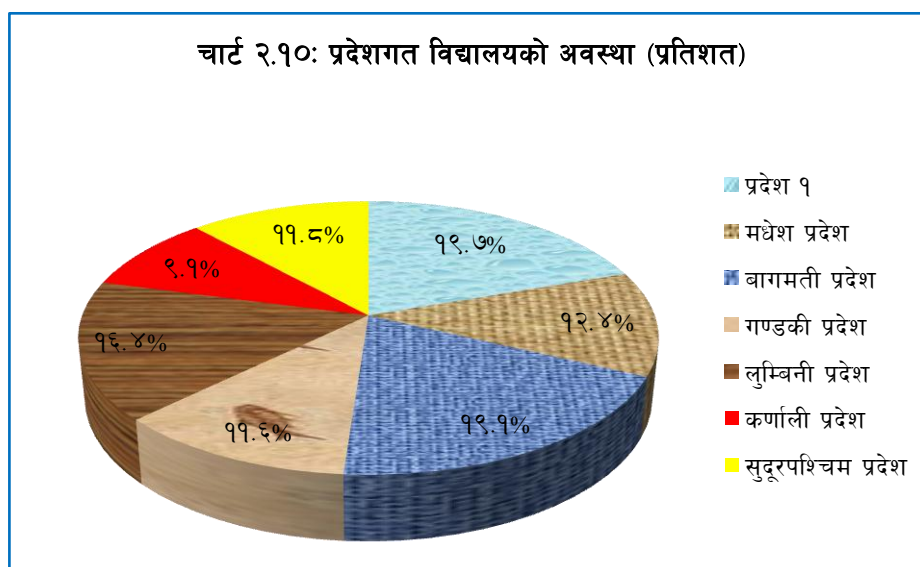
प्रदेशको ५१.५८ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको ५१.४० प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशको ४२.४१ प्रतिशत र प्रदेश १को २९.६२ प्रतिशत प्रदेशगत बजेटमा लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको हिस्सा रहेको छ। (चार्ट २.९)।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

प्रदेशगत विद्यालयको अवस्था

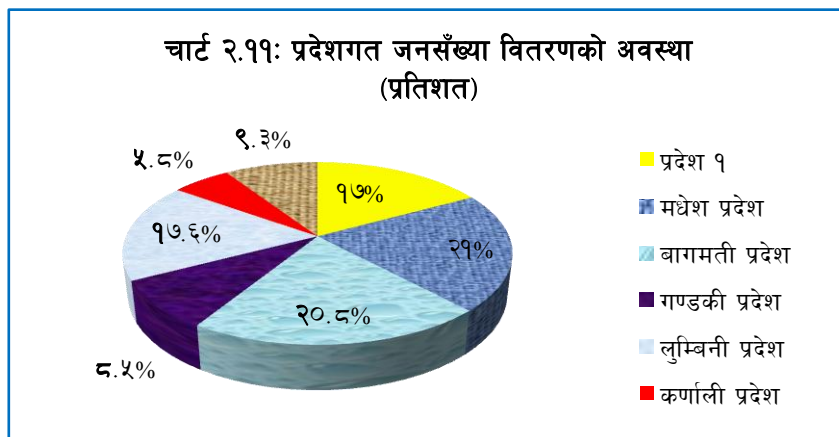
आर्थिक वर्ष २०७८/७९ फागुन मसान्त सम्म मुलुकमा कुल ३४,३६८ विद्यालय रहेका छन्। मुलुकको कुल विद्यालय संख्यामा सबैभन्दा धेरै प्रदेश १ को १९.७ प्रतिशत र सबैभन्दा कम कर्णाली प्रदेशको ९.१ प्रतिशत हिस्सा रहेका छ भने लुम्बिनी प्रदेश १६.४ प्रतिशत हिस्सा सहित तेस्रो स्थानमा रहेको छ। यसैगरी, बागमती प्रदेशको १९.१ प्रतिशत, मधेश प्रदेशको १२.४ प्रतिशत, सुदूरपश्चिम प्रदेशको ११.८ प्रतिशत र गण्डकी प्रदेशको ११.६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट २.१०)।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

जनसंख्या वितरण

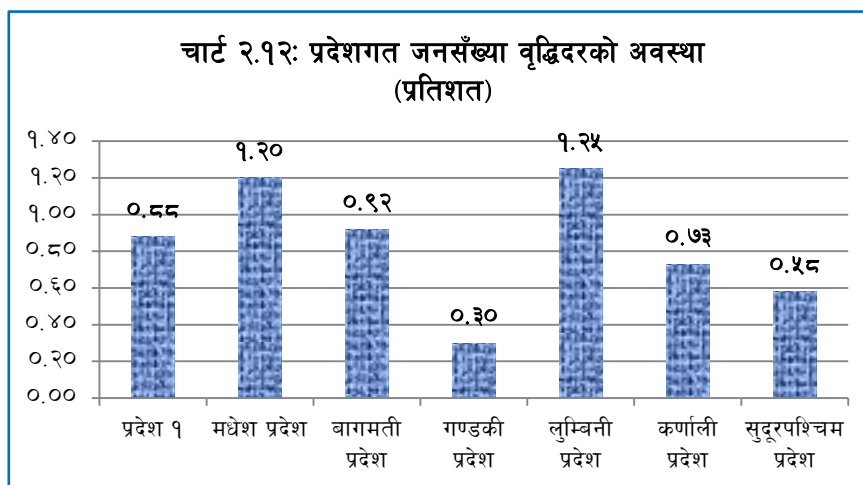
राष्ट्रिय जनगणना २०७८ को प्रारम्भिक नतिजा अनुसार २०७८ मा मुलुकको कुल जनसंख्या २ करोड ९१ लाख ९२ हजार ४ सय ८० रहेको छ । जसमा लुम्बिनी प्रदेशको जनसंख्या कुल ५१ करोड २४ लाख २ सय २५ रहेको छ । प्रदेशगत रुपमा जनसंख्याको वितरण हेर्दा कुल जनसंख्यामा सबैभन्दा धेरै मधेश प्रदेशको २१ प्रतिशत र बागमती प्रदेशको २०.८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने कर्णाली प्रदेशको हिस्सा सबैभन्दा कम ५.८ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, लुम्बिनी प्रदेशको हिस्सा १७.६ प्रतिशत, प्रदेश १ को १७ प्रतिशत, सुदूरपश्चिम प्रदेशको ९.३ प्रतिशत र गण्डकी प्रदेशको ८.५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (चार्ट: २.११) ।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

जनसंख्या वृद्धिदर

गत १० वर्षको अवधिमा मुलुकमा १०.१८ प्रतिशतले जनसंख्या वृद्धि भएको देखिन्छ । प्रदेशगत रुपमा हेर्दा २०६८ देखि २०७८ को एक दशकमा जनसंख्या वृद्धिदर सबै भन्दा धेरै लुम्बिनी प्रदेशमा १.२५ प्रतिशत र सबै भन्दा कम गण्डकी प्रदेशमा ०.३० प्रतिशतले जनसंख्या वृद्धि भएको छ । यसैगरी, मधेश प्रदेशमा १.२० प्रतिशत, बागमती प्रदेशमा ०.९२ प्रतिशत, प्रदेश १ मा ०.८८ प्रतिशत, कर्णाली प्रदेशमा ०.७३ प्रतिशत र सुदूरपश्चिममा ०.५८ प्रतिशतले जनसंख्या वृद्धि भएको छ (चार्ट: २.१२) ।



स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

लैङ्गिक अनुपात र जनघनत्व

राष्ट्रिय जनगणना २०७८ को प्रारम्भिक नतिजा अनुसार २०७८ मा देशको सात वटा प्रदेशहरूमध्ये सबै भन्दा धेरै प्रदेश २ को १००.९९ र सबै भन्दा कम सुदूरपश्चिम प्रदेशको ९०.५० लैङ्गिक अनुपात रहेको छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा यो अनुपात ९२.१५ रहेको छ। यसै गरी प्रदेशगत जनघनत्व विश्लेषण गर्दा सबै भन्दा धेरै प्रदेश २ मा ६३६ जना प्रति वर्ग कि.मी र सबै भन्दा कम कर्णाली प्रदेशमा ६१ जना प्रति वर्ग कि.मी. मा बसोबास गरेको देखिन्छ भने लुम्बिनी प्रदेशमा २३० जना प्रति वर्ग कि.मी. मा बसोबास गरेको देखिन्छ (तालिका :२.४)।

| तालिका २.४: लैङ्गिक अनुपात र जनघनत्वको प्रदेशगत अवस्था | | |
|--|----------------|---------|
| विवरण | लैङ्गिक अनुपात | जनघनत्व |
| प्रदेश १ | ९५.२३ | १९२ |
| मधेश प्रदेश | १००.९९ | ६३६ |
| बागमती प्रदेश | ९९.४५ | ३०० |
| गण्डकी प्रदेश | ९०.८५ | ११६ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ९२.१५ | २३० |
| कर्णाली प्रदेश | ९५.५८ | ६१ |
| सुदूरपश्चिम प्रदेश | ९०.५० | १३६ |

स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण, २०७८/७९

२.३ प्रादेशिक क्षमता, सम्भावना तथा चुनौती

प्रादेशिक क्षमता र सम्भावनाहरू

- समग्रमा लुम्बिनी प्रदेशमा कृषि, उद्योग, सेवा, पूर्वाधार, पर्यटन लगायत अन्य क्षेत्रहरूमा प्रशस्त संभावनाहरू रहेको देखिन्छ।
- यस प्रदेशमा प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकिकरण परियोजना अर्न्तगत २७ वटा जोन र ५ वटा सुपरजोनहरूमा विगतको वर्षहरूमा भन्दा हाल क्षेत्रफल बढेको, समीक्षा अवधिमा कृषि फर्म, सहकारी, वन/जल उपभोक्ता समिति र समूह गरी जम्मा ४,१९२ वटा सूचीकृत संस्थाहरू रहेको र आ.व. २०७३/७४ देखि आ.व. २०७८/७९ को वार्षिक अवधिसम्म मौसमी ज्यालादारी १५,१६,६७४, आंशिक रोजगारी १,९०,२२४ र स्थायी रोजगारी २१,४४७ गरी जम्मा १७,२८,३४५ रोजगारी सृजना भएको साथै संघीय तथा प्रदेश सरकारबाट सहूलियत व्याजदरमा कृषि ऋण समेत उपलब्ध गराउने नीति रहेको कारण कृषि उत्पादन र रोजगारी बढ्ने सम्भावना रहेको छ^१।
- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले बाली वस्तु प्रवर्द्धन, कृषि तथा पशुपन्छी विकास, बिउ उत्पादन, माटो व्यवस्थापन तथा कृषि यान्त्रिकीकरण लगायतका कृषि कार्यक्रमहरू कार्यान्वयनमा ल्याइने घोषणा गरेकोले कृषि क्षेत्रको थप सम्भावना उजागर हुने देखिएको छ^२।
- भारतसंग जोडिएको सिमाना र बेलहिया नाका नजिक रहेको भैरहवा विशेष आर्थिक क्षेत्रमा ७ वटा उद्योगहरू सञ्चालनमा रहेको र थप २५ वटा उद्योगहरू स्थापनाका लागि दर्ता भएको साथै विद्युतको सहज आपूर्तिको लागि सबस्टेशन समेतको टेन्डर भैसकेको लगायत सरकारले सो विषेश आर्थिक क्षेत्रको पुर्नसंरचना गर्न लागेको कारणहरूले आगामी वर्षहरूमा औद्योगिक उत्पादनले आयात प्रतिस्थापनमा सहयोग पुग्ने, रोजगारी बढ्ने र आर्थिक गतिविधि समेत बढ्ने एवं निर्यात समेत वृद्धि हुने सम्भावना रहेको छ।
- गुल्मीको तम्घास र अर्घाखाँचीको सन्धीखर्कमा विमानस्थलहरूको निर्माण कार्य भैरहेको, बेलहिया पोखरा अन्तर्गतका सिद्धार्थ राजमार्गको सिद्धवावा सडकखण्डमा सुरुङ्गमार्गका लागि टेन्डर प्रकृया पुरा भईसकेको र निजी क्षेत्रबाट बटुवलको बमघाट देखि बसन्तपुरसम्म केवलकारको निर्माण कार्य भैरहेको कारण लुम्बिनी प्रदेशमा पर्यटन लगायत अन्य आर्थिक गतिविधिको वृद्धि हुने सम्भावना रहेको छ।

^१ प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकिकरण परियोजना परियोजा कार्यान्वयन एकाइ, रुपन्देही, प्रदेश समन्वय एकाइ, लुम्बिनी
^२ आ.व. २०७९/८० को बजेट वक्तव्य, प्रदेश सरकार, लुम्बिनी प्रदेश।

- यस प्रदेशको तराई, चुरे, उच्च पहाडी र महाभारत जस्ता भौगर्भिक क्षेत्रहरूमा ढुंगा, गिट्टी, बालुवा, कोईला, स्याण्डस्टोन, चुनढुङ्गा, फलाम, कोईला, डोलोमाईट, घर छाउने स्लेट, श्रृंगारिक ढुंगा, कायनाइट र गार्नेट लगायतका रत्नपत्थरहरू पाइएका कारण खानीजन्य उद्योगहरूको प्रचूर सम्भावना रहेको छ ३।
- गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल सञ्चालनमा आईसकेको र व्यवसायिक उडान समेत गर्न थालेको कारण यस क्षेत्रका विभिन्न प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक स्थलका साथै बुद्धसंग सम्बन्धित बुद्ध सर्किटका जिल्लाहरू रुपन्देही, कपिलवस्तु र नवलपरासी मा पर्यटन विस्तार हुने र भारतको बोधीगया, कुशिनगर, श्रावस्ती लगायतका पर्यटन स्थलहरूबाट उल्लेख्य धार्मिक पर्यटकहरूको आगमन बढ्न सक्ने छ भने यस क्षेत्रका होटल लगायत अन्य पर्यटन व्यवसायमा अनुकूल प्रभाव पर्ने सम्भावना रहेको छ।
- आ.व. २०७८/७९ मा बबई सिंचाई आयोजना, सिक्टा सिंचाई आयोजना र भेरी बबई डाईभर्सन आयोजनाको वार्षिक भौतिक प्रगति क्रमशः ८५.६५ प्रतिशत, ७३.५० प्रतिशत र ५७ प्रतिशत र वित्तिय प्रगति क्रमशः ९८.४७ प्रतिशत, ७५.९ प्रतिशत र ४९.९२ प्रतिशत रहेको छ। परियोजना सम्पन्न भए पश्चात् बर्दिया र बाँके जिल्लाको कृषियोग्य भूमिमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा हुने सम्भावना रहेको छ।
- यस प्रदेशमा विद्युतिय बस सञ्चालनका लागि लुम्बिनी प्रदेश यातायात लि. स्थापना गर्न मुख्यमन्त्रि कार्यालयबाट सैद्धान्तिक सहमति प्राप्त भएको कारण यातायात क्षेत्रमा नयां सम्भावनाको ढोका खुलेको छ।
- नेपाल सरकारसँगको समन्वय र सहकार्यमा यस प्रदेशले रुपन्देहीको मोतिपुर, बाँकेको नौवस्ता र दाँडको लक्ष्मपुरमा औद्योगिक क्षेत्र निर्माण कार्यलाई तिव्रता दिने भएको। उक्त स्थानहरूमा औद्योगिक क्षेत्र निर्माण भए पश्चात् स्थानीय कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योग तथा अन्य ठुला उद्योगहरूको स्थापनाको सम्भावना रहेको देखिन्छ।
- यस प्रदेशका खस/आर्य, अवध, मगर, थारु, मुस्लिम समुदायको स्थानीय साँस्कृतिक परम्परागत खाना, भेषभुषा र नाचगानको छुट्टै पहिचान गरी सो को संरक्षणका साथै समुदायमा आधारित साँस्कृतिक ग्राम तथा होमस्टे निर्माण गर्न सके ग्रामीण पर्यटनको सम्भावना रहेको छ।
- यस प्रदेशमा रहेका प्रमुख धार्मिक स्थलहरू जस्तै : अर्घाखाँचीको सुपादेउराली, गुल्मीको रेसुङ्गा र रुरु क्षेत्र, पाल्पाको भैरवस्थान र सिद्धबाबा, नवलपरासीको रामग्राम र पालि भगवति, रुपन्देहीको लुम्बिनी, कपिलवस्तुको तिलौराकोट र तौलेश्वर, प्युठानको स्वर्गद्वारी, रोल्पाको त्रिपुरासुन्दरी र बाँकेको बागेश्वरी लगायतका क्षेत्रहरूलाई पर्यटन सर्किटको रूपमा जोड्न सके पर्यटन क्षेत्रको उच्च सम्भावना देखिन्छ।
- यस प्रदेशमा सुलभ कर्जा सहजीकरण तथा ब्याजमा अनुदान कार्यक्रम अर्न्तगत ११० आयोजनाका लागि ब्याज अनुदान वापत १ करोड २० लाख ५६ हजार १७ रुपैयाँ रकम उपलब्ध गराइएको छ र प्रतिफलमा आधारित कार्यक्रम अर्न्तगत १० जिल्लाका ६२ वटा सहकारी संस्था मार्फत करिब ६२०० दुध र मासु उत्पादनमा संलग्न कृषक घर धुरि लाभान्वित भएका छन्। सो कार्यक्रमको दायरा बढाउन सके यस प्रदेशका थप लक्षित कृषकहरू सो प्रोत्साहन अनुदान कार्यक्रमबाट थप लाभान्वित हुने सम्भावना रहेको छ।
- यस प्रदेशमा पछिल्लो समय स्तरिय विद्युत आपूर्ति, सडक सञ्जाल, लगानिको राम्रो वातावरण, सहज वित्तीय पहुँच लगायतका कारण उद्योग, निर्माण तथा पर्यटन क्षेत्रको उच्च सम्भावना कायम हुन गएको छ।
- यस प्रदेशमा स्मार्ट कृषि गाँउ कार्यक्रम अर्न्तगत शिक्षा, प्रसार र अनुसन्धानलाई एकीकृत गर्दै लिएको तथा संचालित कार्यक्रमबाट कृषि सुचना केन्द्रहरूको स्थापना हुनुका साथै कृषि यान्त्रिकरणमा वृद्धि भएको, बजार पुर्वाधारहरू विकास भएको र उन्नत प्रविधि र नश्लहरूको प्रयोग बढेको कारण कृषि क्षेत्रको थप सम्भावना रहेको छ।

प्रादेशिक चुनौतीहरू

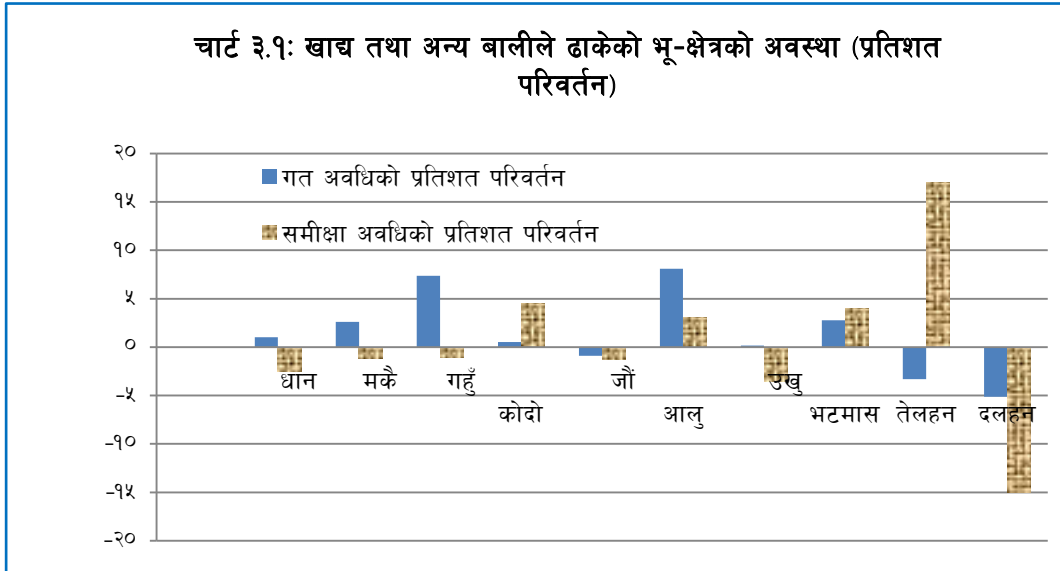
- यस प्रदेशको राजधानी दाङको भालुवाङमा सार्ने घोषणा गरिएतापनि प्रदेशका सरकारी कार्यालयहरूको भौतिक संरचनाहरू हालसम्म पनि तयार नभैसकेकोले सो को व्यवस्थापन सन्दर्भमा चुनौती देखिन्छ ।
- संघीय तथा प्रदेश सरकारबाट सहूलियतदरका कृषि लगायतका अन्य कर्जा कार्यक्रमहरू अधिकांश रूपमा धितो राख्न सक्ने व्यक्ति/समुह/वर्गमा प्रवाह भएकोमा वास्तविक लक्ष्यित वर्ग पहिचान गरी परियोजनाको धितोमा सरल प्रकृयाबाट कर्जा प्रवाह गर्ने कार्य ।
- लुम्बिनी प्रदेश सरकारबाट प्रादेशिक बजेटमा उल्लेखित व्यापक कृषि कार्यक्रमहरू कार्यान्वयन ल्याउने कार्य महत्वपूर्ण रहेतापनि चुनौतीपूर्ण देखिएको ।
- भैरहवा विशेष आर्थिक क्षेत्रमा थप २५ वटा उद्योगहरू स्थापना लगायतका कार्यहरू अगाडी बढाईएतापनि वास्तविक रूपमा ति उद्योगहरूलाई आयात प्रतिस्थापन गर्ने गरि सञ्चालन गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण देखिएको ।
- यस प्रदेशमा घोषणा गरिएका निर्माणाधीन विमानस्थलहरू, सुरुङ्ग मार्ग तथा केवलकारको निर्माण कार्य तोकेको अवधिमा सम्पन्न गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण रहेको छ ।
- यस प्रदेशको तराई, चुरे, उच्च पहाडी र महाभारत जस्ता भौगर्भिक क्षेत्रहरू तीन तहका सरकारमा विभाजित रहेको कारण आवश्यक समन्वय, खानिको संरक्षण, अन्वेषण र उत्खननका साथै खानीजन्य उद्योगहरू आकर्षित गर्ने कार्य ।
- गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलमा अन्तर्राष्ट्रिय वायुसेवा कम्पनी जजिराले मात्र व्यवसायिक उडानका लागि सेवा दिइरहेकोमा विमानस्थल पूर्णक्षमतामा सञ्चालन गर्न अन्य अन्तर्राष्ट्रिय वायुसेवा कम्पनीहरूलाई आकर्षण गर्ने कार्य ।
- बबई तिथा, सिक्टा सिचाई आयोजना र भेरी बबई डाईभर्सन आयोजनाहरू तोकेको समय अवधिमा निर्माण सम्पन्न गर्ने कार्य ।
- विद्युत्तिय बस सञ्चालनका लागि आवश्यक पूर्वाधार निर्माण गरी सञ्चालन गर्ने कार्य ।
- यस प्रदेशको रुपन्देहीको मोतिपुर, बाँकेको नौवस्ता र दाँडको लक्ष्मपुरमा पर्याप्त औद्योगिक पूर्वाधार सहितको औद्योगिक क्षेत्र निर्माण गर्ने कार्यको घोषणा गरिएतापनि सो को व्यवस्थित निर्माण गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण रहेको ।
- प्रदेशका विभिन्न स्थानहरूमा जातीय समुदायका स्थानीय साँस्कृती, परम्परागत खाना, भेषभुषा तथा नाचगानको पहिचान तथा संरक्षण गर्ने कार्य ।
- सुलभ कर्जा सहजीकरण तथा ब्याजमा अनुदान कार्यक्रम र प्रतिफलमा आधारित कार्यक्रम प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि प्रदेशका सबै जिल्लाहरूमा पर्याप्त सूचना प्रवाह गर्ने एवं कर्जा सहजकर्ता नियुक्त गरी प्रभावकारी परिचालन गर्ने कार्य ।
- यस प्रदेशमा सञ्चालित स्मार्ट कृषि गाँउ कार्यक्रम अर्न्तगत शिक्षा प्रसार, कृषि अनुसन्धान, कृषि सुचना केन्द्र, कृषि यान्त्रिकरण, बजार पुर्वाधार, उन्नत प्रविधि र नश्ल सुधार जस्ता कार्यक्रमहरूलाई निरन्तरता दिने कार्य ।
- यस प्रदेशमा बढ्दै गएको औद्योगिकीकरण, शहरीकरणका कारण हुने फोहरमैला व्यवस्थापन, प्रदुषण नियन्त्रण, व्यवस्थित वस्ति विकास तथा ट्राफिक व्यवस्थापन कार्य ।

परिच्छेद ३ कृषि क्षेत्र

३.१ कृषि उपजले ढाकेको भू-क्षेत्र

खाद्य तथा अन्य बाली

समीक्षा अवधिमा लुम्बिनी प्रदेशमा खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको कुल क्षेत्रफल १.३२ प्रतिशतले ह्रास भई ८ लाख ५ सय ५८ हेक्टर कायम भएको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो क्षेत्रफल १.७४ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । समीक्षा अवधिमा अधिकाँस जिल्लाहरूमा धान, मकै, गहुँ, उखु र दलहनको भू-क्षेत्रमा ह्रास देखिएको कारण समग्र खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको भू-क्षेत्र घटेको छ । यसैगरी, समीक्षा अवधिमा गत वर्षको तुलनामा कोदो ४.५३ प्रतिशत, आलु ३.१० प्रतिशत, भटमास ४.०२ प्रतिशत र तेलहन १६.९८ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ भने जौ १.२८ प्रतिशत, उखु ३.५७ प्रतिशत र दलहन १५.०५ प्रतिशतले ह्रास भएको देखिन्छ (चार्ट ३.१)



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरू

अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरूबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा खाद्य तथा अन्न बालीले ढाकेको क्षेत्रफलमा सबैभन्दा बढी दाङको १५.१६ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको २.२३ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बर्दियाको १४.१६

तालिका ३.१: खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको भू-क्षेत्रको जिल्लागत अवस्था (हिस्सा प्रतिशतमा)

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | २.२३ | अर्घाखाँची | ४.४४ | कपिलवस्तु | १४.०३ |
| रोल्पा | ३.७५ | पाल्पा | ५.२२ | दाङ | १५.१६ |
| प्यूठान | ४.१८ | नवलपरासी | ५.७२ | बाँके | १२.४३ |
| गुल्मी | ५.४८ | रुपन्देही | १३.२१ | बर्दिया | १४.१६ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरू

प्रतिशत, कपिलवस्तुको १४.०३ प्रतिशत, रुपन्देहीको १३.२१ प्रतिशत, बाँकेको १२.४३ प्रतिशत, नवलपरासीको ५.५.७२ प्रतिशत, गुल्मीको ५.४८ प्रतिशत, पाल्पाको ५.२२ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ४.४४ प्रतिशत, प्यूठानको ४.१८ प्रतिशत, र रोल्पाको ३.७५ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ३.१) ।

तरकारी

समीक्षा अवधिमा तरकारी बालीले ढाकेको क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा २.०८ प्रतिशतले वृद्धि भई ४० हजार ८ सय ७९ हेक्टर पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो क्षेत्रफल ३.९२ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । जिल्लागत रूपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा तरकारी

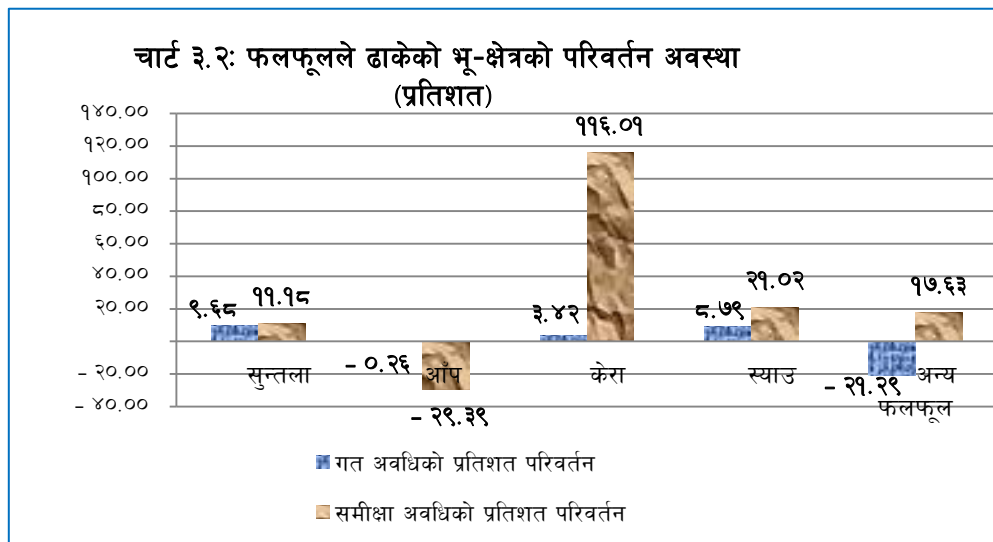
| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | १.१० | अर्घाखाँची | ३.५७ | कपिलवस्तु | ६.५१ |
| रोल्पा | ३.९१ | पाल्पा | ५.२७ | दाङ | १५.३ |
| प्युठान | ३.०१ | नवलपरासी | ६.५७ | बाँके | २०.८ |
| गुल्मी | २.७६ | रुपन्देही | १३.७ | बर्दिया | १७.४ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

बालीले ढाकेको कुल भू-क्षेत्रफलमा बाँके जिल्लाको सबैभन्दा धेरै २०.८३ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्व जिल्लाको १.१० प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बर्दियाको १७.४१ प्रतिशत, दाङको १५.३५ प्रतिशत, रुपन्देहीको १३.७० प्रतिशत, नवलपरासीको ६.५७ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ६.५१ प्रतिशत, पाल्पाको ५.२७ प्रतिशत, रोल्पाको ३.९१ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ३.५७ प्रतिशत, प्युठानको ३.०१ प्रतिशत र गुल्मीको २.७६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.२) ।

फलफूल

समीक्षा अवधिमा फलफूलले ढाकेको क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा ९.८९ प्रतिशतले वृद्धि भई २१ हजार १ सय हेक्टर पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो क्षेत्रफल ४ प्रतिशतले हास भएको थियो । नवलपरासी जिल्लामा केरा जोन क्षेत्र कायम गरिएको कारण समीक्षा अवधिमा फलफूल बालीले ढाकेको क्षेत्रफलमध्ये केराले ढाकेको क्षेत्रफल ११६.०१ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । यसैगरी, स्याउले ढाकेको क्षेत्रफल २१.०२ प्रतिशत, सुन्तलाले ढाकेको क्षेत्रफल ११.१८ प्रतिशत र अन्य फलफूलले ढाकेको क्षेत्रफल १७.६३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने आँपले ढाकेको क्षेत्रफल २९.३९ प्रतिशतले घटेको छ (चार्ट ३.२) ।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

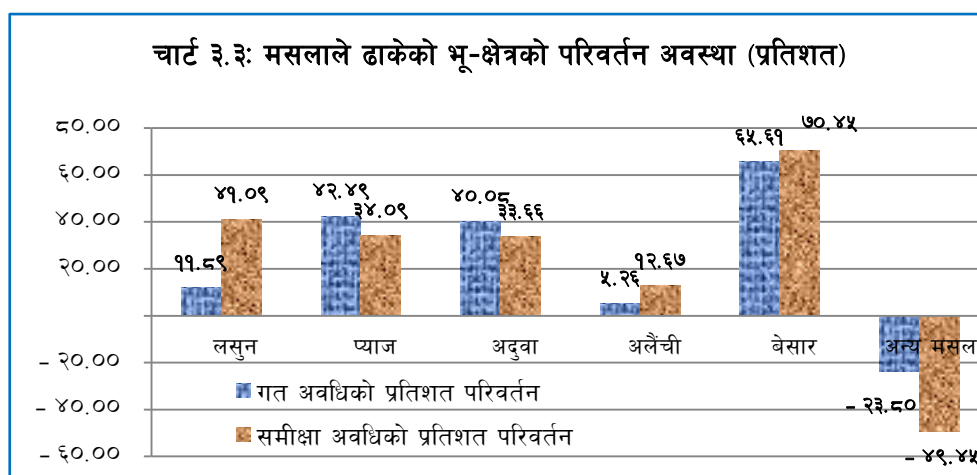
जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा फलफूलले ढाकेको क्षेत्रफलमा सबैभन्दा बढी नवलपरासीको १५.५९ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको ४.७८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने कपिलवस्तुको ११.९१ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ९.७१ प्रतिशत, पाल्पाको ९.०३ प्रतिशत, बर्दियाको ८.५६ प्रतिशत, दाङको ८.२७ प्रतिशत, रुपन्देहीको ७.७० प्रतिशत, गुल्मीको ७.१६ प्रतिशत, प्यूठानको ६.०२ प्रतिशत, बाँकेको ५.८८ प्रतिशत र रोल्पाको ५.३८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.३)।

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ४.७८ | अर्घाखाँची | ९.७१ | कपिलवस्तु | ११.९१ |
| रोल्पा | ५.३८ | पाल्पा | ९.०३ | दाङ | ८.२७ |
| प्यूठान | ६.०२ | नवलपरासी | १५.५ | बाँके | ५.८८ |
| गुल्मी | ७.१६ | रुपन्देही | ७.७० | बर्दिया | ८.५६ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

मसला

समीक्षा अवधिमा मसलाले ढाकेको क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा ४.४२ प्रतिशतले वृद्धि भई ९ हजार ७ सय ४१.२२ हेक्टर पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो क्षेत्रफल ३.८९ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो। समीक्षा अवधिमा मसलाले ढाकेको क्षेत्रफल मध्ये लसुनले ढाकेको क्षेत्रफल ४१.०९ प्रतिशत, प्याजले ढाकेको क्षेत्रफल ३४.०९ प्रतिशत, अदुवाले ढाकेको क्षेत्रफल ३३.३६ प्रतिशत, अलैचीले ढाकेको क्षेत्रफल १२.६७ प्रतिशत, बेसारले ढाकेको क्षेत्रफल ७०.४५ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने अन्य मसलाले ढाकेको क्षेत्रफल ४९.४५ प्रतिशतले ह्रास भएको छ (चार्ट ३.३)।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा मसलाले ढाकेको क्षेत्रफलमा सबैभन्दा बढी बाँकेको १९.१९ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको १.३४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने पाल्पाको १६.७५ प्रतिशत, दाङको १२.०३ प्रतिशत, बर्दियाको ९.४४ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ७.४५ प्रतिशत, रुपन्देही र अर्घाखाँचीको समान ६.८३ प्रतिशत, रोल्पाको ५.५४ प्रतिशत, प्यूठानको ५.१३ प्रतिशत, गुल्मीको ४.८४ प्रतिशत र नवलपरासीको ४.६२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.४)।

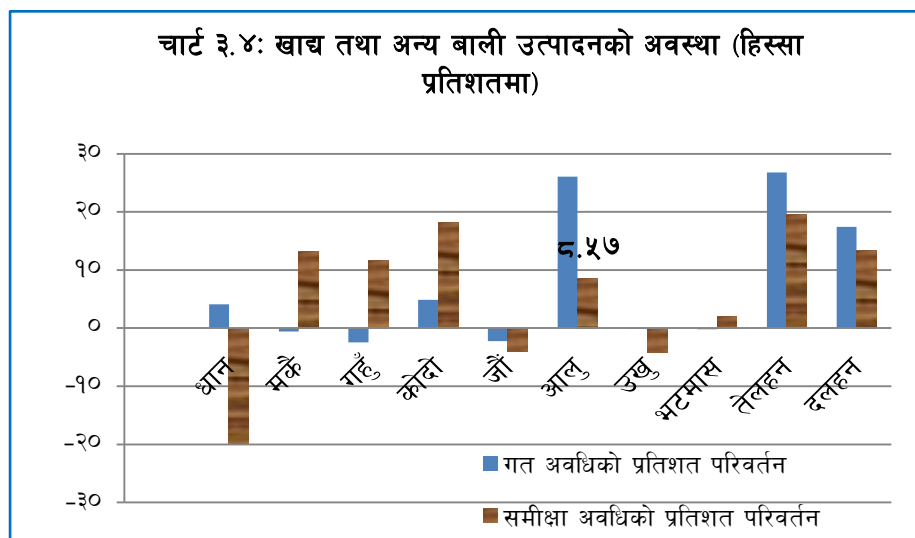
| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | १.३४ | अर्घाखाँची | ६.८३ | कपिलवस्तु | ७.४५ |
| रोल्पा | ५.५४ | पाल्पा | १६.७५ | दाङ | १२.०३ |
| प्यूठान | ५.१३ | नवलपरासी | ४.६२ | बाँके | १९.१९ |
| गुल्मी | ४.८४ | रुपन्देही | ६.८३ | बर्दिया | ९.४४ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

३.२ कृषि उत्पादन

खाद्य तथा अन्य बाली

समीक्षा अवधिमा खाद्य तथा अन्य बालीको उत्पादन गतअवधिको तुलनामा ७.५९ प्रतिशतले ह्रास भई २७ लाख ९० हजार ७ सय ७१ मे.टन भएको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ४.५१ प्रतिशतले बढेको थियो । समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशको खाद्य तथा अन्य बालीले ढाकेको भू-क्षेत्रमा ह्रास आएको कारण उत्पादनमा समेत ह्रास आएको देखिन्छ, (चार्ट ३.४) ।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशको पहाडी जिल्लाहरुमा मकै मिसन कार्यक्रम सञ्चालन रहेको साथै उन्नत जातको बिउ प्रयोग भएको कारण गत अवधिको तुलनामा मकै उत्पादन १३.२६ प्रतिशत, तराइका दाङ, बाँके, बर्दिया, रुपन्देही लगायतका जिल्लाहरु र पहाडका केही जिल्लाहरुमा उन्नत बिउको प्रयोग हुनुको कारण गहुँ उत्पादन ११.६८ प्रतिशत, रोल्पा, प्यूठान, गुल्मी, पाल्पा लगायतका पहाडी जिल्लामा कोदोले ढाकेको भू-क्षेत्रमा वृद्धि हुनुको साथै समयमै वर्षा भएको कारण कोदो उत्पादन १८.१५ प्रतिशत, रोल्पा तथा गुल्मी लगायतका जिल्लाहरुमा आलुले ढाकेको भू-क्षेत्रमा वृद्धि हुनुको साथै आलु मिसन कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेको कारण आलु उत्पादन ८.५७ प्रतिशत र तेलहनले ढाकेको भू-क्षेत्र बढेको कारण तेलहन उत्पादन १९.६६ प्रतिशत र दलहन उत्पादन १३.४१ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ भने धान उत्पादन १९.८९ प्रतिशत, जौ उत्पादन ३.९८ प्रतिशत र उखु उत्पादन ४.२० प्रतिशतले घटेको देखिन्छ ।

यस प्रदेशमा खाद्य तथा अन्य बालीको जिल्लागत उत्पादन विश्लेषण गर्दा सबैभन्दा बढी योगदान कपिलवस्तुको १९.३२ प्रतिशत र सबैभन्दा रुकुमपूर्व जिल्लाको ३.३९ प्रतिशत कम योगदान रहेको छ भने रुपन्देहीको १६.९४ प्रतिशत, दाङको १२.४३ प्रतिशत, नवलपरासीको १०.३८ प्रतिशत, बाँकेको ९.९४ प्रतिशत, बर्दियाको ७.७१ प्रतिशत, दाङको ११.५६ प्रतिशत, गुल्मीको ४.८७ प्रतिशत, पाल्पाको ४.१९ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ३.८४ प्रतिशत, प्यूठानको ३.५६ प्रतिशत र रोल्पाको ३.४२ प्रतिशत योगदान रहेको छ (तालिका ३.५) ।

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ३.३९ | अर्घाखाँची | ३.८४ | कपिलवस्तु | १९.३२ |
| रोल्पा | ३.४२ | पाल्पा | ४.१९ | दाङ | १२.४३ |
| प्यूठान | ३.५६ | नवलपरासी | १०.३८ | बाँके | ९.९४ |
| गुल्मी | ४.८७ | रुपन्देही | १६.९४ | बर्दिया | ७.७१ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

तरकारी

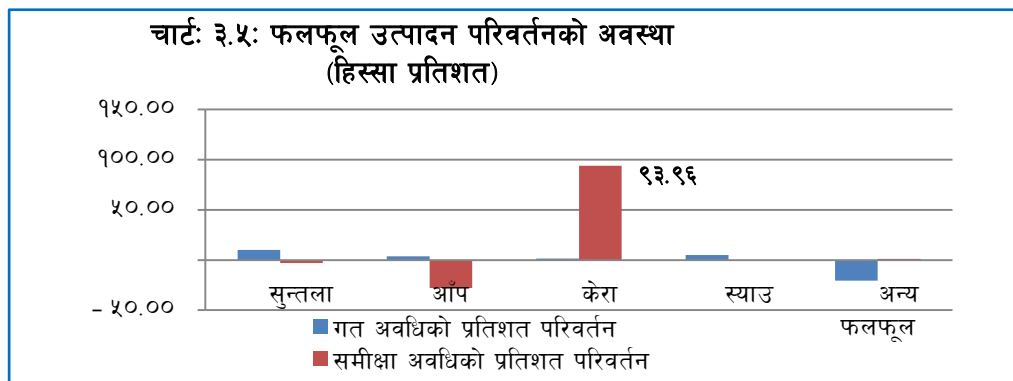
समीक्षा अवधिमा तरकारी बालीको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ७.६१ प्रतिशतले वृद्धि भई ५ लाख ९४ हजार १ सय १२ मे.टन पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ८.६९ प्रतिशतले घटेको थियो । समीक्षा अवधिमा तरकारीले ढाकेको भू-क्षेत्रमा वृद्धि भएको कारण तरकारी उत्पादनमा समेत वृद्धि भएको देखिन्छ । जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा तरकारी बालीको उत्पादनमा सबैभन्दा धेरै रुपन्देहीकमे २०.७० प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्व जिल्लाको ०.७३ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बाँकेको १७.३ प्रतिशत, बर्दियाको १४.५ प्रतिशत, दाङको १४.४ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ९.९५ प्रतिशत, पाल्पाको ५.८० प्रतिशत, नवलपरासीको ५.३५ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ३.३० प्रतिशत, रोल्पाको ३.१० प्रतिशत, प्यूठानको २.५५ प्रतिशत र गुल्मीको २.०६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.६) ।

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ०.७३ | अर्घाखाँची | ३.३० | कपिलवस्तु | ९.९५ |
| रोल्पा | ३.१० | पाल्पा | ५.८० | दाङ | १४.४ |
| प्यूठान | २.५५ | नवलपरासी | ५.३५ | बाँके | १७.३ |
| गुल्मी | २.०६ | रुपन्देही | २०.७ | बर्दिया | १४.५ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

फलफूल

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा फलफूलको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा २१.३२ प्रतिशतले वृद्धि भई १ लाख ७१ हजार ७ सय २९ मे.टन भएको छ । गत वर्ष यस्तो उत्पादन २.८३ प्रतिशतले घटेको थियो । समीक्षा वर्षमा गत वर्षको तुलनामा यस प्रदेशमा नवलपरासी जिल्लामा केरा जोन कायम गरिएकोले केराले ढाकेको क्षेत्रफल बढेको कारण केरा उत्पादन ९३.९६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । यसैगरी, समीक्षा अवधिमा गत अवधिको तुलनामा सुन्तला उत्पादन ३.०४ प्रतिशत, स्याउ उत्पादन ०.७८ प्रतिशत र आँप उत्पादन २७.९४ प्रतिशतले घटेको देखिन्छ । गत वर्षको तुलनामा समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा केरा उत्पादन ९३.९६ प्रतिशत तथा अन्य फलफूल उत्पादन १.२५ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ र सुन्तला उत्पादन ३.०४ प्रतिशत, स्याउ उत्पादन ०.७८ प्रतिशत र आँप उत्पादन २७.९४ प्रतिशतले ह्रास भएको देखिन्छ । पकेट क्षेत्रबाट ब्लक क्षेत्रमा र हाल ब्लक क्षेत्रबाट जोन क्षेत्र कायम भई विस्तार भएको कारण नवलपरासी जिल्लामा केराले ढाकेको क्षेत्रफलमा वृद्धि हुनुको साथै उत्पादनमा पनि वृद्धि भएको देखिन्छ । समीक्षा अवधिमा आपले ढाकेको भू-क्षेत्र घट्नुको साथै दाङ, र बाँके जिल्लाहरुमा आँपको उत्पादन घटेको कारण समग्र आँप उत्पादन २७.९४ प्रतिशतले घटेको देखिन्छ (चार्ट ३.५)।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा फलफूल उत्पादनमा सबैभन्दा बढी नवलपरासीको २७.८ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको २.४२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने रुपन्देहीको १२.४ प्रतिशत, बर्दियाको ११.३३ प्रतिशत, पाल्पाको ८.४७

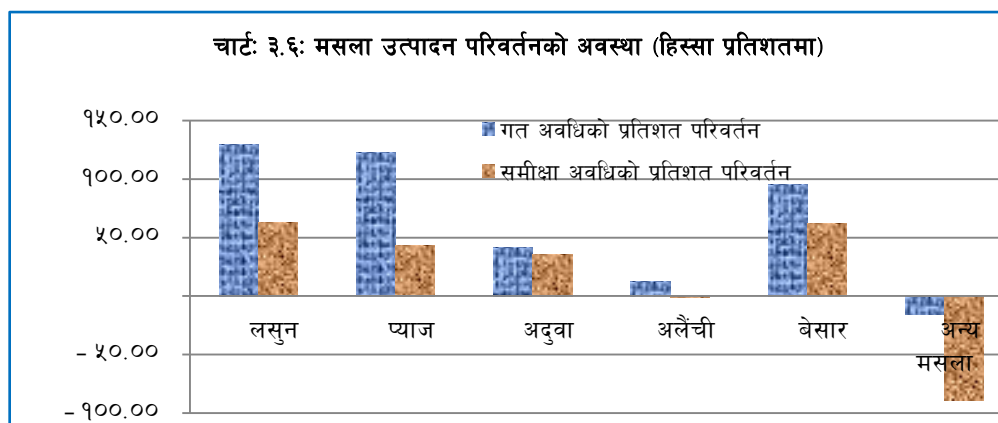
| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | २.४२ | अर्घाखाँची | ४.३६ | कपिलवस्तु | ७.११ |
| रोल्पा | २.९७ | पाल्पा | ८.४७ | दाङ | ५.७९ |
| प्युठान | ६.५२ | नवलपरासी | २७.८ | बाँके | ५.०२ |
| गुल्मी | ५.८१ | रुपन्देही | १२.४ | बर्दिया | ११.३३ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

प्रतिशत, कपिलवस्तुको ७.११ प्रतिशत, प्युठानको ६.५२ प्रतिशत, गुल्मीको ५.८१ प्रतिशत, दाङको ५.७९ प्रतिशत, बाँकेको ५.०२ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ४.३६ प्रतिशत र रोल्पाको २.९७ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.७)

मसला

समीक्षा अवधिमा मसला उत्पादन गत अवधिको तुलनामा १२.५४ प्रतिशतले वृद्धि भई ९५ हजार ३ सय ५३ मे.टन पुगेको छ । गत अवधिमा यस्तो उत्पादन ८.३० प्रतिशतले बढेको थियो । समीक्षा अवधिमा मसला उत्पादन मध्ये लसुन उत्पादन ६३.२५ प्रतिशत, बेसार उत्पादन ६१.७० प्रतिशत, प्याज उत्पादन ४३.३७ प्रतिशत र अदुवा उत्पादन ३५.४८ प्रतिशतले बढेको छ भने अन्य मसला उत्पादन ८८.९५ प्रतिशतले घटेको छ (चार्ट ३.६) ।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा मसला उत्पादनमा सबैभन्दा बढी बर्दियाको २०.६८ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको ०.९७ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने पाल्पाको १८.२२ प्रतिशत, दाङको १६.१६ प्रतिशत, बाँकेको १०.६८ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ८.३७ प्रतिशत,

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ०.९७ | अर्घाखाँची | ५.८२ | कपिलवस्तु | ८.३७ |
| रोल्पा | २.०८ | पाल्पा | १८.२२ | दाङ | १६.१६ |
| प्युठान | ६.२९ | नवलपरासी | ५.२३ | बाँके | १०.६८ |
| गुल्मी | ४.४८ | रुपन्देही | १.०३ | बर्दिया | २०.६८ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

प्युठानको ६.२९ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ५.८२ प्रतिशत, नवलपरासीको ५.२३ प्रतिशत, गुल्मीको ४.४८ प्रतिशत, रोल्पाको २.०८ प्रतिशत र रुपन्देहीको १.०३ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.८) ।

कफी उत्पादन

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा कफीको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा २७.८४ प्रतिशतले ह्रास भई १ सय २२ मे.टन भएको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन २०.४१ प्रतिशतले घटेको थियो । कफी उत्पादनको मुख्य क्षेत्र गुल्मी र पाल्पाका किसानहरूले आफ्नो उत्पादनको उचित बजार मुल्य पाउन नसकेपछि अन्य वस्तु/बाली तर्फ आकर्षित भएको कारण कफी उत्पादन घट्दो क्रममा रहेको छ ।

मह उत्पादन

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा महको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ११.२८ प्रतिशतले वृद्धि भई ८ सय २०.१० मे.टन भएको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन २७.८८ प्रतिशतले बढेको थियो । यस प्रदेशमा किसानहरूलाई माहुरी पालन सम्बन्धी प्राविधिक सहयोग र क्षमता अभिवृद्धि तालिम दिईएको कारण मह उत्पादन उल्लेख्य वृद्धि भएको देखिन्छ ।

बक्स १: मौरी पालन

नेपालमा एपिस मेलिफेरा जातका मौरी भित्रिए पश्चात् मौरीपालक कृषकहरू परम्परागत पद्धतिमा क्रमशः सुधार गरी व्यवसायिक मौरीपालन कार्यमा लागेको देखिन्छ । व्यवसायिक मौरीपालनबाट कृषकहरूको रोजगारीमा वृद्धि भएको, बालीविरुवाहरूमा परागसेचनमा सहयोग पुगेको र वातावरण संरक्षण समेत हुने गरेको कारण यो व्यवसायमा अन्य कृषकहरू समेत आकर्षण हुने देखिन्छ । यस प्रदेशमा मौरी पालनका लागि १० महिना सम्मको उपयुक्त हावापानी तथा प्रशस्त चरन क्षेत्र उपलब्ध हुनुले मौरी पालनको उच्च सम्भावना देखिएको छ । कृषि विकास निर्देशनालय बुटवल, रुपन्देहीबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार लुम्बिनी प्रदेशका जिल्लाहरूमा आ.व. २०७८/७९ मा ६,४९,१३५ के.जी.मह उत्पादन भएको छ । त्यसैगरी विभिन्न जिल्लाहरूमा मौरी ब्लक कार्यक्रम तथा मारी जोन कार्यक्रम संचालनमा रहेको छ ।

तालिका ३.९ लुम्बिनी प्रदेशमा मौरी पालनको अवस्था

| क्र. सं. | जिल्ला | व्यवसायिक कृषक संख्या | जिल्लागत अंश (प्रतिशत) | मौरी गोला संख्या | | | | जम्मा | जिल्लागत अंश (प्रतिशत) |
|--|------------|-----------------------|------------------------|------------------|--------------|------------------|-------------|--------------|------------------------|
| | | | | व्यवसायिक | | घरायसी/परम्परागत | | | |
| | | | | सेरना | मोलिफेरा | सेरना | मोलिफेरा | | |
| १ | नवलपरासी | ४५ | ६.८३ | ० | ११५५ | १२६ | ४०० | १६८१ | २.९० |
| २ | रुपन्देही | ५८ | ८.८० | ० | २४७५ | ० | ८४० | ३३१५ | ५.७३ |
| ३ | कपिलवस्तु | ५६ | ८.५० | ० | २१२८ | १४५ | ८१० | ३०८३ | ५.३३ |
| ४ | पाल्पा | १३ | १.९७ | १९७६ | ० | ४९२५ | ० | ६९०१ | ११.९२ |
| ५ | गुल्मी | ७ | १.०६ | ७८० | ० | ११९२८ | ० | १२७०८ | २१.९६ |
| ६ | अर्घाखाँची | ११ | १.६७ | ९८६ | ० | ४५२० | ० | ५५०६ | ९.५१ |
| ७ | दाङ | ३८५ | ५.८२ | ० | ११२१५ | १६०० | २४३० | १५२४५ | २६.३४ |
| ८ | प्युठान | ३० | ४.५५ | २५६ | २०४२ | १२६० | ० | ३५५८ | ६.१५ |
| ९ | रोल्पा | ६ | ०.९१ | ५७५ | ० | ८१० | ० | १३८५ | २.३९ |
| १० | रुकुमपर्व | ५ | ०.७६ | १०२० | ० | ४०० | ० | १४२० | २.४५ |
| ११ | बाँके | २३ | ३.४९ | ० | १९८५ | ० | २३९ | २२२४ | ३.८४ |
| १२ | वर्दिया | २० | ३.०३ | ० | ७२६ | ० | १२० | ८४६ | १.४६ |
| जम्मा | | ६५९ | १००.०० | ५५९३ | २१७२६ | २५७१४ | ४८३९ | ५७८७२ | १००.०० |
| व्यवसायिक मौरी गोलाको अंश (प्रतिशत) | | | | | | | | | ४७.२१ |
| घरायसी/परम्परागत मौरी गोलाको अंश (प्रतिशत) | | | | | | | | | ५२.७९ |
| सेरना मौरी गोलाको अंश (प्रतिशत) | | | | | | | | | ५४.१० |
| मोलिफेरा मौरी गोलाको अंश (प्रतिशत) | | | | | | | | | ४५.९० |

आ.व.२०७८/७९ सम्म यस प्रदेशमा कुल ६ सय ५९ व्यवसायिक मौरी पालक कृषकहरू रहेका छन् । जिल्लागतरूपमा हेर्दा कुल व्यवसायिक कृषकहरूमा सबै भन्दा धेरै दाङ जिल्लाको ५८.४२ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्वको ०.७६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बाँकी अन्य जिल्लाहरूको हिस्सा रहेको छ । त्यसैगरी, यस प्रदेशमा कुल ५७ हजार ८ सय ७२ मौरी गोला संख्या रहेको छ । कुल मौरी गोला संख्यामा व्यवसायिक मौरी गोलाको ४७.२१ प्रतिशत र परम्परागत मौरी गोलाको ५२.७९ प्रतिशत अंश रहेको छ भने कुल मौरी गोला संख्यामा सेरेना मौरी गोलाको ५४.१० प्रतिशत र मोलिफेरा मौरी गोलाको ४५.९० प्रतिशत अंश रहेको छ । (तालिका ३.९) ।

बक्स १: क्रमशः

सम्भावनाहरु

- तराइ देखी उच्च पहाडी लेकसम्मको उपयुक्त हावापानी हुनुको साथै वन जंगल र खेती प्रणाली एवं मौरी चरन क्षेत्रको उपलब्धता रहेको कारण मौरीपालनको सम्भावना रहेको ।
- हाल देश भित्रै महको सेवन तथा माग बढिरहेको कारण यस प्रदेशको मह उत्पादन अन्य प्रदेशमा निर्यातको सम्भावना रहेको ।
- थोरै लगानीबाट मौरीपालनको शुरुवात गर्न सकिन्छ जसलाई धेरै स्थानको पनि आवश्यकता पर्दैन र पहिलो वर्षबाट आयआर्जन हुने सम्भावना रहेको ।
- हाल महलाई निर्यातयोग्य महत्वपूर्ण कृषि वस्तुको रूपमा पहिचान गरिसकिएको हुँदा गुणस्तरीय उत्पादनबाट बैदेशिक मुद्रा आर्जन तथा राष्ट्रिय ग्राहस्थ उत्पादनमा सहयोग हुने ।
- यस प्रदेशको ग्रामीण क्षेत्रका कृषकहरुको परम्परागत रूपमा मौरी पालन अनुभवलाई सँगाली व्यावसायिक रूपमा मौरीपालन गरेको कारण यस व्यवसायको व्यापक सम्भावना रहेको ।

चुनौतीहरु

- महमा विषादी अवशेष अनुगमन कार्यक्रमको अभाव, अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला र उपकरणको कमीका कारण महको गुणस्तर प्रमाणीकरण गर्ने कार्य ।
- गुणस्तरीय मौरीको गोला, रानी मौरी दक्ष प्राविधिक, गुणस्तरीय तालिम र मौरिजन्य वस्तुहरुको उत्पादन प्रविधिको अभावका कारण ठाँउ विशेष अनुसार मह उत्पादन गर्ने कार्य ।
- जंगल फडानि र आगजनिा कारण मौरी चरन क्षेत्र विनास हुनबाट जोगाउने कार्य ।
- बालिनालिमा फुल फुलेको समय विषादी प्रयोग हुनु, मौरीमा विभिन्न किसिमका रोग किराको प्रकोप बढ्दै जानु र कृषकहरुमा परागसेचन सम्बन्धी ज्ञानको कमीका बावजूद मह उत्पादन गर्ने कार्य ।
- सहूलियत व्याजदरमा कृषकहरुलाई सहज प्रक्रियामा ऋण उपलब्ध गराउने कार्य ।
- मौरीको बिमा र महको भरपर्दो बजार व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।
- भौगोलिक वनावटका कारण उपलब्ध मौरी चरनमा मौरी ढुवानी गर्ने कार्य ।

(स्रोत:कृषि विकास निर्देशनालय बुटवल, रुपन्देही)

३.३ पशुपन्छी, माछा उत्पादन

दुध उत्पादन

समीक्षा अवधिमा दुधको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा २.९४ प्रतिशतले वृद्धि भई ५ लाख ३४ हजार ६ सय ३ हजार लिटर पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ३.२० प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । जिल्लाहरुमा सरकारी निकायबाट सञ्चालनमा रहेका डेरी पसल सुधार तथा स्थापना र सहूलियतपूर्ण कर्जा कार्यक्रम जस्ता विभिन्न प्रवर्द्धनात्मक कार्यक्रमहरुका कारण व्यवसायिक रूपमा दुध उत्पादन बढ्न गएको हो ।

तालिका ३.१०: दुध उत्पादनको जिल्लागत अवस्था (हिस्सा प्रतिशतमा)

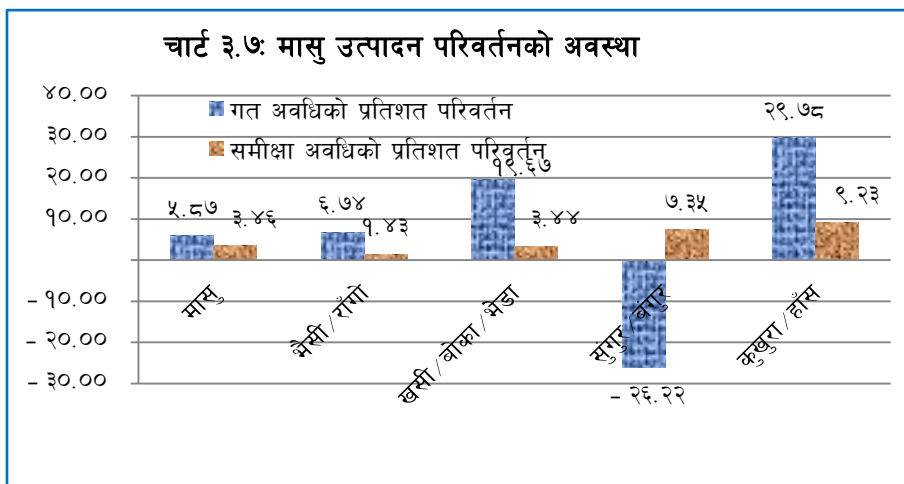
| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | १.३५ | अर्घाखाँची | ६.५४ | कपिलवस्तु | ८.१२ |
| रोल्पा | ३.१० | पाल्पा | ९.८४ | दाङ | ८.२८ |
| प्युठान | ३.४२ | नवलपरासी | ४.६४ | बाँके | ८.७८ |
| गुल्मी | ७.६९ | रुपन्देही | २९.४ | वर्दिया | ८.८ |

स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका भेटेनरी अस्पतालहरु

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा दुधको उत्पादन हिस्सा सबैभन्दा धेरै रुपन्देहीको २९.४ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्व जिल्लाको १.३५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बाँकेको ८.७८ प्रतिशत, बर्दियाको ८.८० प्रतिशत, दाङको ८.२८ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ८.१२ प्रतिशत, पाल्पाको ९.८४ प्रतिशत, नवलपरासीको ४.६४ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ६.५४ प्रतिशत, रोल्पाको ३.१० प्रतिशत, प्यूठानको ३.४२ प्रतिशत र गुल्मीको ७.६९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । (तालिका ३.१०) ।

मासु उत्पादन

समीक्षा अवधिमा मासुको उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ३.४६ प्रतिशतले वृद्धि भई १ लाख १ हजार ५ सय ३० मे.टन पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो उत्पादन ५.८७ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । जिल्लाहरुमा सहूलियतपूर्ण कर्जा कार्यक्रम, बाखा मिसन कार्यक्रम, ग्रामीण कुखुरा कार्यक्रम, नश्ल सुधारका साथै भेंडा/बाखा र पाडा/पाडीहरुका लागि विभिन्न प्रवर्द्धनात्मक कार्यक्रमहरु सञ्चालनमा रहेका कारण व्यवसायिक रुपमा मासु उत्पादन बढ्न गएको हो । समीक्षा अवधिमा मासु उत्पादन मध्ये भैसी/राँगेको मासु गत अवधिको तुलनामा १.४३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने खसी/बोका/भेडाको मासुको उत्पादन ३.४४ प्रतिशत, जिल्लाहरुमा स्थानिय तहको साभेदारीमा बंगुर प्रवर्द्धन कार्यक्रम र ग्रामीण कुखुरापालन कार्य सञ्चालनमा रहेको कारण सुँगुर/बंगुरको उत्पादन ७.३५ प्रतिशत तथा कुखुरा/हाँसको उत्पादनमा ९.२३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ (चार्ट ३.७) ।



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा मासुको उत्पादन हिस्सा सबैभन्दा धेरै रुपन्देहीकम ३०.५ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुमपूर्व जिल्लाको २.०२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने बाँकेको ७.८६ प्रतिशत, बर्दियाको ७.४६ प्रतिशत, दाङको १२.५ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ६.८५ प्रतिशत, पाल्पाको १० प्रतिशत, नवलपरासीको ४.९५ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ३.९३ प्रतिशत, रोल्पाको ३.२३ प्रतिशत, प्यूठानको ३.२३ प्रतिशत र गुल्मीको ७.४६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ३.११) ।

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | २.०२ | अर्घाखाँची | ३.९३ | कपिलवस्तु | ६.८५ |
| रोल्पा | ३.२३ | पाल्पा | १०.० | दाङ | १२.५ |
| प्यूठान | ३.३६ | नवलपरासी | ४.९५ | बाँके | ७.८६ |
| गुल्मी | ७.२७ | रुपन्देही | ३०.५ | बर्दिया | ७.४६ |

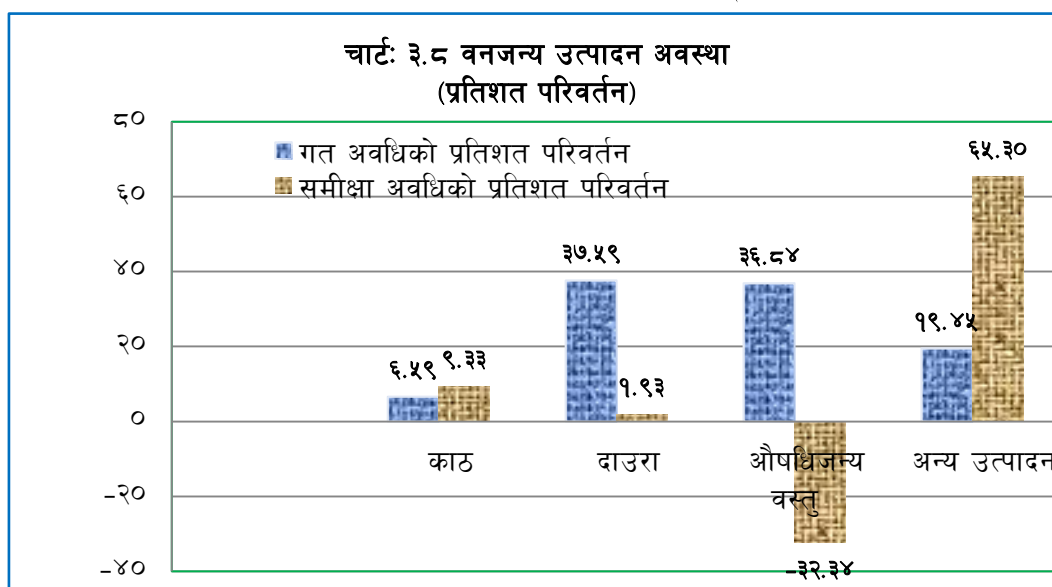
स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका भेटेनरी अस्पतालहरु

माछा उत्पादन

समीक्षा अवधिमा माछा उत्पादन ३.२९ प्रतिशतले वृद्धि भई १४ हजार ८० मे.ट. पुगेको छ, भने गत वर्ष माछाको उत्पादन ५.८६ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो ।

३.४ वनजन्य उत्पादन

समीक्षा अवधिमा वनजन्य उत्पादनतर्फ काठ उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ९.३३ प्रतिशतले वृद्धि भई २१ लख ६७ हजार ३ सय क्यूबिक फिट पुगेको छ भने दाउरा उत्पादन १.९३ प्रतिशतले वृद्धि भई ४ हजार १ सय १५ चट्टा पुगेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा काठको उत्पादन ६.५९ प्रतिशत र दाउराको उत्पादन ३७.५९ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । त्यसैगरी, समीक्षा अवधिमा औषधीजन्य वस्तु उत्पादन ३२.३४ प्रतिशतले ह्रास भएको छ भने अन्य उत्पादन ६५.३० प्रतिशतले बढेको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा औषधीजन्य वस्तु उत्पादन ३६.८४ प्रतिशत र अन्य उत्पादन १९.४५ प्रतिशतले बढेको थियो (चार्ट ३.८) ।



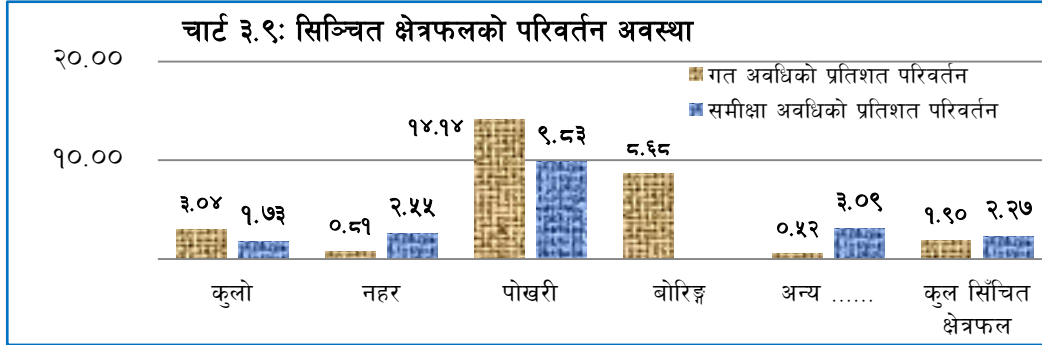
स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

बक्स २: गुल्मी जिल्लामा मुल्यवान काठ अगरउडका विरुवा

किसानहरुको आर्थिक विकास गर्ने उद्देश्यले अन्तराष्ट्रिय बजारमा हजारौं डलरमा बिक्रि हुने अत्यन्त मुल्यवान काठ अगरउडको भौगोलिक सम्भाव्यता गुल्मी जिल्लामा देखिएको छ । गुल्मी जिल्लाको भासैं क्षेत्रमा सो काठ लगाउनको लागि प्रोत्साहन गर्न जिल्ला वन कार्यालयले केहि विरुवा वितरण गरेको छ । अगरउडको उत्पादन र व्यापारको लागि कानूनी प्रावधानहरु वन ऐनमा संशोधन गरी समावेश गरिएको छ । जिल्ला वन कार्यालय गुल्मीले आ.ब. २०७७/७८ मा राजन फलफूल नर्सरी बागवानी फर्म, विर्ती प्रस्टोका-२, रौतहटबाट अगरउडका ६०० विरुवा खरिद गरी श्री थामडाँडा कृषिवन समूह, रुरुक्षेत्र-६ लाई ५५० थान र श्री गाप्तुङ्ग कृषिवन समूह, गुल्मीदरवार-१, बलिथुमलाई ५० थान वितरण गरेको छ । यसका अतिरिक्त किसानहरुले आफ्नै पहलबाट मुसीकोट नगरपालिका वडा नं. ३ लगायतका क्षेत्रहरुमा लगभग २००० भन्दा बढी बेर्ना लगाईएको जानकारी प्राप्त भएको छ (स्रोत: जिल्ला वन कार्यालय, गुल्मी)

३.५ सिँचाई तथा मौसम

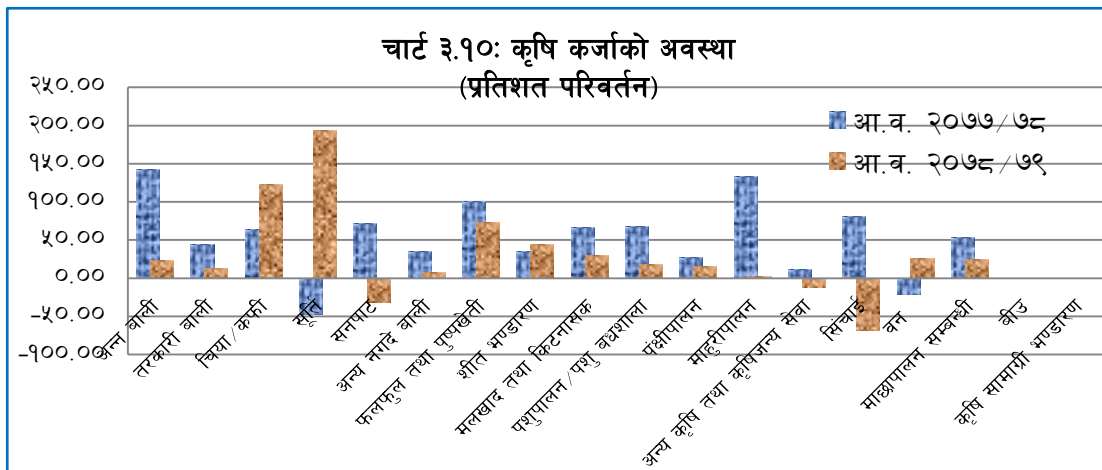
समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशको कुल खेती गरिएको ५ लाख ४९ हजार ४ सय २ हेक्टर क्षेत्रफलमध्ये २ लाख ३२ हजार ३ सय ४५.५ हेक्टर क्षेत्रफलमा सिँचाई सुविधा पुगेको छ । समीक्षा अवधिमा कुल खेती गरिएको क्षेत्रफलको ४२.२९ प्रतिशत क्षेत्रमा सिँचाई सुविधा पुगेको छ भने गत अवधिमा यस्तो सुविधा ४१.४५ प्रतिशत क्षेत्रफलमा पुगेको थियो । समीक्षा अवधिमा खेती गरिएको क्षेत्रफलमा सिँचित क्षेत्रफल गत अवधिको तुलनामा २.२७ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । समीक्षा अवधिमा कुल सिँचित क्षेत्रफलमा कुलो द्वारा १.७३ प्रतिशत, नहरद्वारा २.५५ प्रतिशत, पोखरीद्वारा ९.८३ प्रतिशत, अन्य स्रोतद्वारा ३.०९ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ (चार्ट :३.९)



स्रोत: अध्ययनमा समेटिएका कृषि ज्ञान केन्द्रहरु

३.६ क्षेत्रगत कृषि कर्जा

बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशको कृषि क्षेत्रमा प्रवाहित कृषि कर्जा गत अवधिको तुलनामा १६.२४ प्रतिशतले वृद्धि भई ५० अर्ब ३२ करोड १२ लाख पुगेको छ । गत वर्ष यस्तो कर्जा ४४.२७ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । कुल कर्जामा कृषि कर्जाको ७.१० प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । समीक्षा अवधिमा अन्न बाली २३.६७ प्रतिशत, तरकारी बाली १३.३८ प्रतिशत, चिया/कफी १२३.२२ प्रतिशत, सुर्ति १९३.९८ प्रतिशत, अन्य नगदे बाली ६.८४ प्रतिशत, फलफुल तथा पुष्पखेती ७२.४९ प्रतिशत, शीत भण्डारण ४४.६२ प्रतिशत, मलखाद तथा किटनासक २९.८७ प्रतिशत, पशुपालन/पशु वधशाला १७.८६ प्रतिशत, पंक्षीपालन १५.०४ प्रतिशत, माहुरीपालन २.७८ प्रतिशत, वन २५.९८ प्रतिशत र माछापालन सम्बन्धी २४.९६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने सनपाट ३१.९० प्रतिशत, अन्य कृषि तथा कृषिजन्य सेवा १२.४७ प्रतिशत र सिँचाई ६८.१० प्रतिशतले ह्रास भएको छ (चार्ट ३.१०) ।



स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक

यस प्रदेशमा कृषि क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जामा जिल्लागत हिस्सा हेर्दा रुपन्देही जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ३८.२० प्रतिशत छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.०९ प्रतिशत मात्र रहेको छ । यसैगरी, कुल कृषि कर्जामा दाङको १५.४८ प्रतिशत, बाँकेको १२.१७ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ९.७३ प्रतिशत, नवलपरासीको ९.२६ प्रतिशत, बर्दियाको ५.२९ प्रतिशत, पाल्पाको ५.१२ प्रतिशत, प्यूठानको १.७३ प्रतिशत, गुल्मीको १.२७ प्रतिशत, रोल्पाको ०.९२ प्रतिशत र अर्घाखाँचीको ०.७५ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । (तालिका ३.१२) ।

| जिल्ला | कर्जा | हिस्सा | जिल्ला | कर्जा | हिस्सा |
|-------------|---------|--------|-----------|----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ४४.८६ | ०.०९ | नवलपरासी | ४८०५.४५ | ९.२६ |
| रोल्पा | ४७६.२० | ०.९२ | रुपन्देही | १९८२३.८८ | ३८.२० |
| प्यूठान | ८९९.१३ | १.७३ | कपिलवस्तु | ५०५१.९६ | ९.७३ |
| गुल्मी | ६५८.३३ | १.२७ | दाङ | ८०३१.७८ | १५.४८ |
| अर्घाखाँची | ३८७.१० | ०.७५ | बाँके | ६३१६.०१ | १२.१७ |
| पाल्पा | २६५७.४३ | ५.१२ | बर्दिया | २७४७.२४ | ५.२९ |

स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक

बक्स ३: प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना

नेपालको कुल जनसँख्याको ६०.४ प्रतिशत कृषिमा रहेको र राष्ट्रिय लक्ष्यको रूपमा रहेको समृद्ध नेपाल सुखि नेपालीको नारालाई पुरा गर्न कृषि क्षेत्रको उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने स्पष्ट मार्गचित्रका साथ कृषि उपजको उत्पादनका लागि आवश्यक प्रविधि तथा उत्पादन सामग्रीको व्यवस्था, बाली/बस्तु उत्पादनमा यान्त्रिकरण, प्रशोधन तथा बजारीकरणको लागि आवश्यक पूर्वाधारको व्यवस्था जस्ता कृषकलाप मार्फत कृषि क्षेत्रको आधुनिकीकरण लागि प्रधानमन्त्र कृषि आधुनिकीकरण परियोजना ल्याइएको । नेपाल सरकारबाट आ.व.२०७३/७४ मा १० वर्ष अवधिका लागि यो परियोजना सञ्चालनमा ल्याइएको र यो परियोजनालाई कृषि क्षेत्रलाई आगामी २० वर्षसम्म मार्ग निर्देशन गर्ने कृषि विकास रणनीति कार्यान्वयनको सहयोगी परियोजनाको रूपमा स्वदेशी सोच, स्वदेशी लगानी तथा आन्तरिक संस्थागत जनशक्ति मार्फत तयार गरिएको । यस परियोजना अर्न्तगत साना व्यवसायिक कृषि उत्पादन केन्द्र (पकेट) विकास कार्यक्रम, व्यवसायिक कृषि उत्पादन केन्द्र (ब्लक) विकास कार्यक्रम, व्यवसायिक कृषि उत्पादन तथा प्रशोधन केन्द्र (जोन) विकास कार्यक्रम र बृहत्तर व्यवसायिक कृषि उत्पादन तथा औद्योगिक केन्द्र (सुपरजोन) विकास कार्यक्रम गरी जम्मा चार वटा सम्भागहरु रहेका छन् । देशै भरि २१ वटा सुपरजोन, ३०० वटा जोन, १,५०० वटा ब्लक र १५,००० वटा पकेट क्षेत्रहरु स्थापना गर्नका लागि यस परियोजनाको कुल लागत रु १ खर्ब ३० अर्ब ७४ करोड २० लाख रहेको छ ।

लुम्बिनी प्रदेशमा रहेका १२ वटा जिल्लाहरुमा यो परियोजना लागू भई २७ जोन तथा ५ वटा सुपरजोन स्थापना भएको छ । गुल्मी जिल्लामा कफी, रुपन्देहीमा माछा, कपिलवस्तुमा धान, दाङमा मकै र बर्दियामा चैते धान सुपरजोन क्षेत्रहरु रहेका छन् । यो परियोजना अर्न्तगत तरकारी, कफि, मकै, सुन्तला फलफुल, बाखा, धान, ओखर, आलुखेती, माछापालन, तोरी, मौरी, केरा, अदुवा/बेसार आदि खेती सुरु भएको छ । यो परियोजना लागू हुनु अगाडी ६७,०८७ हेक्टर क्षेत्रफलमा खेति गरिएकोमा योजना कार्यान्वयन पश्चात खेतियोग्य क्षेत्रफल बृद्धि भई १,०९,८२८.०४ हेक्टर पुगेको छ । यस प्रदेशमा परियोजना कार्यान्वयन एकाइ अर्न्तगत आ.व. २०७८/७९ सम्म ४,१९२ संस्थाहरु सुचिकृत भएका छन् । परियोजना कार्यान्वयनको लागि आ.व.२०७८/७९मा विनियोजित कुल बजेट रु. २ अर्ब ४० करोड ३७ लाख मध्ये रु. १ अर्ब ६८ करोड २८ लाख खर्च भईसकेको जानकारी प्राप्त भएको छ ।

परियोजना कार्यान्वयनमा देखिएका समस्याहरु

- सिँचाई आयोजनाहरु पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन हुन नसक्दा सिँचित क्षेत्र विस्तार हुन नसकी परियोजनाको कार्यक्रमहरु प्रभावित हुने गरेका र लागत न्युनिकरण हुन नसकेको ।
- परियोजनाको बजेट भार बढी भएको महत्वपूर्ण सम्भाग पकेट तथा ब्लक विकास कार्यक्रम प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन हुन नसकेको ।
- माछा सुपरजोनमो पोखरी सिँचाईको लागि प्रयोग हुने विद्युतीय मिटरमा छुट नदिई उद्योगी सरह व्यवहार हुदा कार्यक्रम प्रभावकारी हुन नसकेको ।

बक्स ३: क्रमशः

- अदुवाको न्यूनतम समर्थन मुल्य नहुनाले बजारीकरणमा समस्या भईरहेको ।
- कृषि अनुदानमा प्रभावकारी ऐन कानून नभएको कारणले दण्ड सजाएको व्यवस्था गर्न नसकिएको तथा अनुदानको प्रभावकारी तथा दिगोपनाको सुनिश्चतता हुन नसकेको ।
- जोन र सुपरजोनमा प्राविधिक जनशक्तिको अभाव तथा जनशक्तिको दरबन्दी समयमा स्वीकृत नभएको कारण सेवा प्रवाहमा समेत समस्या रहेको ।
- चैते धानको बजार मुल्य कम रहेको र मुख्य उत्पादन सिजनमा भारतीय केरा र माछासंग मुल्यमा प्रतिस्पर्धा गर्न नसकि किसानहरुको उत्पादन खेर जाने अवस्था रहेको ।

सुभावहरु

- सिँचाई मन्त्रालयसंग समन्वय गरि जोन सुपरजोन क्षेत्रमा लिफ्ट सिँचाई, सौर्य सिँचाई तथा डिप बोरिङहरुलाई पुर्ण क्षमतामा संचालनको लागि पर्याप्त बजेट तथा प्राविधिक सेवा उपलब्ध गराउने व्यवस्था गर्नुपर्ने । सो को लागी राष्ट्रिय समस्या समाधान समिति तय गरी सो मार्फत समस्या समाधान गरिनु पर्ने ।
- मत्स्य उद्यमीहरुको लागत प्रभावी बनाउन पोखरी संचालन विद्युतीय मिटरमा छुट प्रदान गरि उनिहरुलाई प्रोत्साहन गर्नु पर्ने ।
- अदुवाको न्युतम समर्थन मुल्य तोकेर बजारीकरणमा भईरहेको समस्या हल गर्नुपर्ने ।
- कृषि अनुदान प्रवाह ऐन यथासीघ्र तर्जुमा गरी कार्यान्वयनमा ल्याउन आवश्यक प्रक्रिया शुरु गर्नुपर्ने ।
- कृषि प्राविधिक कर्मचारीहरुको क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रमलाई आगामी आ.व. देखी प्राथमिकतामा राखी प्राविधिक सेवालालाई चुस्त बनाउनु पर्ने ।
- केरा र माछा भन्सार विन्दुवाट हुने चोरी पैठारी नियन्त्रण गर्नुपर्ने र स्वदेशी उत्पादनलाई प्रवर्द्धन गर्ने कार्यक्रमहरु ल्याईनु पर्ने ।

३.७ कृषि क्षेत्रका सम्भावना तथा चुनौती

यस प्रदेशका करिब दुई तिहाइ जनताको जीविकोपार्जनको माध्यम कृषि रहेको छ । तराईका जिल्लाहरु धान, गहुँ, दलहन तथा तेलहन जस्ता प्रमुख खाद्यान्नवाली र पहाडी जिल्लाहरु तरकारी तथा फलफुल खेतीका लागि उपयुक्त रहेको छ । कफि, कपास र उखु यस प्रदेशका प्रमुख नगदेवाली हो भने मौरीपालन, माछापालन, बाख्रापालन यहाँको अर्को आर्थिक संभावना बोकेको क्षेत्र देखिएको छ । यो प्रदेशमा खाद्यान्न र तरकारीमा आत्मनिर्भर भई बचत समेत गर्नसक्ने यस प्रदेशमा फलफुल तथा खानेतेलको माग धान्न आन्तरिक उत्पादनले पुगिरहेको छैन ।

जनसंख्या तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण सन् २०१६ का अनुसार यस प्रदेशमा ४८.४ प्रतिशत घरपरिवारमात्र पुर्ण रुपमा खाद्य सुरक्षामा रहेका छन् भने १०.२ प्रतिशत घरपरिवार गम्भिर खाद्य असुरक्षामा रहेको पाइएको छ । दिगो विकासको लक्ष्यका रुपमा सन् २०३० सम्ममा कृषिको दिगोपना सहित पुर्ण खाद्य सुरक्षा र पोषण उपलब्ध गराई भोकको अन्त्यका लागि समेत कृषि क्षेत्रको विकास हुनु जरुरी छ । र सोही अनुरूप कृषि क्षेत्रको उत्पादकत्व र किसानहरुको आमदानी बढाउनु आवश्यक रहेको छ । यिनै कुराहरुलाई मध्येनजर गर्दा यस प्रदेशमा कृषि क्षेत्रमा रहेका मुख्य सम्भावना तथा चुनौतिहरु निम्नानुसार रहेका छन् ।

सम्भावनाहरु

- यो प्रदेश भौगोलिक विविधताले भरिपूर्ण तथा उपयुक्त हावापानी भएको, प्रदेशमा बसोवास गर्ने अधिकांश जनसंख्या कृषिमा आश्रित रहेको, तराई देखि उच्च पहाडसम्म विभिन्न फरक प्रकृतिका कृषि उपज/वाली/वस्तु उत्पादन गर्न सक्ने वातावरण रहेको र सरकारले सहूलियत ब्याजदरमा कृषि

ऋण/कर्जाको व्यवस्था गरेको कारणबाट समेत कृषि विकासमा व्यवसायिकीकरण, यान्त्रिकीकरण, औद्योगिकीकरण तथा विविधिकरणको प्रचुर सम्भावना रहेको ।

- नेपालको संविधानले कृषि र भूमि सुधार सम्बन्धी नीतिको व्यवस्था गरिनुको साथै कृषि सम्बन्धी व्यवस्थालाई संविधानको अनुसूचिहरूमा संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको अधिकार स्पष्ट गर्नुका कारण तिनै तहको सरकारबाट कृषिको थप सम्भावना रहेको कारणले कृषि क्षेत्रमा महत्व थपिएको ।
- तिन वटै तहका सरकारबाट कृषि क्षेत्रलाई मर्यादित, व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकासमा सहयोग पुग्ने उद्देश्यले विभिन्न अनुदान तथा सहयोग उपलब्ध भइरहेको कारण थप लगानीकर्ताहरू आकर्षक हुने सम्भावना रहेको ।
- लुम्बिनी प्रदेश देशको केन्द्रमा अवस्थित रहेको, देशकै सबैभन्दा अत्याधुनिक कृषि थोक बजार निर्माणको आयोजना यसै प्रदेशमा सञ्चालन गर्नका लागि स्वीकृत भएको र गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल सञ्चालमा रहेको कारण कृषि बजारीकरणमा सहजता हुनुको साथै कृषि उपज निर्यात समेतको सम्भावना रहेको ।
- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले वनसँग सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम सञ्चालन गरेर वन क्षेत्रको डढेलो नियन्त्रण तथा वन अतिक्रमण र चोरी निकासी नियन्त्रण तथा वन तथा वन्यजन्तु संरक्षण जस्ता कार्यक्रम ल्याइने घोषणा गरेकोले यस प्रदेशको वन क्षेत्रमा थप सम्भावना रहेको देखिन्छ ।
- यस प्रदेशका कतिपय जिल्लाहरू जस्तै : रोल्पा, प्युठान, गुल्मी, अर्घाखाँची, पाल्पा लगायतका पहाडी जिल्लाहरूमा जडीबुटी, तरकारीखेती, पशुजन्य उत्पादनको प्रचुर सम्भावना रहेको छ भने प्रदेशका तराईका जिल्लाहरू जस्तै : रुपन्देही, कपिलवस्तु, दाङ, बाँके, बर्दिया लगायतका जिल्लाहरूमा धान, गहुँ तथा मकै खेतिको सम्भावना रहेको छ ।
- संघिय सरकारले बाली तथा पशु विमाको प्रिमियममा ८० प्रतिशत र बाँके २० प्रतिशत लुम्बिनी प्रदेश सरकारले अनुदान गरि शतप्रतिशत अनुदानको व्यवस्थाले कृषि क्षेत्रमा युवा तथा व्यवसायिक कृषकको आकर्षण बढ्ने सम्भावना रहेको ।
- यस प्रदेशका विभिन्न जिल्लाहरूमा जडीबुटी, तरकारी खेती, बाखा पालन, भेडा पालन, तोरी खेती, मकै खेती, भैँस पालन, अदुवा/बेसार खेति, सुन्तला खेती, मौरी पालन, माछा पालन, केरा खेती, धान खेती, कफि खेती लगायतका बस्तुहरूको प्रचुर सम्भावना रहेको ।

चुनौतीहरू

- कृषि क्षेत्रमा संस्थागत लगानी मार्फत परम्परागत निर्वाहमुखी खेती प्रणालीलाई रुपान्तरण तथा आधुनिकीकरण गरि व्यवसायीकरण बनाउने ।
- मल, बीउ, बेर्ना, विषादी तथा मेशिनरी इत्यादि जस्ता कृषि उत्पादन सामग्रीको भरपर्दो स्रोत सुनिश्चित गर्ने ।
- खेतियोग्य जमिनको चक्काबन्दी गरी सामुहिक खेती प्रयोगमा ल्याउन र यान्त्रिकीकरण गर्न तथा खेती योग्य जमिनमा भइरहेको घरजग्गा प्लटिङ कार्य बन्द गर्ने ।
- वैज्ञानिक भु-उपयोग नीति तर्जुमा तथा कार्यन्वयन गर्ने ।
- कृषिमा सहूलियत ऋणको सहज तथा सुलभ व्यवस्था सुनिश्चित गर्ने एवं सो को उचित सूचना प्रवाह गरी लक्ष्यित वर्गमा सो को जानकारी गराउने ।
- दक्ष जनशक्तिहरूलाई विदेश पलायन हुनबाट रोकी कृषि मै आकर्षित गर्ने
- माटो सुहाउदो एवं जलवायु परिवर्तन अनुकुलन प्रविधि विकास तथा विस्तार गरी कृषिको प्रतिस्पर्धी क्षमता बढाउने ।
- कृषि विकासको विषय एकलै नभई सिँचाइ, वन, वातावरण, सडक, बजार, विद्युत, उद्योग, एवं जनसंख्याको वितरण, , आदि जस्ता विभिन्न विषयका मिश्रित कुराहरूले प्रभाव पार्ने भएकोले सबै क्षेत्रलाई एकीकृत एवं समन्वयात्मक रूपले एकैसाथ अगाडि बढाउने कार्य ।

- सिँचाई सुविधा बर्षेभरी उपलब्ध गराउने ।
- कृषि, पशुजन्य एवं विभिन्न उत्पादनहरूसँग सम्बन्धित सरोकारवाला व्यवसायिक कृषक, समूह, कृषि सहकारी, गैरसरकारी संघसंस्थाहरूसँगको समन्वय तथा उपलब्ध हुन सक्ने प्राविधिक सम्भाव्यताको आधारमा कार्यक्रमहरुको छनौट, कार्यान्वयन र प्रवर्द्धन गर्ने कार्य ।
- आधुनिक एवं व्यवसायिक कृषिको लागी देशभित्र प्रर्याप्त मात्रामा प्राविधिक ज्ञान तथा कृषिविज्ञहरु उपलब्ध गराउने कार्य ।

परिच्छेद ४ औद्योगिक क्षेत्र

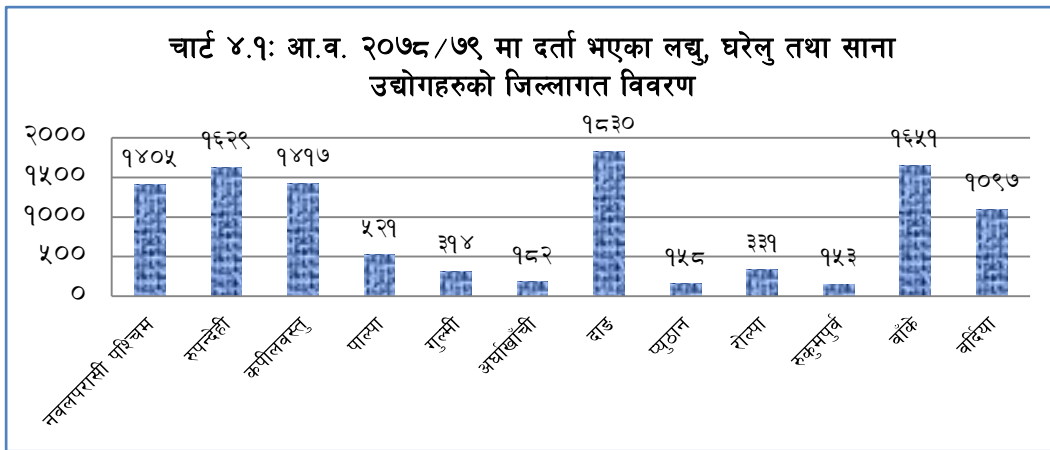
लुम्बिनी प्रदेशको रुपन्देहीमा बुटवल औद्योगिक क्षेत्र र बाँकेमा नेपालगञ्ज औद्योगिक क्षेत्र गरी २ वटा औद्योगिक क्षेत्रहरु सञ्चालनमा रहेका छन् । बुटवल औद्योगिक क्षेत्रमा ७२ वटा र नेपालगञ्ज औद्योगिक क्षेत्रमा ३५ वटा गरि जम्मा १०७ वटा उद्योगहरु सञ्चालनमा रहेका छन् । भारतबाट कम लागत र सहज रुपमा कच्चा पदार्थ आयात गर्न सकिने, औद्योगिक कामदारहरुको सहज उपलब्धता, उपयुक्त औद्योगिक वातावरण हुनुले पछिल्लो समय लुम्बिनी प्रदेशका रुपन्देही, नवलपरासी(पश्चिम), कपिलवस्तु, बाँके लगायतका जिल्लाहरु औद्योगिक हवको रुपमा अगाडि बढी रहेका छन् । रुपन्देहीको भैरहवा स्थित विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)मा पछिल्लो समय पूर्ण क्षमतामा सञ्चालनका लागि कार्य अगाडी बढीरहेकोले आगामी दिनहरुमा थप उद्योगहरु स्थापना भई उत्पादन र रोजगारी समेतमा वृद्धि हुने देखिन्छ । यस प्रदेशमा थप औद्योगिक क्षेत्र स्थापना गर्ने उदेश्यले रुपन्देहीको मोतीपुर औद्योगिक क्षेत्र र बाँकेको नौवस्ता औद्योगिक क्षेत्रको जग्गा प्राप्ती तथा निर्माण कार्य अगाडि बढी रहेको कारण पछिल्लो समय यो प्रदेश औद्योगिक हवको रुपमा अगाडि बढ्ने क्रममा रहेको छ ।

उद्योग विभागबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार आ.व. २०७८/७९ सम्ममा लुम्बिनी प्रदेशमा कुल ७०९ वटा उद्योगहरु दर्ता भई रु. २ खर्ब ७३ अर्ब २३ करोड लगानी भएका देखिन्छ भने ७१,४७१ जनालाई रोजगारी प्रदान गरेको देखिएको छ । जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा सबैभन्दा धेरै २६७ वटा रुपन्देहीमा र सबैभन्दा कम प्युठान र रोल्पा ३/३ वटा मात्र उद्योगहरु दर्ता भएको देखिन्छ भने नवलपरासीमा १७७, बाँकेमा १०३, कपिलवस्तुमा ५८, दाङ्गमा ४५, बर्दियामा २६, पाल्पामा १२, गुल्मीमा ६, रुकुममा ५ र अर्घाखाँचीमा ४ उद्योगहरु दर्ता भएको देखिन्छ (तालिका ४.१) ।

| तालिका ४.१: लुम्बिनी प्रदेशमा २०७९ असार मसान्तसम्ममा दर्ता भएका उद्योगको विवरण | | | | | | | |
|--|---------------|------------------------|--------------|---------|---------------|------------------------|---------|
| जिल्ला | उद्योग संख्या | कुल पुँजी (रु. दश लाख) | रोजगारी | जिल्ला | उद्योग संख्या | कुल पुँजी (रु. दश लाख) | रोजगारी |
| नवलपरासी | १७७ | ९५२२८.२० | १७४७० | दाङ | ४५ | ३३२३२.९८ | ६१२१ |
| रुपन्देही | २६७ | ५९९१७.८२ | २४६२१ | प्युठान | ३ | ५४०.०० | २३२ |
| कपिलवस्तु | ५८ | ३७५७८.५९ | ६८०४ | रोल्पा | ३ | १०२२.७९ | ४०६६ |
| पाल्पा | १२ | ३०५१.३३ | ७७७ | रुकुम | ५ | ६११०.४४ | ३३४ |
| गुल्मी | ६ | २०५९.८३ | ११९ | बाँके | १०३ | २१९९९.१४ | ८८८० |
| अर्घाखाँची | ४ | ४७९६.०८ | ३९२ | बर्दिया | २६ | ७७७२.७३ | १६५५ |
| जम्मा | ७०९ | २७३२२९.९३ | ७१४७१ | | | | |

स्रोत : उद्योग विभाग (नवलपरासी अन्तर्गत नवलपरासी पूर्व र नवलपरासी पश्चिम जिल्लाहरु समावेश छन् भने रुकुम अन्तर्गत पश्चिम र पूर्वि रुकुम समावेश गरिएका छन्)

उद्योग विभागबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार आ.व. २०७८/७९ मा लुम्बिनी प्रदेशमा कुल १०६८८ वटा लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरु दर्ता भई रु. २९ अर्ब ६० करोड ७९ लाख लगानी र ४०५२४ जनालाई रोजगारी प्रदान भएको छ भने १०१५३ जना उद्यमी रहेको देखिन्छ । जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा सबैभन्दा धेरै १८३० वटा दाङ्ग र सबैभन्दा कम रुकुम पूर्वमा १५८ वटा मात्र लघु, घरेलु तथा साना उद्योगहरु दर्ता भएको देखिन्छ (चार्ट: ४.१) ।

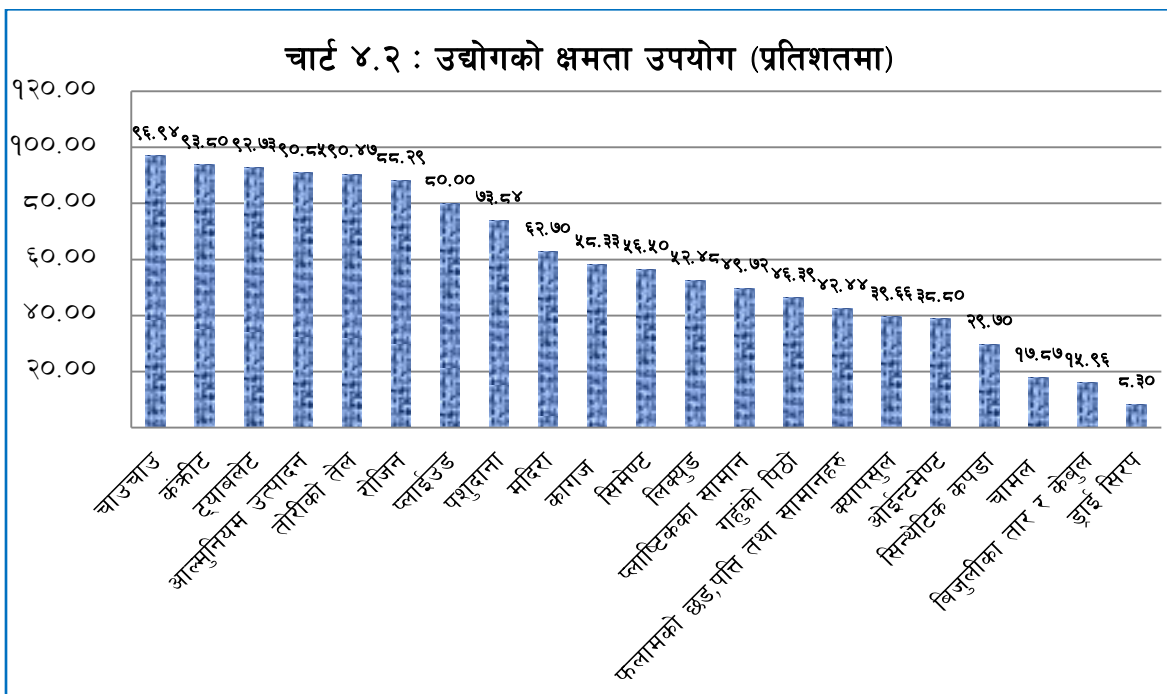


स्रोत : अध्ययनमा समेटिएका उद्योगहरू

४.१ उद्योगको क्षमता उपयोग, उत्पादन र रोजगारी

क्षमता उपयोग

समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशका नमुना छनौटमा समेटिएका उद्योगहरूको औसत क्षमता उपयोग ५८.३७ प्रतिशत रहेको छ । गत अवधिमा यस्ता उद्योगको औसत क्षमता उपयोग ६२.९१ प्रतिशत रहेको थियो । विपेशगरी, ड्राई सिरप, बिजुलीका तार र केबुल, सिमेन्ट, चामल, सिन्थेटिक कपडा, औषधिजन्य उत्पादन जस्ता वस्तुहरू उत्पादन गर्ने उद्योगको क्षमता उपयोगमा कमी आएकोले गत अवधिको तुलनामा समग्र उद्योगको औषत क्षमता उपयोगमा केही ह्रास आएको छ । अध्ययनमा समेटिएका उद्योगहरू मध्ये सबैभन्दा बढी चाउचाउ उद्योगले ९६.९४ प्रतिशत र सबैभन्दा कम Dry Syrup औषधि उत्पादन गर्ने उद्योगले ८.३० प्रतिशत क्षमता उपयोग गरेको छ । यसैगरि औषत भन्दा बढी क्षमता उपयोग गर्ने उद्योगहरूमा कंक्रीट, ट्याबलेट, आल्मुनियम, तोरीको तेल, रोजिन, प्लाईउड, पशुदाना र मदिरा रहेका छन् (चार्ट : ४.२) ।



स्रोत : अध्ययनमा समेटिएका उद्योगहरू

उद्योगको उत्पादन

यस प्रदेशका अध्ययनमा समेटिएका उद्योगहरूमध्ये यद्यपी Dry Syrup औषधि उत्पादन को मात्रा न्यून भएतापनि समीक्षा वर्षमा सो को उत्पादन गत वर्षको तुलनामा सबैभन्दा धेरै १०७.५० प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने सिन्थेटिक कपडा उत्पादन सबैभन्दा धेरै ४५.४९ प्रतिशतले घटेको छ । प्रतिशतको आधारमा न्यून देखिएतापनि यस प्रदेशको उच्च उत्पादन संभाव्यता भएको सिमेन्टको उत्पादन उल्लेख्य मात्रमा घटेको छ । सो को कारणमा निर्माण एवं पूर्वाधार निर्माणको काम घटेसगै बजारको माग समेत उच्च दरमा घटेको जनाईएको छ । बजार माग वृद्धि हुनुको साथै उद्योगमा नयाँ प्लान्ट थप भएका कारण Dry Syrup लगायतका अन्य औषधिजन्य उत्पादनमा उल्लेख्य वृद्धि देखिएको छ । बजारको मागमा कमी आउनु र अन्तराष्ट्रिय बजारमा कच्चा पदार्थहरूको मुल्य वृद्धिका कारण सिन्थेटिक कपडाको उत्पादनमा कमि आएको छ । त्यसैगरि, प्रमुख औद्योगिक उत्पादनहरू मध्ये कागज उत्पादन ४८.३१ प्रतिशत, रोजिन उत्पादन ३८.८४ प्रतिशत, Tablet ३९.१० प्रतिशत Capsule उत्पादन ४२.३४ प्रतिशत र Liquid उत्पादन ४५.७७ प्रतिशत, गहुँको पिठो १८.४८ प्रतिशत, विजुलीका तार र केबुल १८ प्रतिशतले बढेको छ भने चामल उत्पादन २२.०९ प्रतिशत, प्लाष्टिकका सामान उत्पादन १२.९८ प्रतिशत, Ointment उत्पादन १८.२८ प्रतिशत र कंक्रीट उत्पादन ९.०३ प्रतिशत, मदिरा उत्पादन ५.०२ प्रतिशतले घटेको छ (तालिका ४.२) ।

| तालिका ४.२: समीक्षा अवधिमा औद्योगिक उत्पादनको अवस्था | | | | | | | |
|--|-------|---------|------------------|--------------|------------|---------|------------------|
| वस्तुको नाम | एकाइ | उत्पादन | प्रतिशत परिवर्तन | वस्तुको नाम | एकाइ | उत्पादन | प्रतिशत परिवर्तन |
| तोरीको तेल | मे.टन | ५४२८ | ०.१७ | चाउचाउ | मे.टन | ८८२१.३ | ३.२८ |
| चामल | मे.टन | १९५६.८१ | -२२.०९ | मदिरा | ह.लिटर | १९९६३ | -५.०२ |
| कागज | मे.टन | २८०० | ४८.३१ | सिन्थेटिक क. | ह.मिटर | १०३९४ | -४५.४९ |
| सिमेन्ट | मे.टन | ११५०८८९ | -१.१ | प्लाईउड | ह.क्यु.फिट | १५६८६ | ०.३२ |
| विजुलीका तार/केबुल | मे.टन | ६४४.९४ | १८ | आल्मिनियम | ह.थान | ३६३.४ | -४.८२ |
| कंक्रीट | मे.टन | ८४४२४० | -९.०३ | Tablet | ह.थान | ४५९०३७ | ३९.१ |
| फलामको छड/पत्ति | मे.टन | १४००५० | -३.०८ | Capsule | ह.थान | २६७६८ | ४२.३४ |
| रोजिन | मे.टन | २६४८.८ | ३८.८४ | Ointment | ह.टयुब | ८९२.३५ | -१८.२८ |
| गहुँको पिठो | मे.टन | ४४८०९.५ | १८.४८ | Dry Syrup | ह.बोतल | १६६ | १०७.५ |
| प्लाष्टिकका सामान | मे.टन | ९५७०.९३ | -१२.९८ | Liquid | ह.बोतल | १३११.९ | ४५.७७ |
| पशुदाना | मे.टन | २१२६५ | ४.९१ | | | | |

स्रोत : अध्ययनमा समेटिएका उद्योगहरू

औद्योगिक रोजगारी

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशमा छनौटमा परेका उद्योगहरूमा महिला ५५५ जना र पुरुष ४११६ जना गरि जम्मा ४६९६ जनाले प्रत्यक्ष रोजगारी प्राप्त गरेको देखिन्छ ।

बक्स ४: विशेष आर्थिक क्षेत्र, भैरहवा (Special Economic Zone, SEZ)

औद्योगिक पूर्वाधार निर्माण गरी स्वदेशी कच्चा पदार्थमा आधारित निर्यात व्यापार वृद्धि गर्ने मुख्य उद्देश्यका साथ मिति २०६०/१०/१५ मा सेजको अवधारणा ल्याईएको हो । वि. सं २०६९ सालमा विकास समिति ऐन, २०१३ अनुसार गठन आदेश जारी गरी “विशेष आर्थिक क्षेत्र विकास समिति” गठन भएको थियो । मिति २०७३/०६/१८ मा विशेष आर्थिक क्षेत्र ऐन, २०७३ जारी भई सोही ऐनको दफा १४ बमोजिम विशेष आर्थिक क्षेत्र प्राधिकरण (Special Economic Zone Authority, SEZA) को रूपमा संगठित, स्थापित र सञ्चालित छ । हाल, नेपाल सरकारले “एक प्रदेश, एक सेज” को नीति लिएको छ ।

बक्स ४: विशेष आर्थिक क्षेत्र, भैरहवा (Special Economic Zone, SEZ) क्रमशः

लुम्बिनी प्रदेशको भैरहवामा मिति २०७१ मंसिर २ मा ५२ विघा क्षेत्रफलमा आवश्यक औद्योगिक पूर्वाधारका साथ ६८ वटा प्लटको सेज स्थापना गरिएको छ। हाल, २२ वटा प्लटहरूमा ७ वटा उद्योगहरू सञ्चालन रहेका छन् भने बाँकी प्लटहरूमा ३३ उद्योगहरूले अनुमति लिई सञ्चालनको तयारी गर्ने क्रममा रहेका छन्। यस सेजमा अनुमति लिएका उद्योग को अभिलेखका आधारमा रु. १० अर्ब बराबरको लगानी हुने र १० हजार रोजगारी सिर्जना हुने अनुमान रहेको छ। सेजमा सञ्चालित उद्योगहरूमा २५ महिला र १५० पुरुष गरी १७५ स्वदेशी र ८० विदेशी पुरुष गरी कुल २५५ जनाले रोजगारी पाएका छन्। यसप्रकार विशेष उद्देश्यका साथ विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापना भएतापनि सो हालसम्म पनि पूर्ण क्षमतामा सञ्चालनमा नरहेको देखिन्छ र सेज पूर्ण क्षमतामा सञ्चालन भएमा रोजगारीको अवसर वृद्धि हुनेछ।

समस्या र चुनौतीहरू

- एकै स्थानबाट सेवा प्रवाह गर्न एकद्वार इकाई स्थापना गरी एकिकृत सेवा दिने ऐनमा व्यवस्था भएतापनि सरोकारवाला निकायहरू बिच समन्वय नभएका कारण एकद्वार इकाई गठन गर्ने कार्य।
- ऐनमा भएका बहाल कर, दस्तुर, शुल्क र महसुल लगायत आन्तरिक बिक्री र निर्यात परिमाणको सीमा लगायतका विषयमा उद्योगीहरूको गुनासो सम्बोधन गर्ने कार्य।
- बाहिर सञ्चालनमा रहेका उद्योगहरू सेजमा स्थानान्तरण गर्ने कार्य।
- सेजमा स्थापित उद्योगहरूले उत्पादनको ६० प्रतिशत अनिवार्य निर्यात गर्नुपर्ने प्रावधान रहेको छ। उद्योगहरूले बजारको खोजी, प्रतिस्पर्धा, तुलानात्मक लाभ तथा गन्तव्य मुलुकको नीति परिवर्तनका कारण निर्यात गर्ने कार्य।

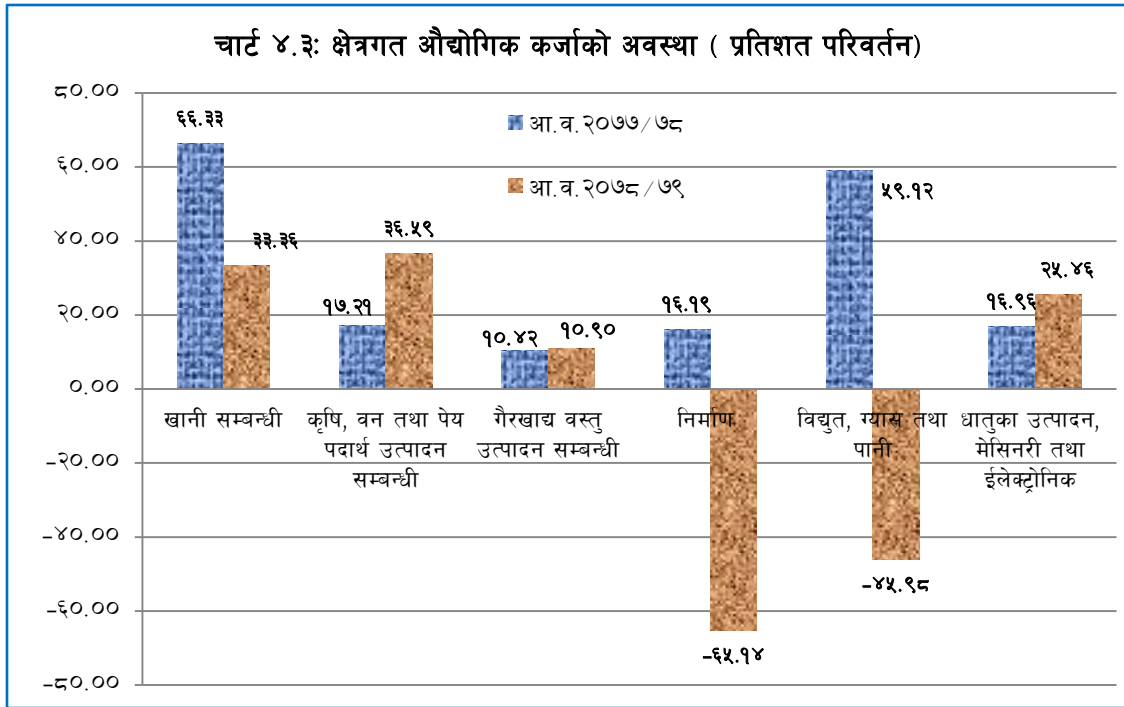
आयोजनाले आसपासमा क्षेत्रमा पारेको प्रभावहरू

- उद्योगहरूमा नियमित कार्य हुने हुँदा स्थानीयहरूले रोजगारीको अवसर पाएका छन्। उनीहरूको समृद्धिमा टेवा पुगेको छ।
- कतिपय उद्योगहरूमा वैदेशिक लगानी पनि भित्रिएको छ भने ६० प्रतिशत उत्पादन निर्यातका कारण विदेशी मुद्रा समेतमा सहयोग पुगेको छ।
- ध्वनी लगायतका प्रदुषण प्रभाव थोरै परेको छ। उद्योगहरूले यसलाई थप न्युनीकरण गर्ने उपायका प्रयास गरिरहेका छन्।
- कामदार तथा कर्मचारीहरूलाई उद्योग सम्बन्धी प्रविधि र सीपको क्षमता अभिवृद्धि भैरहेको।

(स्रोत: विशेष आर्थिक क्षेत्र, भैरहवा)

४.२ क्षेत्रगत औद्योगिक कर्जा

समीक्षा अवधिमा लुम्बिनी प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाले औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह गरेको कर्जा गत अवधिको तुलनामा ४.४९ प्रतिशतले घटेर रु.१ खर्ब १९ अर्ब १९ करोड १५ लाख पुगेको छ। गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो कर्जा १४.९३ प्रतिशतले बढेको थियो। समीक्षा वर्षमा कुल औद्योगिक कर्जामध्ये खानी सम्बन्धी उद्योगमा ३३.३६ प्रतिशत, कृषि, वन तथा पेय पदार्थ सम्बन्धी उद्योगमा ३६.५९ प्रतिशत, गैरखाद्य वस्तु उत्पादन सम्बन्धी उद्योगमा १०.९० प्रतिशत र धातुका उत्पादन मेशिनरी तथा इलेक्ट्रोनिक्स सम्बन्धी उद्योगमा २५.४६ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने निर्माण सम्बन्धी उद्योगमा ६५.१४ प्रतिशत, विद्युत, ग्याँस तथा पानी सम्बन्धी उद्योगमा ४५.९८ प्रतिशतले ह्रास आएको छ। यस प्रदेशमा प्रवाह भएको कुल कर्जामा औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाहित कर्जाको अंश १६.८३ प्रतिशत रहेको छ (चार्ट ४.३)।



स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु

यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाले औद्योगिक क्षेत्रमा प्रवाह गरेको औद्योगिक कर्जामा खानी सम्बन्धी उद्योगको ०.९६ प्रतिशत, कृषि, वन तथा पेय पदार्थ सम्बन्धी उद्योगको ३५.८७ प्रतिशत, गैर-खाद्य वस्तु उत्पादन सम्बन्धी उद्योगको ४४.४२ प्रतिशत, निर्माण सम्बन्धी उद्योगको १०.५० प्रतिशत, विद्युत ग्यास तथा पानी सम्बन्धी उद्योगको ०.९३ प्रतिशत र धातुका उत्पादन मेसिनरी तथा इलेक्ट्रोनिक सम्बन्धी उद्योगको ७.३२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ ।

यस प्रदेशमा प्रवाहित कुल औद्योगिक कर्जामा जिल्लागत विश्लेषण गर्दा सबैभन्दा धेरै रुपन्देही जिल्लाको ६१.८३ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको सबैभन्दा कम ०.०४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसैगरी, कुल औद्योगिक कर्जामा बाँकेको १६.२२ प्रतिशत, दाङको ५.९९ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ५.६६ प्रतिशत, नवलपरासी पश्चिमको ५.७५ प्रतिशत, बर्दियाको १.६२ प्रतिशत, पाल्पाको १.०३ प्रतिशत, गुल्मीको ०.७३ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ०.२९ प्रतिशत, प्यूठानको ०.४४ प्रतिशत र रोल्पाको ०.४२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ४.३) ।

तालिका ४.३: कुल औद्योगिक कर्जामा जिल्लागत हिस्सा (प्रतिशत)

| जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा | जिल्ला | हिस्सा |
|-------------|--------|-------------|--------|-----------|--------|
| रुकुम पूर्व | ०.०४ | अर्घाखाँची | ०.२९ | कपिलवस्तु | ५.६६ |
| रोल्पा | ०.४२ | पाल्पा | १.०३ | दाङ | ५.९९ |
| प्यूठान | ०.४४ | नवलपरासी प. | ५.७५ | बाँके | १६.२२ |
| गुल्मी | ०.७३ | रुपन्देही | ६१.८३ | बर्दिया | १.६२ |

स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु

बक्स ५: मोतिपुर औद्योगिक क्षेत्र

नेपाल सरकारले २०७२ साल चैत्र १ गते लुम्बिनी प्रदेश रुपन्देही जिल्लाको साविक बुटवल नगरपालिका, टिकुलिगढ गा.वि.स., आनन्दवन गा.वि.स. र फर्साटिकर गा.वि.स. का केहि भाग (हाल बुटवल उप महानगरपालिका, तिलोत्तमा नगरपालिका, सुद्धोधन गाँउपालिका) चार किल्ला तोकि ८१३ बिगाहामा मोतिपुर औद्योगिक क्षेत्र घोषणा गरेको थियो । सरकारको निर्णयअनुसारे सुविधासम्पन्न औद्योगिक क्षेत्र स्थापना गर्न चार किल्ला तोकि घोषणा भएका जग्गाहरूको नाप जाँच र सिमा छुट्याई क्षेत्रफल यकिन गर्ने कार्य भूमि सुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालयले गर्ने गरि तोकि त्यहाँ भएको सम्पूर्ण जग्गाको स्वामित्व औद्योगिक क्षेत्र व्यवस्थापन लिमिटेडको नाममा रहने व्यवस्था गरिएको ।

यस औद्योगिक क्षेत्रको विस्तृत अध्ययन प्रतिवेदन (DPR) अनुसार कुल लागत रकम रु. १२ अर्ब लाग्ने अनुमान रहेको । यस क्षेत्रमा कुल २६२ वटा प्लटहरू रहने जसमा विदेशी लगानीका उद्योग स्थापनाका लागी अलग अलग प्लटको व्यवस्था गरिएको छ । जसमा साना उद्योगको लागि ९२ वटा प्लट, मझौला उद्योगको लागि ५१ वटा प्लट तथा ठुला उद्योगको लागि ११९ वटा प्लटको व्यवस्था गरिएको छ । विस्तृत अध्ययन प्रतिवेदन बमोजिम उद्योगहरूको क्लस्टर बमोजिम प्लट छुट्याइएको र स्थानिय कच्चापदार्थमा आधारित उद्योगलाई विशेष ग्राह्यता दिने व्यवस्था रहेको । नेपाल सरकारको **One Stop Service Center** नीतिको आधारमा यस औद्योगिक क्षेत्र भित्र उद्योग दर्ता, भन्सार तथा कर कार्यालय स्थापना गर्न मिल्ने गरी पूर्वाधार डिजाईन भएको ।

बहुवर्षीय आयोजना घोषणा तथा बजेटको सुनिश्चितताको लागि प्रस्ताव पेश भएको र निर्माण लगानीको आधार सार्वजनिक-निजि-साभेदारी वा विदेशी लगानी वा विदेशी अनुदान वा अन्तराष्ट्रिय वित्तीय संस्था मार्फत श्रोत व्यवस्थापन र स्वदेशी लगानी कर्ता मार्फत आयोजनाको विकास हुने । यस क्षेत्रमा स्थापना हुने उद्योगहरूको लागि चाहिने न्युनतम पूर्वाधारहरूको व्यवस्थापन गरी औद्योगिक क्षेत्र र उद्योगीहरूले सँग सँगै आ-आफ्नो पूर्वाधारको निर्माण कार्यको थालनी गरि २ वर्ष भित्र सम्पन्न पश्चात उद्योग संचालमा ल्याउने र ५ वर्ष भित्रमा औद्योगिक क्षेत्र व्यवस्थापन लिमिटेडले सम्पूर्ण पूर्वाधार निर्माण सम्पन्न गरि सक्ने लक्ष्य रहेको । औद्योगिक क्षेत्रमा उद्योगहरूलाई आकर्षण र प्रवर्द्धन गर्नको लागी न्युनतम ५ वर्षको लागी जग्गाको भाडामा पूर्ण छुट र १० वर्ष पछि बाट मात्र भाडादर कायम हुने व्यवस्था गरिएको छ ।

औद्योगिक क्षेत्रभित्र हुने पूर्वाधार र सोको मापदण्डमा २ लेनको मुख्य सडक रहने छ भने २ लेनको सहायक सडक रहने छ । साथै साइकल लेनको पनि व्यवस्था गरिएको छ र सडकको दुवै तर्फ २.५ मिटरको पैदल यात्रु लेन रहने छ । वर्षा र ढलको पानीको व्यवस्थापन गर्न निकासका लागि बेग्लै ड्रेनको व्यवस्था गरिने र २४ सै घण्टा पानीको आपूर्ति व्यवस्था मिलाइने उल्लेख भएको छ । ओभरहेड अन्डरग्राउन्ड ट्यांकीको व्यवस्था हुनुका साथै फोहोर पानी प्रशोधन केन्द्रको व्यवस्था समेत हुने छ । यसरी नै ८ फिट अग्लो सिमाना पर्खाल, एकल प्रवेशद्वार र बहिर्गमनको व्यवस्था, सुरक्षाका निमित्त २ सय जना सशस्त्र प्रहरी बल बस्ने व्यवस्था, ४० मेघावाट विद्युतको बेग्लै विद्युत फिडर, उद्योग सघ, बैंक, शिशु स्याहार , एटिएमको सुविधा, डिस्प्ले सेन्टर, स्वास्थ्य क्लिनिकको व्यवस्था पनि उल्लेख गरिएको छ । औद्योगिक क्षेत्र र मानव बस्तीबीचको करिब ३० मिटर क्षेत्रमा वृक्षारोपण गर्न मध्यवर्ति क्षेत्र छुट्याइएको छ भने वातावरण स्वच्छ राख्न उचित व्यवस्था मिलाइनुका साथै टेलिकम्युनिकेशन टावरको व्यवस्था रै एकिकृत भन्सार चेकपोष्टको व्यवस्था पनि हुनेछ । यस आद्योगिक क्षेत्र स्थापना पछि प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष लगभग ५२ हजार रोजगारी पाउने सम्भावना रहेको बताईएको छ ।

(स्रोत : औद्योगिक क्षेत्र व्यवस्थापन लि.को वेभ तथा सोको स्मारिका)

४.३ औद्योगिक क्षेत्रको सम्भावना र चुनौती

सम्भावनाहरू

- लुम्बिनी प्रदेश नेपालको मध्य भागमा अवस्थित हुनु, भारतीय सिमानासँगको नजिकको दुरी, औद्योगिक पूर्वाधारमा लगानी विस्तार, उद्योग मैत्रि वातावरणको निर्माण, नियमित विद्युत आपूर्तिको लागि औद्योगिक

क्षेत्रहरूमा प्रसारण लाइन र सबस्टेसनको विस्तार हुनु लगायतका कारण यस प्रदेशमा औद्योगिक क्षेत्रको विकास र विस्तारको सम्भावना रहेको छ ।

- विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) मा नयाँ उद्योगहरू स्थापना हुने प्रक्रियामा रहेको, रुपन्देहीको मोतिपुर र बाँकेको नौवस्तामा नयाँ औद्योगिक क्षेत्र निर्माण हुने क्रममा रहेकाले यस प्रदेशमा औद्योगिक क्षेत्रको थप सम्भावना रहेको छ ।
- यस प्रदेशमा कृषि, सिमेन्ट तथा खानी, स्टिलजन्य तथा खाद्य प्रशोधन उद्योगहरूको उच्च सम्भावना रहेको ।
- यस प्रदेशका तराईका जिल्लाहरूमा बढ्दो जनघनत्व तथा शहरीकरण कारण औद्योगिक उत्पादनहरूको खपत विस्तार हुने ।
- बेलहिया तथा नेपालगञ्ज भन्सार कार्यालयमा एकिकृत भन्सार कार्यालय निर्माण कार्य भैरहेको र सीमानाकासम्म सहज पहुँच रहेको कारण औद्योगिक कच्चा पदार्थ आयात तथा तयारी वस्तु निर्यातमा सहजता हुनुको साथै सो बाट थप रोजगारीको अवसर समेत सृजना हुने सम्भावना रहेको छ ।
- नेपालमा सञ्चालनमा रहेका ६० सिमेन्ट उद्योगहरूमध्ये लुम्बिनी प्रदेशमा मात्र ४५ वटा रहेको र अन्य क्षेत्रको तुलनामा खानीजन्य उद्योगको रोयल्टी कम रहेको साथै अर्घाखाँची र पाल्पा जिल्लामा प्रशस्त मात्रामा चुन ढुङ्गा खानी रहेको कारण क्लिंकर तथा सिमेन्टको उत्पादन र निर्यात थप बढ्न सक्ने तथा यस्ता उद्योगले आयात प्रतिस्थापन गर्न सक्ने सम्भावना रहेको छ ।
- यस प्रदेशमा सम्भावना बोकेका औषधिजन्य जिडबुटि, मह तथा रोजिन एण्ड टर्पेन्टाइन लगायतका प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भएका वस्तुहरूको उत्पादनलाई प्रशोधन गरी निर्यात गर्ने सम्भावना रहेको छ ।
- यस प्रदेशमा बैंक तथा वित्तिय संस्थाहरूको उपस्थिती राम्रो रहेको कारणले उद्योगहरूमा लगानी सहजता एवं वित्तिय विस्तार हुने सम्भावना रहेको ।

चुनौतीहरू

- पछिल्लोसमय बैंक तथा वित्तिय संस्थाबाट पर्याप्त ऋण लगानि हुन नसक्नु, कर्जाको ब्याजदरमा वृद्धि हुनु, तरलता न्यूनता जस्ता कारणहरूले नयाँ उद्योग स्थापनाका लागि थप लगानी गर्ने कार्य ।
- भारतसँग खुल्ला सिमानाका कारण चोरि/पैठारीबाट भित्रिएका वस्तुहरूसँग प्रतिस्पर्धा गर्ने कार्य ।
- यस प्रदेशका औद्योगिक क्षेत्रहरूमा पर्याप्त पुर्वाधार निर्माण र उद्योगमैत्री वातावरण सिर्जना गरी उद्योगहरूलाई पूर्ण क्षमतामा संचालन तथा टिकाई राख्ने कार्य ।
- यस प्रदेशमा कृषी उत्पादनको प्रचुर सम्भावना रहेतापनि कृषि उत्पादनलाई उद्योगसँग जोड्ने र उद्योगसम्म सडक, बिद्युत लगायतका औद्योगिक पुर्वाधारहरूको सहज उपलब्धता गराउने कार्य ।
- तत्काल अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा पेट्रोलियम पदार्थ र कच्चा पदार्थमा भएको मूल्य वृद्धिका कारण बढ्दो उत्पादन लागतले औद्योगिक उत्पादनहरूको उपयुक्त मुल्य कायम गर्ने र आयातीत वस्तुहरूसँग प्रतिस्पर्धा गर्ने कार्य ।
- बजारमा वस्तु तथा सेवाको लागतमा वृद्धि भई घट्दो मागका कारण उद्योगहरूलाई पूर्ण क्षमतामा संचालन गर्ने कार्य ।

परिच्छेद ५ सेवा क्षेत्र

५.१ पर्यटन

कोभिड-१९ को असहज परिस्थितिका कारण मारमा परेको यस प्रदेशको पर्यटन क्षेत्र क्रमिक रूपमा सुधारोन्मुख दिशातिर अगाडि बढिरहेको छ । होटलहरूको निर्माण कार्य बढेसगै शैया संख्याको वृद्धि तथा पर्यटकहरूको आवागमनको अवस्था पनि विगतका वर्षहरूको तुलनामा सुधार हुँदै गएको देखिन्छ ।

| तालिका ५.१: पर्यटक आगमन, रोजगारी तथाहोटल अकुपेन्सी दरको अवस्था | | | | | |
|--|------------------------------|------------------------------|------------------------------|------------------|-------------|
| विवरण | दुई वर्ष अघि | गतअवधि | समीक्षाअवधि | प्रतिशत परिवर्तन | |
| | आ.ब.२०७६/०७७ (साउन- असार) | आ.ब.२०७७/०७८ (साउन- असार) | आ.ब.२०७८/०७९ (साउन- असार) | गत अवधि | समीक्षाअवधि |
| होटल शैयाको संख्या | २९७११० | २९७११० | ३२२२९५ | ० | ८.४८ |
| कोठा/शैया विक्री | १०८७०६ | १२४७६० | १५७१४७ | १४.७७ | २५.९६ |
| प्रत्यक्ष रोजगारी संख्या | ५०२ | ४३३ | ६३९ | -१३.७५ | ४७.५८ |
| (क) पुरुष संख्या | ३९६ | ३२० | ४७५ | -१९.१९ | ४८.४४ |
| (ख) महिला संख्या | १०६ | ११३ | १६४ | ६.६० | ४५.१३ |
| पर्यटक आगमन संख्या | ११८९०७ | १४३१३ | १४६२२ | -८७.९६ | २.१६ |

स्रोत: नमुना छनौटमा परेका होटल एवं अध्यागमन कार्यालय बेलहीया, रुपन्देही तथा होटल एसोसेसन नेपाल, लुम्बिनी प्रदेश

होटल शैया संख्या

अध्ययनमा समेटिएका १० वटा होटलहरू एवं होटल एसोसेसन नेपाल, लुम्बिनी प्रदेशबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा अवधिमा होटल शैया संख्या गत अवधिको तुलनामा ८.४८ प्रतिशतले वृद्धि भई ३ लाख २२ हजार २९५ पुगेको छ, भने गत वर्षको सोही अवधिमा यस्तो संख्या यथावत रही २ लाख ९७ हजार ११० रहेको थियो । यसैगरी समीक्षा वर्षमा कोठा/शैया विक्री संख्या गत अवधिको तुलनामा २५.९६ प्रतिशतले वृद्धि भई १ लाख ५७ हजार १ सय ४७ रहेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा १४.७७ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो (तालिका ५.१) ।

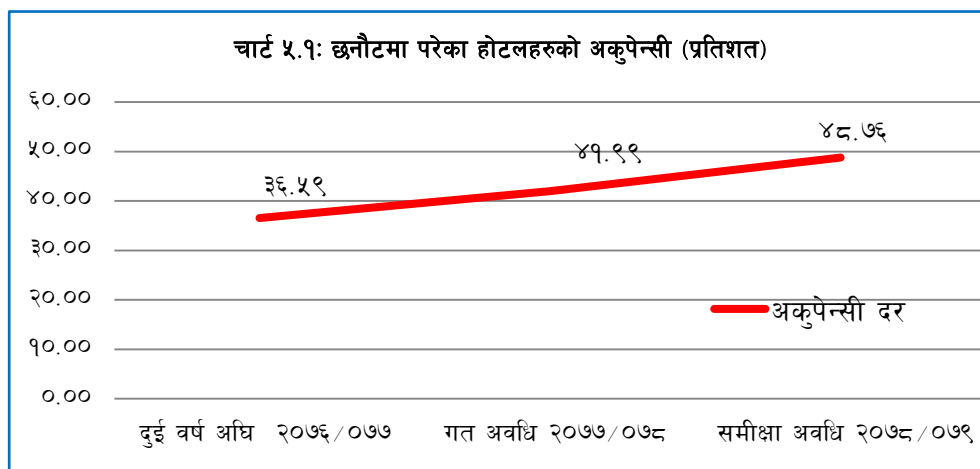
पर्यटन आगमन संख्या

समीक्षा वर्षमा पर्यटक आगमन संख्या गत अवधिको तुलनामा २.१६ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ भने कोभिड-१९ को प्रभावका कारण गत वर्षको सोही अवधिमा ८७.९६ प्रतिशतले ह्रास आएको थियो । गत अवधि देखिनै होटल अकुपेन्सीको पूर्ण तथ्यांक प्राप्त गर्न कठिनाई भैरहेको सन्दर्भमा हाल अध्यागमन कार्यालय बेलहीया, रुपन्देही तथा होटल एसोसिएसन नेपाल लुम्बिनी प्रदेशबाट प्राप्त तथ्याङ्क लाई मिलाउँदा आएको समग्र तथ्यांक वमोजिम समीक्षा वर्षमा भारतबाट आगमन भएका पर्यटक संख्या थोरै मात्रामा वृद्धि भएको तथा कोभिड-१९ पश्चात् पर्यटन क्षेत्रमा परेको प्रभाव विस्तारै सुधार हुन लागेको कारण भारत र तेस्रो मुलुकबाट पर्यटक आगमन संख्यामा क्रमशः सुधार हुँदै गएको देखिन्छ (तालिका ५.१) ।

अकुपेन्सी दर तथा रोजगारी

लुम्बिनी प्रदेश स्थित पर्यटक स्तरीय होटलहरूको अकुपेन्सी दर तथा रोजगारीको अवस्था विश्लेषण गर्न स्थलगत सर्वेक्षण मार्फत पाल्पा जिल्लाबाट १, बाँकेबाट ३ र रुपन्देहीबाट ६ गरी जम्मा १० वटा पर्यटक स्तरीय होटलहरूको स्थलगत सर्वेक्षण एवं होटल एसोसेसन नेपाल, लुम्बिनी प्रदेशबाट तथ्याङ्क संकलन गरिएको छ । छनौटमा परेका १० वटा होटलहरू एवं होटल एसोसेसन नेपाल, लुम्बिनी प्रदेशबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा वर्षमा अकुपेन्सी दर ४८.७६ प्रतिशत रहेको छ भने गत अवधिमा ४१.९९ प्रतिशत रहेको थियो ।

आ.व. २०७६/७७ मा यो दर ३६.५९ प्रतिशत रहेको थियो (चार्ट ६.१) । यस प्रदेशका होटल व्यवसायहरूमा क्रमिक सुधार हुदै गएको र सिमावर्ति जिल्ला रुपन्देहीको बेलहीया नाकावाट भारतीय पर्यटकहरूको आगमन बढ्नुको साथै आन्तरिक पर्यटकहरूको उत्साहजनक आगमनका कारण समिक्षा अवधिमा अकुपेन्सी दर बढ्न गएको हो । यसैगरी, समीक्षा वर्षमा होटलहरूमा प्रत्यक्ष रोजगारी संख्या गत वर्षको तुलनामा ४७.५८ प्रतिशतले वृद्धि भई ६ सय ३९ पुगेको छ । भने गत वर्षमा १३.७५ प्रतिशतले ह्रास भएको थियो (चार्ट ५.१) ।



स्रोत: नमुना छनौटमा परेका होटल एवं अध्यागमन कार्यालय बेलहीया, रुपन्देही तथा होटल एसोसेसन नेपाल, लुम्बिनी प्रदेश

हवाई सेवा

यस प्रदेशको रुपन्देही जिल्ला स्थित गौतमबुद्ध अन्तराष्ट्रिय विमान स्थलले आन्तरिक तथा अन्तराष्ट्रिय हवाई सेवा उपलब्ध गराइरहेको छ । नागरिक उड्डयन प्राधिकरणबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समिक्षा अवधिमा ५ वटा आन्तरिक र एक वटा अन्तराष्ट्रिय गरि जम्मा ६ वटा हवाई सेवा कम्पनिहरूले उडान गरिरहेको देखिन्छ । आन्तरिक उडान तर्फ बुद्ध एयर, यति एयर, सौर्य एयर, श्रीएयर र गुण एयर रहेका छन् भने अन्तराष्ट्रिय तर्फ जजिरा एयर रहेको छ । आन्तरिक हवाई विमानहरूको औसत सिट क्षमता प्रतिदिन ६६.८२ रहेको छ भने अन्तराष्ट्रिय जजिरा हवाई विमानको प्रति दिन १७४ रहेकोमा यस विमानले हप्ताको ३ दिन मात्र सेवा दिइरहेको छ (तालिका ५.२) ।

| तालिका ५.२: हवाई सेवा कम्पनीको सिट क्षमता अवस्था | | | | | |
|--|------------------|------------|-------------------|-------|-----------------------|
| हवाई सेवा | | सिट क्षमता | दैनिक उडान संख्या | जम्मा | सिट हप्सा (प्रतिशतमा) |
| आन्तरिक उडान | बुद्ध एयर | ७२ | ११ | ७९२ | ५३.८८ |
| | | ४६ | २ | ९२ | ६.२६ |
| | यति एयर | ७२ | ३ | २१६ | १४.६९ |
| | सौर्य एयर | ५० | २ | १०० | ६.८० |
| | श्रीएयर | ८० | ३ | २४० | १६.३३ |
| | गुण एयर | ३० | १ | ३० | २.०४ |
| | जम्मा | ३५० | २२ | १४७० | १००.०० |
| औसत सिट क्षमता | | | | | ६६.८२ |
| अन्तराष्ट्रिय उडान | जजिरा | १७४ | ३* | ५२२ | १००.०० |
| | औसत सिट क्षमता | | | | १७४.०० |
| | * साप्ताहिक उडान | | | | |

स्रोत: नागरिक उड्डयन प्राधिकरण

बक्स ६: पर्यटन पुर्वाधार

यस प्रदेशले पुर्वाधार विकास विकासमा विस्तार गर्दै लगेको छ । यसै सन्दर्भमा भैरहवामा सिद्धार्थनगर नगरपालिका मार्फत एकिकृत सहरी विकास कार्यक्रम शुरु गरिएको छ भने बेलहीया-बुटवल सडकको स्तरोन्नती गरिएको छ । त्यसैगरी, सिद्धबावा सुरुडमार्गको निर्माण कार्य अघि बढिरहेको छ भने बुटवलमा दुई वटा केवलकार निर्माणाधीन अवस्थामा रहेको छ । यस प्रदेशको जिल्लाहरूमा विभिन्न पर्यटकिय क्षेत्रहरू जस्तै: कपिलवस्तु जिल्लामा रहेको जगदिशपुर ताल विश्व सिमसार क्षेत्रमा पर्दछ र यो दुर्लभ चराहरूको बासस्थानको रूपमा रहेको छ । यो तालमा विभिन्न खालका चराहरू, उभयचर, माछाहरू र अन्य जलचरहरू पाइन्छ जुन प्राकृतिक र जैविक अनुसन्धानको केन्द्र बन्न सक्छ । अन्य जिल्लाहरूमा पनि साना ठुला तालहरू रहेका छन् जसलाई पर्यटनको केन्द्र बनाउन सकिन्छ । यस प्रदेशमा प्रायः सबै जिल्लाहरूमा धार्मिक पर्यटनको आधार बन्न सक्ने प्रख्यात देवीदेवताका मन्दिरहरू रहेका छन् । पाल्पाको श्रीनगर, भैरभस्थान मन्दिर, रानीमहल, गुल्मीको रुरु क्षेत्र, रेसुङ्गा, रिडी, अर्घाखाँचीमा अवस्थित प्रख्यात सुपादेउराली, अर्घा तथा खाँचिकोट दरवार, पाणिनी तपोभूमि, प्युठानको स्वर्गद्वारी तिर्थस्थल, बाँकेको बागेश्वरी, नवलपरासीको त्रिवेण्णधाम तथा बर्दियाको ठाकुरद्वार, रोल्पाको जलजला आदि रहेका छन् ।

यस प्रदेशमा पाँच तारे स्तरका धेरै संख्यामा ठुला होटलहरू निर्माणधीन अवस्थामा रहेका छन् । यस किसिमका गतिविधिले लुम्बिनी प्रदेशको पर्यटन विकासमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ने देखिन्छ । विगतका वर्षहरूमा कोभिड-१९ महामारीले पर्यटन क्षेत्रमा नकारात्मक असर पारेको सन्दर्भमा हालका दिनहरूमा अर्थतन्त्र चलायमान हुँदै जाँदा पर्यटन क्षेत्रमा थप उत्साह थपिँदै गएको छ भने पुर्वाधारको विस्तारले फेरी गतिलिन थालेको अवस्था रहेको छ ।

समुन्द्री सतह देखी ७२४६ मीटर उचाइ पुथा हिमालसम्म फैलिएको लुम्बिनी प्रदेशको क्षेत्रफल २२२८८ बर्ग कि.मी रहेको छ । कुल क्षेत्रफलमा हिमालको ३.१ प्रतिशत, पहाडको ६९.३ प्रतिशत र तराइको २७.६ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । प्राकृतिक, भौगोलिक र सांस्कृतिक विविधताले भरिपूर्ण यो प्रदेश पर्यटन उद्योगको मुख्य केन्द्र बन्नसक्ने धेरै आधारहरू रहेका छन् । विश्व सम्पदा सुचिमा रहेको गौतम बुद्धको जन्मस्थल लुम्बिनीका अतिरिक्त गौतम बुद्धसंग सम्बन्धित अन्य ठाँउहरू जस्तै: तिलौराकोट, देवदह, रामग्राम, निक्लिहवा, सागरहवा, गोटीहवा आदि रहेका छन् । कपिलवस्तु, रुपन्देही र नवलपरासीका जमिनमुनी रहेका प्राचिन सभ्यताहरू उत्खनन् हुन बाँकी छ । हाल तिलौराकोट उत्खनन् भइरहेको छ । यसका अतिरिक्त पर्यटक आर्कर्षण गर्न सकिने यस प्रदेशमा बाँके र बर्दियामा राष्ट्रिय निकुन्ज रहेका छन् भने पाल्पाको रानीमहल तथा रिडिमा भर्खर निर्माण सम्पन्न भएको तिन मुखे पुल आफैमा आर्कर्षणको केन्द्र रहेको छ । यस प्रदेशमा रहेको गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल सञ्चालनमा आइसकेको साथै अर्घाखाँची र गुल्मीमा निर्माणधीन अवस्थामा रहेका दुई आन्तरिक विमानस्थलहरूले पर्यटकहरूलाई थप प्रवर्द्धन गर्न सहयोग गर्ने देखिन्छ । त्यसैगरी यस प्रदेशमा १०० भन्दा बढी जातजातिहरू बसोवास गर्ने गरेका छन् । थारु र मगर संस्कृतिको बाहुल्यता रहेको यस प्रदेशमा यी संस्कृतिहरू पनि पर्यटकहरूलाई आकर्षण गर्ने क्षेत्र हुन सक्छन् । यसवाट संस्कृति प्रवर्द्धन गर्दै होमस्टेको विकास गर्न सकिन्छ । बर्दिया, रुपन्देही र रुकुम पूर्वमा होमस्टेको शुरुवात भइसकेको छ ।

यस प्रदेशले पुर्वाधार विकास विकासमा विस्तार गर्दै लगेको छ । यसै सन्दर्भमा भैरहवामा सिद्धार्थनगर नगरपालिका मार्फत एकिकृत सहरी विकास कार्यक्रम शुरु गरिएको छ भने बेलहीया-बुटवल सडकको स्तरोन्नती गरिएको छ । त्यसैगरी, सिद्धबावा सुरुडमार्गको निर्माण कार्य अघि बढिरहेको छ भने बुटवलमा दुई वटा केवलकार निर्माणाधीन अवस्थामा रहेको छ । यस प्रदेशको जिल्लाहरूमा विभिन्न पर्यटकिय क्षेत्रहरू जस्तै: कपिलवस्तु जिल्लामा रहेको जगदिशपुर ताल विश्व सिमसार क्षेत्रमा पर्दछ र यो दुर्लभ चराहरूको बासस्थानको रूपमा रहेको छ । यो तालमा विभिन्न खालका चराहरू, उभयचर, माछाहरू र अन्य जलचरहरू पाइन्छ जुन प्राकृतिक र जैविक अनुसन्धानको केन्द्र बन्न सक्छ । अन्य जिल्लाहरूमा पनि साना ठुला तालहरू रहेका छन् जसलाई पर्यटनको केन्द्र बनाउन सकिन्छ । यस प्रदेशमा प्रायः सबै जिल्लाहरूमा धार्मिक पर्यटनको आधार बन्न सक्ने प्रख्यात देवीदेवताका मन्दिरहरू रहेका छन् ।

बक्स ६: पर्यटन पुर्वाधार क्रमशः

पाल्पाको श्रीनगर, भैरभस्थान मन्दिर, रानीमहल, गुल्मीको रुरु क्षेत्र, रेसुङ्गा, रिडी, अर्घाखाँचीमा अवस्थित प्रख्यात सुपादेउराली, अर्घा तथा खाँचिकोट दरवार, पाणिनी तपोभूमि, प्युठानको स्वर्गद्वारी तिर्थस्थल, बाँकेको बागेश्वरी, नवलपरासीको त्रिवेण्णधाम तथा बर्दियाको ठाकुरद्वार, रोल्पाको जलजला आदि रहेका छन् । यस प्रदेशमा पाँच तारे स्तरका धेरै संख्यामा ठुला होटलहरु निर्माणधिन अवस्थामा रहेका छन् । यस किसिमका गतिविधिले लुम्बिनी प्रदेशको पर्यटन विकासमा महत्वपूर्ण भूमिका खेल्ने देखिन्छ । विगतका वर्षहरुमा कोभिड-१९ महामारीले पर्यटन क्षेत्रमा नकारात्मक असर पारेको सन्दर्भमा हालका दिनहरुमा अर्थतन्त्र चलायमान हुँदै जाँदा पर्यटन क्षेत्रमा थप उत्साह थपिदै गएको छ भने पुर्वाधारको विस्तारले फेरी गतिलिन थालेको अवस्था रहेको छ ।

५.२ सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेट

| तालिका ५.३: सार्वजनिक निर्माण तथा रियलस्टेटको अवस्था | | | | | |
|--|-----------|-----------|-----------|------------------|---------|
| विवरण | २०७६/७७ | २०७७/०७८ | २०७८/०७९ | प्रतिशत परिवर्तन | |
| | | | | गत अवधि | समीक्षा |
| घरजग्गा रजिष्ट्रेशन संख्या | ११९९११.०० | १०४७६९.०० | ११९९५६.०० | - १२.६३ | ६.८६ |
| घर/भवन स्थायी नक्सा पास संख्या | ७४८४.०० | ८८०१.०० | ८४८६.०० | १७.६० | - ३.५८ |
| घरजग्गा रजिष्ट्रेशन राजस्व (रु. दश लाख) | ३०२३.१८ | ५१०६.४१ | ३४०३.१० | ६८.९१ | - ३३.३६ |

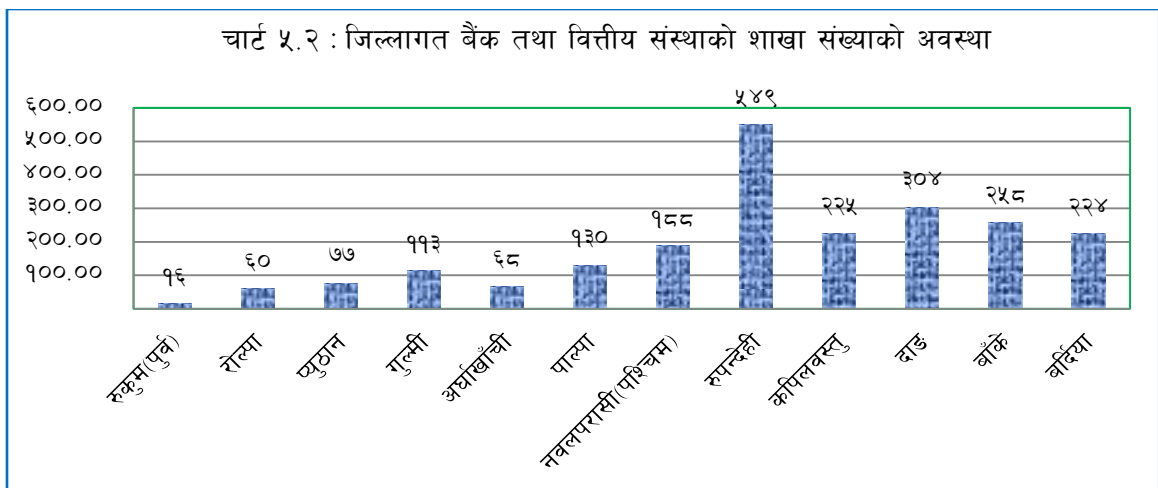
स्रोत : जिल्लामा रहेका मालपोत कार्यालयहरु तथा महानगरपालिका/उप-महानगरपालिका/नगरपालिका

समीक्षा वर्षमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन संख्या गत वर्षको तुलनामा ६.८६ प्रतिशतले वृद्धि भई १,१९,९५६ पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिमा सो सङ्ख्या १२.६३ प्रतिशतले ह्रास भएको थियो । यसैगरी समीक्षा वर्षमा घरजग्गा रजिष्ट्रेशन बापतको राजस्व गत अवधिको तुलनामा ३३.३६ प्रतिशतले ह्रास भई रु.३ अरब ४० करोड कायम भएको छ । गत वर्षको सोही अवधिमा राजस्व रकम ६८.९१ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ५ अरब १० करोड पुगेको थियो । यसैगरी घर/भवन स्थायी नक्सा पास संख्या समीक्षा अवधिमा गत अवधिको तुलनामा ३.५८ प्रतिशतले ह्रास आई ८ हजार ४८६ पुगेको छ भने गत वर्ष १७.६० प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । नेपाल सरकारको नीति वमोजिम जग्गा वर्गीकरण नगरी कित्ताकाट गर्न नपाउने व्यवस्था ल्याएको सन्दर्भमा टुक्रा जग्गाहरु (व्यवसायिक भन्दा पनि परिवारको नाम) को मात्र कारोवार बढेतापनि थैली राजस्व रकम कम भएको कारण राजस्व रकममा कमी देखिएको छ । (तालिका ५.३) ।

५.३ वित्तीय सेवा

शाखा संख्या

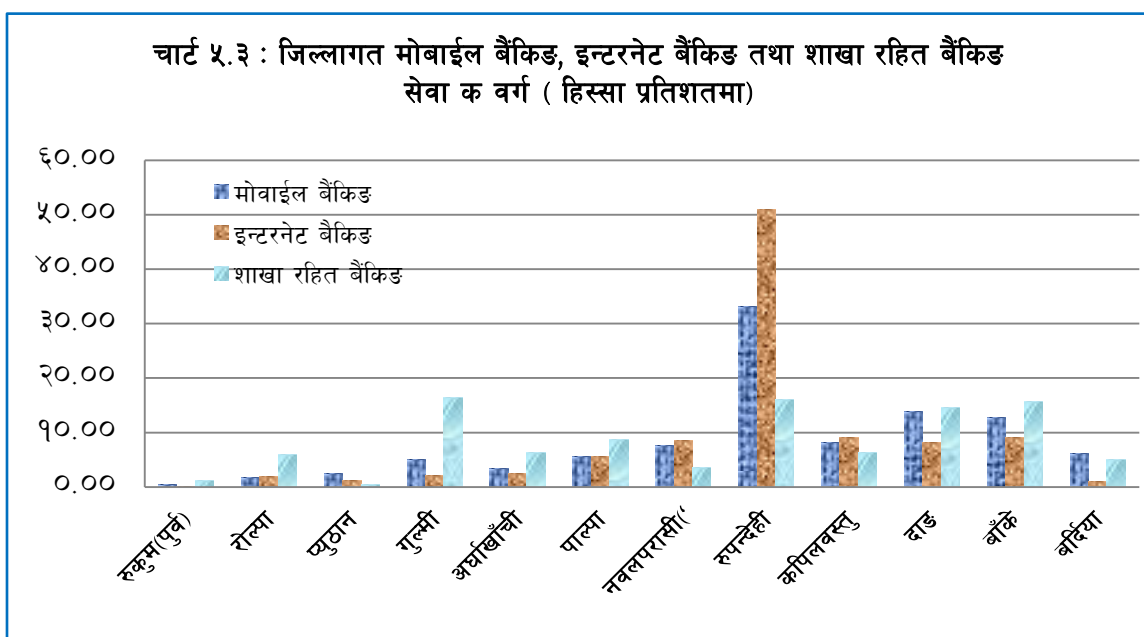
नेपाल राष्ट्र बैंक, बैंक तथा वित्तीय संस्था नियमन विभागबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार २०७९ असार मसान्तसम्ममा यस प्रदेशमा क वर्गको ७४०, ख वर्गको २५६, ग वर्गको ४६ र घ वर्गको ११७० गरी जम्मा २२९२ वटा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुको शाखा सञ्चालनमा रहेका छन् । यस मध्ये रुपन्देही जिल्लामा सबैभन्दा बढी ५४९ वटा र रुकुमपूर्व जिल्लामा सबैभन्दा कम १६ वटा शाखाहरु सञ्चालनमा रहेका छन् भने दाङमा ३०४, बाँकेमा २५८, कपिलवस्तुमा २२५, बर्दियामा २२४, नवलपरासीमा १८८, पाल्पामा १३०, गुल्मीमा ११३, प्युठानमा ७७, अर्घाखाँचीमा ६८ र रोल्पामा ६० वटा शाखाहरु रहेका छन् (चार्ट ५.२)



स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, बैंक तथा वित्तीय संस्था नियमन विभाग र लघु वित्त प्रवर्द्धन तथा सुपरिवेक्षण विभाग

मोबाईल बैंकिङ तथा ईन्टरनेट बैंकिङ दर्ता संख्या र शाखा रहित बैंकिङ सेवा

समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशको बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूमा २९ लाख ८० हजार २७५ मोबाईल बैंकिङ सेवा र २ लाख ४ हजार ५ सय ३१ ईन्टरनेट बैंकिङ सेवा दर्ता भएको छ भने बाणिज्य बैंकहरूले २५५ शाखा रहित बैंकिङ सेवा उलब्ध गराएका छन् । जिल्लाहरूमा कुल मोबाईल बैंकिङ सेवा दर्ता संख्या तुलना गर्दा समीक्षा अवधिमा रुपन्देही जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ३३.०८ प्रतिशत रहेको छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.३६ प्रतिशत रहेको छ र ईन्टरनेट बैंकिङ सेवा दर्ता संख्या तुलना गर्दा समीक्षा अवधिमा रुपन्देही जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ५१.०१ प्रतिशत रहेको छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.०४ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी जिल्लाहरूमा बाणिज्य बैंकहरूको कुल शाखा रहित बैंकिङ सेवा तुलना गर्दा समीक्षा अवधिमा गुल्मी जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै १६.४७ प्रतिशत रहेको छ भने प्युठान जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.३९ प्रतिशत रहेको छ (चार्ट: ५.३) ।



स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, बैंक तथा वित्तीय संस्था नियमन विभाग र लघु वित्त प्रवर्द्धन तथा सुपरिवेक्षण विभाग

कुल निक्षेप

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले संकलन गरेको कुल निक्षेप गत वर्षको तुलनामा न्यून (६.५५ प्रतिशत) मात्रले वृद्धि भई रु.४ खर्ब २७ अर्ब २४ करोड ४४ लाख पुगेको छ। जिल्लाहरूको कुल निक्षेपको अवस्था तुलना गर्दा समीक्षा वर्षमा रुपन्देही जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ४३.७६ प्रतिशत रहेको छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.२८ प्रतिशत रहेको छ। त्यसैगरी, कुल निक्षेपमा बाँकेको १२.११ प्रतिशत, दाङको १०.५९ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ६.५३ प्रतिशत, पाल्पाको ५.७५ प्रतिशत, नवलपरासी पश्चिमको ५.४८ प्रतिशत, गुल्मीको ५.५१ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ३.३० प्रतिशत, बर्दियाको ३.३३ प्रतिशत, प्यूठानको २.०८ प्रतिशत र रोल्पाको १.२८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।

| तालिका ५.४: जिल्लागत निक्षेप, कर्जा र कर्जा/निक्षेप अनुपातको अवस्था | | | | | |
|---|--------------------------|--------------------------------|------------------------|------------------------------|----------------------------------|
| जिल्ला | कुल निक्षेप रु. दश लाखमा | कुल निक्षेपको अंश (प्रतिशतमा) | कुल कर्जा रु. दश लाखमा | कुल कर्जाको अंश (प्रतिशतमा) | कर्जा/निक्षेप अनुपात(प्रतिशतमा) |
| रुकुम(पूर्व) | १२०८.७४ | ०.२८ | ७७४.२ | ०.१४ | ६४.०५ |
| रोल्पा | ५४६७.०१ | १.२८ | ३२१९.६३ | ०.६ | ५८.८९ |
| प्यूठान | ८८८१.१३ | २.०८ | ६३९५.५४ | १.१९ | ७२.०१ |
| गुल्मी | २३५३९.१७ | ५.५१ | ७२२८.२१ | १.३४ | ३०.७१ |
| अर्घाखाँची | १४१०४.०५ | ३.३० | ३५१४.५६ | ०.६५ | २४.९२ |
| पाल्पा | २४५५१.६८ | ५.७५ | १२२११.८७ | २.२७ | ४९.७४ |
| नवलपरासी प. | २३४०४.३९ | ५.४८ | ३६५२८.४१ | ६.७८ | १५६.०८ |
| रुपन्देही | १८६९८०.६४ | ४३.७६ | २६८४६३.९९ | ४९.८ | १४३.५८ |
| कपिलवस्तु | २७८८९.९९ | ६.५३ | २९६०८.३३ | ५.५ | १०६.१६ |
| दाङ | ४५२५८.१६ | १०.५९ | ६४८९१.४९ | १२ | १४३.३८ |
| बाँके | ५१७२२.८८ | १२.११ | ८८८८१.१६ | १६.५ | १७१.८४ |
| बर्दिया | १४२३६.५८ | ३.३३ | १७०३९.११ | ३.१६ | ११९.६९ |
| लुम्बिनी प्रदेश | ४२७२४४.४२ | १०० | ५३८७५६.५ | १०० | १२६.१० |

स्रोत: नेपाल राष्ट्र बैंक, बैंक तथा वित्तीय संस्था नियमन विभाग र लघु वित्त प्रवर्द्धन तथा सुपरिवेक्षण विभाग

चलती निक्षेप

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले परिचालन गरेको चलती निक्षेप गत वर्षको सोही वर्षको तुलनामा १०.६९ प्रतिशतले ह्रास भई रु.३५ अर्ब ५७ करोड ५४ लाख पुगेको छ भने २०७८ असार मसान्तमा १७.८६ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो। समीक्षा अवधिमा कुल निक्षेपमा चलती निक्षेपको ९.९८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।

बचत निक्षेप

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले परिचालन गरेको बचत निक्षेप गत वर्षको तुलनामा १३.७२ प्रतिशतले ह्रास भई रु. १ खर्ब ७६ अर्ब ३९ करोड ६६ लाख पुगेको छ तर २०७८ असार मसान्तमा २३.६६ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो। समीक्षा अवधिमा कुल निक्षेपमा चलती निक्षेपको ४८.८१ प्रतिशत हिस्सारहेका छ।

मुद्रती निक्षेप

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले परिचालन गरेको मुद्रती निक्षेप गत वर्षको तुलनामा ४७.२१ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. १ खर्ब ८८ अर्ब ६८ करोड ७२ लाख पुगेको छ भने २०७८ असार मसान्तमा १८.५८ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो। समीक्षा वर्षमा कुल निक्षेपमा मुद्रती निक्षेपको ३१.९१ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ।

अन्य निक्षेप

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले परिचालन गरेको अन्य निक्षेप गत वर्षको तुलनामा ६.८६ प्रतिशतले ह्रास भई रु. २६ अर्ब ५८ करोड ५० लाख पुगेको छ भने २०७८ असार मसान्तमा ९.३२ प्रतिशतले ह्रास भएको थियो । समीक्षा अवधिमा कुल निक्षेपमा अन्य निक्षेपको ९.९२ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ ।

कुल कर्जा

समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाले प्रवाह गरेको कर्जा गत वर्षको तुलनामा १४.९८ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.५ खर्ब ३८ अर्ब ७५ करोड ६४ लाख पुगेको छ भने २०७८ असारको तुलनामा २८.९३ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ । यसै गरी, समीक्षा अवधिमा यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाको कर्जा/निक्षेप अनुपात १२६.१० प्रतिशत रहेको छ (तालिका ५.४)। जिल्लाहरूको कुल कर्जाको अवस्था तुलना गर्दा समीक्षा अवधिमा रुपन्देही जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा धेरै ४९.८३ प्रतिशत रहेको छ भने रुकुमपूर्व जिल्लाको हिस्सा सबैभन्दा कम ०.१४ प्रतिशत रहेको छ । त्यसैगरी, समीक्षा अवधिमा कर्जा/निक्षेप अनुपात सबैभन्दा धेरै १७१.८४ प्रतिशत बाँके जिल्लामा रहेको छ भने सबैभन्दा कम २४.९२ प्रतिशत अर्घाखाँची जिल्लामा रहेको छ । समीक्षा अवधिमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूमा ऋणीहरूको संख्या गत वर्षको सोही अवधिको तुलनामा २२.६८ प्रतिशतले वृद्धि भई ३ लाख १८ हजार ५९७ पुगेको छ ।

| तालिका ५.५: विपन्न वर्ग कर्जा, पुनरकर्जा र सहलियपूर्ण कर्जाको जिल्लागत हिस्सा प्रतिशतमा | | | |
|---|-------------------|-------------|------------------|
| जिल्ला | विपन्न वर्ग कर्जा | पुनरकर्जा | सहलियपूर्ण कर्जा |
| रुकुम पूर्व | ०.१३ | ०.१८ | ०.१२ |
| रोल्पा | १.२६ | ०.३२ | ०.६९ |
| प्युठान | २.६९ | १.२८ | १.९८ |
| गुल्मी | २.४८ | १.९३ | २.५२ |
| अर्घाखाँची | १.२५ | ०.४४ | १.३४ |
| पाल्पा | ३.७२ | २.८४ | ३.४७ |
| नवलपरासी | ८.७८ | ६.८५ | १०.२१ |
| रुपन्देही | ४७.६३ | ४८.०८ | ३७.०५ |
| कपिलबस्तु | ६.१५ | ८.८४ | ८.५४ |
| दाङ | १२.२५ | ७.९० | १४.८३ |
| बाँके | ९.१४ | १८.३६ | १४.२० |
| बर्दिया | ४.५३ | २.९७ | ५.०४ |
| जम्मा | १००.०० | १००.०० | १००.०० |
| कुल कर्जामा हिस्सा | ७.८८ | ३.४१ | ६.१९ |

स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक

विपन्न वर्ग कर्जा

समीक्षा अवधिमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले प्रवाह गरेको विपन्न वर्ग कर्जा गत वर्षको सोही अवधिको तुलनामा २९.०४ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.४२ अर्ब ४३ करोड ३२ लाख पुगेको छ भने गत वर्षको सोही अवधिको तुलनामा ५३.७४ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । समीक्षा अवधिमा कुल कर्जामा विपन्न वर्ग कर्जाको ७.८८ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ५.५)।

पुनरकर्जा

समीक्षा अवधिमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले प्रवाह गरेको पुनरकर्जा गत वर्षको सोही अवधिको तुलनामा ३१.०९ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. १८ अर्ब ३६ करोड १४ लाख पुगेको छ । समीक्षा अवधिमा कुल कर्जामा पुनरकर्जाको ३.४१ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ५.५) ।

सहुलियतपूर्ण कर्जा

समीक्षा वर्षमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूले प्रवाह गरेको सहुलियतपूर्ण कर्जा गत वर्षको तुलनामा ४०.८६ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.३३ अर्ब ३५ करोड ७९ लाख पुगेको छ । समीक्षा वर्षमा कुल कर्जामा सहुलियतपूर्ण कर्जाको ६.१९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ (तालिका ५.५) ।

इजाजतपत्रप्राप्त मनिचेञ्जर तथा विदेशी मुद्रा सटही एजेन्सी

समीक्षा अवधिमा नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपाल राष्ट्र बैंक, नेपालगञ्ज कार्यालयहरूबाट इजाजतपत्र प्राप्त मनिचेञ्जर तथा विदेशी मुद्रा सटही एजेन्सीहरूको संख्या

| तालिका ५.६: इजाजतपत्रप्राप्त मनिचेञ्जर तथा विदेशी मुद्रा सटही एजेन्सीहरूको विवरण | | | | | | |
|--|-----------|---------------|----------------|----------|------|-----------|
| जिल्ला | मनिचेञ्जर | होटेल/रिसोर्ट | ट्राभल एजेन्सी | ट्रेकिङ | अन्य | जम्मा |
| नवलपरासी(पश्चिम) | ३ | | | | | ३ |
| रुपन्देही | ३८ | ४ | २ | | | ४४ |
| कपिलवस्तु | ९ | | | | | ९ |
| बाँके | ९ | ४ | | १ | | १४ |
| जम्मा | ५९ | ८ | २ | १ | | ७० |

स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालय

७० रहेको छ । जसमध्ये, मनिचेञ्जर ५९, होटेल/रिसोर्ट ८, ट्राभल एजेन्सी २, ट्रेकिङ एजेन्सी १ रहेका छन् । कुल एजेन्सीहरूमा सबै भन्दा धेरै रुपन्देही जिल्लामा ४४ वटा र सबै भन्दा कम नवलपरासीमा ३ वटा रहेका छन् भने बाँकेमा १४ र कपिलवस्तुमा ९ वटा रहेका छन् (तालिका ५.६) ।

फण्ड ट्रान्सफर

लुम्बिनी प्रदेश अर्न्तगत, सिद्धार्थनगर र नेपाल राष्ट्र बैंक, नेपालगञ्ज कार्यालयहरूको कार्य क्षेत्र अर्न्तगतका पर्ने १० वटा जिल्ला अर्न्तगत रहेका नोटकोषहरूमा फण्ड ट्रान्सफर कार्य गर्ने गरिन्छ । समीक्षा अवधिमा विभिन्न नोटकोषहरूमा फण्ड ट्रान्सफर गत अवधिको तुलनामा १.७ प्रतिशतले ह्रास भई रु. २० अर्ब ५५ करोड रुपैयाँ पुगेको छ (तालिका ५.७) ।

| तालिका ५.७: फण्ड ट्रान्सफर | | | | | |
|----------------------------|------------------------------|------------------------------|------------------------------|------------------------------|------------------|
| जिल्ला | सिमा | | रकम (रु. करोडमा) | | प्रतिशत परिवर्तन |
| | आ.व.२०७७/०७८ (साउन- असार) | आ.व.२०७८/०७९ (साउन- असार) | आ.व.२०७७/०७८ (साउन- असार) | आ.व.२०७८/०७९ (साउन- असार) | |
| रुकुम(पूर्व) | ३० | ३० | १२० | ८५ | -२९.२ |
| रोल्पा | ३५ | ३५ | १९० | १९५ | २.६ |
| प्यूठान | ३० | ३५ | २३० | १९५ | -१५.२ |
| गुल्मी | ५० | ५५ | ३१५ | २८५ | -९.५ |
| अर्घाखाँची | ४० | ४५ | २०० | २४० | २०.० |
| पाल्पा | ४५ | ५० | ३६० | ३६० | ०.० |
| नवलपरासी प. | ४० | ४५ | १८५ | २०० | ८.१ |
| कपिलवस्तु | ४० | ४५ | २४० | ३०५ | २७.१ |
| दाङ | ११० | ११० | ८० | ० | -१००.० |
| बर्दिया | ३० | ३० | १७० | १९० | ११.८ |
| जम्मा | ४५०.० | ४८०.० | २०९०.० | २०५५.० | -१.७ |

स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालय

परिवर्त्य विदेशी मुद्रा

लुम्बिनी प्रदेश अर्न्तगत नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालयहरूको कार्य क्षेत्र अर्न्तगत परिवर्त्य विदेशी मुद्रा खरिद कार्य गत वर्षको सोहि अवधिको तुलनामा ४२.९७ प्रतिशतले ह्रास भई कुल रु. ३७ करोड ९६ लाख खरिद भएको छ । खरिद गरिएको परिवर्त्य विदेशी मुद्राहरूको अमेरिकी डलर ३९.५३ प्रतिशत, युरो ४९.८९ प्रतिशत र अन्य विदेशी मुद्रा ५२.२५ प्रतिशतले ह्रास आएको छ (तालिका ५.८) ।

| तालिका ५.८: परिवर्त्य विदेशी मुद्रा खरिद विवरण | | | | | |
|--|---|---------------------------------------|--|-------------------------------------|--|
| विवरण | दुई वर्ष अघिआ.व.२०७६/७७ (साउन-असार) | गत अवधि आ.व.२०७७/७८ (साउन-असार) | समीक्षा अवधि आ.व.२०७८/७९ (साउन-असार) | गत अवधिको प्रतिशत परिवर्तन | समीक्षा अवधिको प्रतिशत परिवर्तन |
| US\$ | २८.०७ | २६.९० | १७.८७ | - ७.०२ | - ३९.५३ |
| Euro | ९.९२ | ७.३९ | ४.३० | - | - ४९.८९ |
| अन्य | ४४.९७ | ३३.०७ | १५.७९ | - २६.४६ | - ५२.२५ |
| जम्मा | ८२.९६ | ६६.५६ | ३७.९६ | -१८.९९ | -४२.९७ |

स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालय

भारतीय मुद्रा खरिद/बिक्री

लुम्बिनी प्रदेश अर्न्तगत नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालयहरूबाट भारतीय मुद्रा खरिद तथा बिक्री कार्य निरन्तर हुदै आइरहेको छ । भारतीय मुद्रामा समेत भुक्तानी हुने गरी बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरूबाट ए.टि.एम., क्रेडिट कार्ड, क्यू.आर. कोड लगायत अन्य सहज र सुरक्षित विद्युतीय भुक्तानी सेवाहरू उपलब्ध भएको कारण भारतीय मुद्राको बिक्री कार्य घट्टै गइरहेको छ । समीक्षा वर्षमा भारतीय मुद्रा खरिद गत वर्षको तुलनामा ६६.३९ प्रतिशतले ह्रास भई कुल रु. १ करोड २९ लाख बराबर खरिद भएको छ भने भारतीय मुद्राको बिक्री ९९.९६ प्रतिशतले ह्रास भई रु. ३ करोड ७३ लाख भएको देखिन्छ । यसैगरी समीक्षा वर्षमा नेपाल राष्ट्र बैंक, केन्द्रीय कार्यालयमा रु. ५ करोड बराबरको भा.रु. सिद्धार्थनगर कार्यालयबाट पठाइएको छ (तालिका ५.९) ।

| तालिका ५.९ : भारतीय मुद्रा खरिद बिक्री विवरण | | | | | |
|--|---|---------------------------------------|--|----------------------------------|--|
| विवरण | दुई वर्ष अघिआ.व.२०७६/७७ (साउन-असार) | गत अवधि आ.व.२०७७/७८ (साउन-असार) | समीक्षा अवधि आ.व.२०७८/७९ (साउन-असार) | गत अवधिको प्रतिशत परिवर्तन | समीक्षा अवधिको प्रतिशत परिवर्तन |
| भा.रु. खरिद (रु. करोडमा) | २.८७ | ३.६० | १.२९ | २५.४४ | - ६६.३९ |
| भा.रु बिक्री (रु. करोडमा) | ७३.९८ | ४६.४२ | ३.७३ | - ३७.२५ | - ९९.९६ |
| केन्द्रीय कार्यालयमा प्रेषित | १५.०० | ७४.०० | ५.०० | ३९३.३३ | - ९३.२४ |

स्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक, सिद्धार्थनगर र नेपालगञ्ज कार्यालय

५.४ यातायात तथा संचार

यातायात क्षेत्र

लुम्बिनी प्रदेश अर्न्तगत अध्ययनमा समेटिएका यातायात व्यवस्था कार्यालयहरुबाट प्राप्त विवरण अनुसार समीक्षा वर्षमा कुल सवारी साधन संख्या गत वर्षको तुलनामा १४.२५ प्रतिशतले वृद्धि भई ११ लाख ६४ हजार ९३३ पुगेको छ। यस तथ्याङ्क मध्ये मोटरसाईकलको

संख्या १५.६९ प्रतिशतले वृद्धि भई ९ लाख ९९ हजार ३५३ पुगेको छ भने अन्य सवारीसाधनको संख्या ६.२६ प्रतिशतले वृद्धि भई १ लाख ६५ हजार ५८० पुगेको छ (तालिका ५.१०) ।

| विवरण | गत अवधि आ.व. २०७७/७८ (साउन-असार) | समीक्षा अवधि आ.व. २०७८/७९ (साउन-असार) | समीक्षा अवधिको प्रतिशत परिवर्तन |
|----------------------|--|---|--|
| यातायातका साधनको कुल | १०१९६५६.०० | ११६४९३३.०० | १४.२५ |
| मोटरसाईकल | ८६३८३२.०० | ९९९३५३.०० | १५.६९ |
| अन्य.. | १५५८२४.०० | १६५५८०.०० | ६.२६ |

स्रोत : बुटवल, नेपालगन्ज र दांड यातायात व्यवस्था कार्यालय

सञ्चार क्षेत्र

लुम्बिनी प्रदेशमा समीक्षा अवधिमा गत वर्षको तुलनामा नेपाल टेलिकमद्वारा वितरित टेलिफोन सङ्ख्यामा २९.५७ प्रतिशतले वृद्धि भई २५ लाख ५८ हजार ५५ पुगेको छ। यस तथ्याङ्कलाई आधार मान्दा लुम्बिनी प्रदेशमा कुल टेलिफोन पहुँच ४९.९२ प्रतिशत पुगिसकेको देखिन्छ। त्यसैगरी इन्टरनेट सेवा समीक्षा वर्षमा गत वर्षको तुलनामा २१.७४ प्रतिशतले वृद्धि भई ५३ हजार ९९५ पुगेको छ (तालिका ५.११) ।

| विवरण | गत अवधि आ.व. २०७७/७८ (साउन-असार) | समीक्षा अवधि आ.व. २०७८/७९ (साउन-असार) | समीक्षा अवधिको प्रतिशत परिवर्तन |
|----------------------------|--|---|--|
| टेलिफोन सेवा | १९७४२९५.०० | २५५८०५५.०० | २९.५७ |
| स्थायी (Fixed) | ५३६३२.०० | ५४३८८.०० | १.४१ |
| मोबाईल | १९२०६६३.०० | २५०३६६७.०० | ३०.३५ |
| अन्य | ०.०० | ०.०० | |
| ईन्टरनेट सेवा | ४४३५३.०० | ५३९९५.०० | २१.७४ |
| Fixed Broadband (Wired) | ४४३५३.०० | ५३९९५.०० | २१.७४ |
| Fixed Broadband (Wireless) | ०.०० | ०.०० | |
| Mobile Broadband | ०.०० | ०.०० | |

स्रोत : नेपाल टेलिकम प्रादेशिक कार्यालय

५.५ शिक्षा तथा स्वास्थ्य

शिक्षा सेवा

समीक्षा वर्षमा लुम्बिनी प्रदेशमा सरकारी/सामुदायिक, संस्थागत/निजी र प्राविधिक शिक्षालय गरी कुल विद्यालय संख्या ६ हजार ३ सय ६० रहेका छन्। त्यसैगरी सोहि वर्षमा यस प्रदेशमा कुल १ सय ४८ वटा क्याम्पसहरु रहेका छन्। समीक्षा वर्षमा गत वर्षको तुलनामा सरकारी/सामुदायिक विद्यालयका विद्यार्थी संख्या ३.४१ प्रतिशतले वृद्धि भएको छ भने संस्थागत/निजी विद्यालयमा विद्यार्थी संख्या १०.९२ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिएकोमा प्राविधिक शिक्षालयका विद्यार्थी संख्यामा भने १७.९७ प्रतिशतले ह्रास भएको छ। त्यसैगरी क्याम्पसहरुको विद्यार्थी संख्यामा पनि २६.०२ प्रतिशतले ह्रास आएको छ। यस प्रदेशमा रहेका सम्पूर्ण शैक्षिक

संस्थाहरुमा कुल १५ लाख २० हजार ६ सय २६ जना विद्यार्थीहरुका लागि ४७ हजार ८ सय ९८ शिक्षकहरु कार्यरत रहेका छन् (तालिका ५.१२)।

| तालिका ५.१२ : शिक्षा सेवा क्षेत्रको विवरण | | | | | |
|---|-----------------------------|--------------------------|--------------------------|------------------|-----------------|
| विवरण | २०७६/०७७ (साउन- असार) | २०७७/०७८ (साउन- असार) | २०७८/०७९ (साउन- असार) | प्रतिशत परिवर्तन | |
| | | | | गत अवधि | समीक्षा अवधि |
| १. सरकारी/सामुदायिक विद्यालय | | | | | |
| विद्यालय संख्या | ४७८२ | ४५४८ | ४६८६ | - ४.८९ | ३.०३ |
| विद्यार्थी संख्या | ८६८७३९ | १०४६५९१ | १०८२२४३ | २०.४७ | ३.४१ |
| शिक्षक संख्या | २६८७० | २८४०२ | २९२४० | ५.७० | २.९५ |
| २. संस्थागत/निजी विद्यालय | | | | | |
| विद्यालय संख्या | ११८३ | १३२५ | १३८७ | १२.०० | ४.६८ |
| विद्यार्थी संख्या | ३२६००२ | ३५४७४१ | ३९३४९४ | ८.८२ | १०.९२ |
| शिक्षक संख्या | १५०७१ | १४११४ | १७२६७ | - ६.३५ | २२.३४ |
| ३. प्राविधिक शिक्षालय | | | | | |
| शिक्षालय संख्या | २६४ | २७४ | २८७ | ३.७९ | ४.७४ |
| विद्यार्थी संख्या | १८०२८ | २५१५८ | २०६३७ | ३९.५५ | - १७.९७ |
| शिक्षक संख्या | ८६८ | ६०७ | ६४८ | - ३०.०७ | ६.७५ |
| ४. विश्वविद्यालयमा आबद्ध भएका क्याम्पस | | | | | |
| क्याम्पस संख्या | १२१ | १४२ | १४८ | १७.३६ | ४.२३ |
| विद्यार्थी संख्या | २२२८४ | ३२७८१ | २४२५२ | ४७.११ | - २६.०२ |
| शिक्षक संख्या | ६६९ | ७७३ | ७४३ | १५.५५ | - ३.८८ |

स्रोत : जिल्लागतरूपमा रहेका जिल्ला समन्वय इकाई तथा क्याम्पसहरु

स्वास्थ्य सेवा

समीक्षा वर्षमा लुम्बिनी प्रदेशमा सरकारी र निजी अस्पतालहरुको संख्या क्रमशः ३६ र ६५ गरी कूल १ सय १ रहेको छ भने गत वर्षा सो संख्या ९२ रहेको थियो । समीक्षा वर्षमा गत वर्षको तुलनामा सरकारी अस्पतालमा कार्यरत चिकित्सक संख्या १.७९ प्रतिशतले वृद्धि भई ३४१ पुगेको छ भने निजी अस्पतालहरुमा कार्यरत चिकित्सक संख्यामा भने ०.५२ प्रतिशतले ह्रास आएको छ । त्यसैगरी, यस प्रदेशमा रहेका अस्पतालमा भएका

शैया संख्यासरकारी र निजी अस्पतालहरुमा गरी गत वर्षमा ५ हजार ३ सय ५५ रहेकोमा समीक्षा वर्षमा २ सय १२ वटाले वृद्धि भई ५ हजार ५ सय ६७ पुगेको छ (तालिका ५.१३) ।

| तालिका ५.१३: स्वास्थ्य क्षेत्रको स्थिती विवरण | | | | | |
|---|--|--|---|-------------------------------------|--|
| विवरण | दुई वर्ष अघि आ.व. २०७६/०७७ (साउन-असार) | गत वर्ष आ.व. २०७७/०७८ (साउन- असार) | समीक्षा वर्ष आ.व. २०७८/०७९ (साउन- असार) | गत अवधिको प्रतिशत परिवर्तन | समीक्षा अवधिको प्रतिशत परिवर्तन |
| १. सरकारी/सामुदायिक अस्पताल | | | | | |
| अस्पताल संख्या | ३० | ३३ | ३६ | १०.०० | ९.०९ |
| चिकित्सक संख्या | २८९ | ३३५ | ३४१ | १५.९२ | १.७९ |
| शैया संख्या | १५२७ | १६२५ | १६९५ | ६.४२ | ४.३१ |
| २. निजी अस्पताल | | | | | |
| अस्पताल संख्या | ५७ | ५९ | ६५ | ३.५१ | १०.१७ |
| चिकित्सक संख्या | ९४८ | ९७० | ९६५ | २.३२ | - ०.५२ |
| शैया संख्या | ३६७७ | ३७३० | ३८७२ | १.४४ | ३.८१ |

स्रोत : जिल्लागत रुपमा रहेका जिल्ला जनस्वास्थ्य कार्यालय

५.६ सेवा क्षेत्र कर्जा

समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुले प्रवाह गरेको कुल सेवा कर्जा गत वर्षको तुलनामा २२.८८ प्रतिशतले वृद्धि भई ३ खर्व ६९ अर्व २४ करोड ३७ लाख भएको छ भने गत वर्षयस्तो कर्जा ३३.६४ प्रतिशतले वृद्धि भएको थियो । यस प्रदेशका बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुले प्रवाह गरेको कुल कर्जामा सेवा क्षेत्र कर्जाको ६८.५४ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ ।

जिल्लागत रुपमा विश्लेषण गर्दा यस प्रदेशमा कुल सेवा कर्जामा सबैभन्दा धेरै रुपन्देही जिल्लाको ४७.३८ प्रतिशत र सबैभन्दा कम रुकुम पूर्वको ०.१९ प्रतिशत हिस्सा रहेको छ । यसैगरी, कुल सेवा कर्जामा बाँकेको १७.१२ प्रतिशत, दाङको १३.४७ प्रतिशत, नवलपरासीको ६.७४ प्रतिशत, कपिलवस्तुको ४.८२ प्रतिशत, बर्दियाको ३.३५ प्रतिशत, पाल्पाको २.६८ प्रतिशत, गुल्मीको १.५४ प्रतिशत, प्युठानको १.३५ प्रतिशत, अर्घाखाँचीको ०.७५ प्रतिशत र रोल्पाको ०.६१ प्रतिशत रहेको छ (तालिका ५.१४) ।

| तालिका ५.१४: कुल सेवा कर्जाको जिल्लागत अवस्था (हिस्सा प्रतिशतमा) | | | | | | | | |
|--|--------------------|--------|-------------|--------------------|--------|-----------------|--------------------|--------|
| जिल्ला | रकम (रु.दश लाखमा) | हिस्सा | जिल्ला | रकम (रु.दश लाखमा) | हिस्सा | जिल्ला | रकम (रु.दश लाखमा) | हिस्सा |
| रुकुम पूर्व | ६८५.८८ | ०.१९ | अर्घाखाँची | २७८३.०३ | ०.७५ | कपिलवस्तु | १७८११.५१ | ४.८२ |
| रोल्पा | २२४५.३२ | ०.६१ | पाल्पा | ९९०६.४४ | २.६८ | दाङ | ४९७२१.३६ | १३.४७ |
| प्युठान | ४९७१.९४ | १.३५ | नवलपरासी प. | २४८७४.१७ | ६.७४ | बाँके | ६३२२९.८९ | १७.१२ |
| गुल्मी | ५७०४.५२ | १.५४ | रुपन्देही | १७४९४२.९० | ४७.३ | बर्दिया | १२३६६.८१ | ३.३५ |
| | | | | | | लुम्बिनी प्रदेश | ३६९२४३.७५ | १०० |

स्रोत: बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरु

५.७ सहकारी क्षेत्र

लुम्बिनी प्रदेशमा रहेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूमध्ये रुपन्देहीबाट ५, नवलपरासीबाट २, पाल्पाबाट २ र कपिलवस्तुबाट १ गरी जम्मा १० वटा सहकारी संस्थाहरू नमुना छनौट गरिएको र नमुना छनौटमा परेका सहकारी संस्थाहरूको स्थलगत सर्वेक्षण गरी पुँजी, बचत, ऋण, सदस्य संख्या र रोजगारी संख्या सम्बन्धी तथ्यांक संकलन गरिएको छ । उक्त बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त तथ्यांक बमोजिम कोभिड १९ ले सहकारी क्षेत्रको उत्पादनमुखी कर्जा लगानी नकारात्मक प्रभाव पारेको देखिएको छ । त्यसैगरी सहकारी क्षेत्रको नियमित अनुगमनको कमिका कारण केहि सहकारीका सञ्चालकहरू सहकारी सदस्यहरूको बचत समेत दुरुपयोग गरी फरार भएकोले नियमसंगत रूपमा चलेका सहकारीमा समेत यसको नकारात्मक प्रभाव परेको देखिएको छ ।

तर कतिपय सहकारीले कोभिड १९ को असहज परिस्थितीमा समेत साधन स्रोतको समुचित व्यवस्थापन गरी आम सदस्यहरूमा सहयोग गरेकोले सहकारीमा सर्वसाधारणको आर्कषण वृद्धि भई सहकारीको सदस्य संख्यामा वृद्धि भएको छ । यसका बावजुद सहकारी संस्थाहरू बिच सदस्य बढाउने अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा र अन्तर सहकारी समन्वयको अभावले एउटै व्यक्ति विभिन्न सहकारीमा सदस्य हुने र धेरै संस्थाहरूबाट ऋण उपयोग गर्ने प्रवृत्ति बढेको छ । यसबाट ऋण असुलीमा समस्या उत्पन्न भएको छ । सहकारी क्षेत्रमा दोहोरो सदस्यता तथा सुशासनको लागि एउटा वडामा एउटा भन्दा बढी सहकारी भए एकआपसमा एकिकरण गर्नका लागि आवश्यकता अनुसार पहल गर्नु पर्ने वारेमा सोच्नुपर्ने देखिन्छ ।

पुँजी, बचत परिचालन तथा ऋण प्रवाह

कुल पुँजी

नमुना छनौटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त तथ्यांक अनुसार समीक्षा वर्षमा उक्त सहकारी संस्थाहरूमा कुल पुँजी गत वर्षको तुलनामा ८.६७ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ४ अर्ब ३ करोड ५७ लाख पुगेको छ । गत वर्षमा ६४.५९ प्रतिशतले बढेको थियो (तालिका ५.१५) ।

बचत परिचालन

नमुना छनौटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त तथ्यांक अनुसार समीक्षा वर्षमा बचत परिचालन गत वर्षको सोहि अवधिको तुलनामा ४.२८ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.७ अर्ब ८२ करोड ९१ लाख पुगेको छ । गत अवधिमा २८.२८ प्रतिशतले बढेको थियो (तालिका ५.१५) ।

कुल ऋण प्रवाह

नमुना छनौटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त तथ्यांक अनुसार कुल ऋण प्रवाह समीक्षा अवधिमा गत वर्षको तुलनामा २१.५९ प्रतिशतले वृद्धि भई रु ८ अर्ब १७ करोड ६९ लाख पुगेको छ । भने गत वर्ष २१.७१ प्रतिशतले बढेको थियो (तालिका ५.१५) ।

सदस्य तथा कर्मचारी संख्या

नमुना छनौटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा अवधिमा गत वर्षको तुलनामा सदस्य संख्यामा २१.६७ प्रतिशतले वृद्धि भई ८७ हजार २५६ पुगेको छ भने गत वर्षमा २५.५४ प्रतिशतले बढेको थियो । त्यसैगरी कर्मचारी संख्या समीक्षा वर्षमा गत वर्षको तुलनामा १८.२३ प्रतिशतले वृद्धि भई २ सय २७ पुगेको छ । गत वर्षमा २८ प्रतिशतले बढेको थियो (तालिका ५.१५) ।

| तालिका ५.१५: बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाको विवरण | | | | | |
|---|--|--------------------------------------|---|----------------------------|---------------------------------|
| विवरण | दुई वर्ष अघि आ.व. २०७६/०७७ (साउन-असार) | गत वर्ष आ.व. २०७७/०७८ (साउन-असार) | समीक्षा वर्ष आ.व. २०७८/०७९ (साउन-असार) | गत वर्षको प्रतिशत परिवर्तन | समीक्षा वर्षको प्रतिशत परिवर्तन |
| कुल पूँजी(रु.दश लाखमा) | २२५६.४ | ३७९३.८५२९० | ४०३५.७३३७ | ६४.५९ | ८.६७ |
| कुल बचत(रु.दश लाखमा) | ५८५३.० | ७५०८.९०६३५ | ७८२९.९९०९ | २८.२८ | ४.२८ |
| कुल ऋण(रु.दश लाखमा) | ५५२५.५ | ६७२५.०८९९३ | ८९७६.९४३ | २९.७९ | २९.५९ |
| सदस्य संख्या | ५७९२६.० | ७९७९७ | ८७२५६ | २५.५४ | २९.६७ |
| कर्मचारी संख्या | ९५०.० | ९९२ | २२७ | २८.०० | ९८.२३ |

स्रोत : नमुना छनोटमा परेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरु

५.८ सेवा क्षेत्रका सम्भावना र चुनौती

सम्भावनाहरु

- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले प्रत्येक स्थानीय तहमा एक एम्बुलेन्स सेवा उपलब्ध गराउने, सरकारी तथा सामुदायिक अस्पतालहरुमा निःशुल्क रक्त सञ्चार सेवा उपलब्ध गराउने, सुत्केरी महिला र नवजात शिशुको पोषण सुधार गर्नको लागि निशुल्क सुत्केरी पोषण आहार वितरण जस्ता कार्यक्रमहरु ल्याइने घोषणा गरेकोले यस प्रदेशको स्वास्थ्य सेवा विस्तार हुने सम्भावना बढेको छ ।
- लुम्बिनी प्रदेश सरकारको स्वामित्वमा लुम्बिनी प्राविधिक विश्वविद्यालयको स्थापना गरी दक्ष प्राविधिक जनशक्ति उत्पादन हुने, एसईई र कक्षा ९२ को परिक्षा दिएर फुर्सदमा बसेका विद्यार्थीहरुका लागि “एक विद्यार्थी एक सीप कार्यक्रम “ सञ्चालनमा ल्याइने, “ छोरीको शिक्षा : प्रदेश सरकारको प्राथमिकता “ नीति अनुरूप मुस्लिम, दलित र पिछडा वर्गका कक्षा ९१ र ९२ मा अध्ययनरत छात्राहरुलाई छात्रवृत्ति जस्ता कार्यक्रमहरु ल्याइने घोषणा गरेकोले यस प्रदेशको शैक्षिक क्षेत्र नयां सेवा विस्तार हुने सम्भावना बढेको छ ।
- लुम्बिनी प्रदेशका विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रमा होमस्टे सञ्चालन गरी आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटन बढाउने, पाल्पाको श्रीनगर र नुवाकोटका डबली मार्फत ग्रामिण संस्कृतिको प्रदर्शन तथा प्रचार प्रसार गरी नेपाली संस्कृतिको जर्गेना गर्न सकेमा नेपाली संस्कृति तथा पर्यटनको प्रवर्द्धन हुने सम्भावना रहेको छ ।
- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले वातावरण संरक्षण र स्वच्छ सफा प्रदेश बनाउनका लागि प्रदेशका मुख्य नगरहरुमा प्लास्टिक पदार्थ नियन्त्रण जस्ता कार्यक्रम घोषणा गरेकोले यस प्रदेशमा वातावरण संरक्षण र प्रदूषणको न्यूनिकरण हुने सम्भावना बढेको छ ।
- हालै सञ्चालनमा आएको गौतमबुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल नेपालकै दोस्रो अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलको रूपमा स्थापना भएको कारण यस प्रदेशमा आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको आगमन बढ्ने सम्भावनाका साथै सो को सकारात्मक प्रभाव स्वरूप अन्य क्षेत्रको समेत विस्तार हुने संभावना समेत बढेको छ ।
- यस प्रदेशमा वृद्धि भईरहेको आर्थिक क्रियाकलापहरुको प्रभावस्वरूप प्रदेशमा सेवा क्षेत्रमा रोजगारी वृद्धि हुने अपेक्षा गर्न सकिन्छ ।

चुनौतीहरु

- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले प्रत्येक स्थानीय तहमा घोषणा गरेका स्वास्थ्य र शिक्षाका कार्यक्रमहरु कार्यान्वयन गर्ने कार्य चुनौतीपूर्ण देखिएको ।
- लुम्बिनी प्रदेशमा पर्यटन विकासको प्रशस्त संभावना रहेतापनि सोच अनुरूप पर्यटन क्षेत्रको विकास एवं आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटन बढाउने कार्य ।

- यस प्रदेशका मुख्य नगरहरूमा प्लास्टिक पदार्थ नियन्त्रण कार्यक्रम सञ्चालन गरी वातावरण संरक्षण र प्रदूषण न्यूनिकरण गर्ने कार्य घोषणा गरिएतापनि सो को सफल कार्यान्वयन ।
- हालसालै संचालनमा आएको गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलमा आवश्यक सबै सेवाहरू उपलब्ध गराई विमानस्थल पूर्ण क्षमतामा संचालन गर्ने कार्य ।

परिच्छेद ६ पूर्वाधार र रोजगारी

६.१ पूर्वाधार क्षेत्र

६.१.१ बबई सिंचाई आयोजना

राष्ट्रिय गौरवका आयोजना अर्न्तगत लुम्बिनी प्रदेशको बर्दिया जिल्ला अर्न्तगत बारबर्दिया नगरपालिका-१०, बैदीमा अवस्थित रहेको बबई सिंचाई आयोजनाको कुल लागत रु. १८ अर्ब ९६ करोड रहेको छ भने आयोजना आ.व. २०४५/४६ मा निर्माण कार्य शुरु भई आ.व. २०८२/८३ मा सम्पन्न हुने लक्ष्य रहेको । बर्दिया जिल्लाको ३६,००० हेक्टर कृषियोग्य भूमिमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा पुऱ्याई कृषि उत्पादन, उत्पादकत्व तथा रोजगारी वृद्धि गरी कृषकहरुको जीवनस्तर उकासी आत्मनिर्भर बनाउनुको साथै देशमा खाद्यान्न आपूर्ति गर्दै “ सम्बृद्ध नेपाल सुखी नेपाली” बनाउन टेवा पुऱ्याउने प्रमुख उद्देश्यका साथ बबई सिंचाई आयोजना अर्न्तगत विभिन्न क्रियाकलापहरु संचालित छन् । यस आयोजनाले प्रभाव पार्ने क्षेत्रहरुमा बबई नदीको पूर्वतर्फ बारबर्दिया, बाँसगढी, गुलरिया नगरपालिका र बढैयाताल गाउँपालिकाका साथै पश्चिमतर्फ ठाकुरबाबा, मधुवन र गुलरिया नगरपालिका रहेका छन् । आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म वार्षिक भौतिक प्रगति ८५.६५ प्रतिशत र वित्तिय प्रगति ९८.४७ प्रतिशत रहेको छ भने आ.व. ०७८/७९ को असार मसान्त सम्मको भौतिक प्रगति ६२.२३ प्रतिशत र वित्तिय प्रगति ५८.८४ प्रतिशत रहेको छ । यसैगरी, यो आयोजनाले १४ महिला र ७६ पुरुष गरी ९० जना स्वदेशी नागरिकलाई प्रतक्ष्य रोजगारी दिएको छ ।

६.१.२ सिक्टा सिंचाई आयोजना

नेपालगंज, बाँकेमा अवस्थित यो आयोजनाले यसै जिल्लाको ४२,७६६ हेक्टर जमिनमा सिंचाई सुविधा उपलब्ध गराउने लक्ष्य लिएको छ । आयोजनाको कुल लागत रु. ५२ अर्ब ८९ करोड रहेको छ भने सम्पन्न हुने अन्तिम मिति २०८९/९० रहेको छ । २०७९ असार मसान्तसम्म यो आयोजनाको भौतिक प्रगति ७३.५० प्रतिशत र वित्तिय प्रगति ७५.९ प्रतिशत रहेको छ । यस आयोजनाबाट ३ लाख रोजगारी सिर्जना गर्ने लक्ष्य लिईएको छ ।

आयोजनाले आसपासको क्षेत्रमा पारेको प्रभावहरु

- निर्माण अवधिभर रोजगारीको सिर्जना ।
- स्थानीय जनताको प्राविधिक सीपमा वृद्धि ।
- कृषि उत्पादनमा वृद्धि, कृषकहरु प्रतक्ष्य रुपमा लाभान्वित भई सो द्वारा उनिहरुको सामाजिक तथा आर्थिक जिवनस्तरमा वृद्धि ।
- समग्रमा आर्थिक क्रियाकलापहरुमा वृद्धि, विकासका अन्य संरचना तथा सार्वजनिक सेवाहरुमा वृद्धि ।

६.१.३ भेरी बबई डाईभर्सन बहुउद्देश्यीय आयोजना

सिंचाई विभागबाट पहिलो बहुउद्देश्यीय आयोजना “भेरी बबई डाईभर्सन आयोजना” को कार्यालय विरेन्द्रनगर, सुर्खेतमा मिति २०६८/०५/०७ मा स्थापना गरिएतापनि निर्माण कार्य आ.व.२०७१/०७२ बाट शुरु गरिएको थियो । संशोधित समय तालिका अनुसार यो आयोजना आ.व. २०७९/८० मा सम्पन्न गर्ने लक्ष्य रहेको छ । यस आयोजना अर्न्तगत सुर्खेत जिल्लाको भेरीगंगा नगरपालिकामा अवस्थित भेरी नदीमा करीब १२० मिटर लामो ब्यारेज सहित १२.२ कि.मी. लामो सुरुङ्ग मार्फत ४० घनमिटर प्रति सेकेण्ड पानी बबई नदीमा खसालिने योजना रहेको छ । साथै बबई नदीको किनारमा जम्मा ४६.८ मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमताको विद्युतगृह समेत निर्माण गरी वार्षिक करिव ४०० गिगावाट आवर विद्युत उत्पादन गरिने योजना रहेको छ । आयोजना

सम्पन्न भएपछि बर्दिया र बाँके जिल्लाका करिब ५१,००० हेक्टर कृषियोग्य जमिनमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा उपलब्ध हुनेछ ।

यस आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म ५७ प्रतिशत भौतिक प्रगति र ४१.९२ प्रतिशत वित्तीय प्रगति भएको छ भने स्वदेशका १०० महिला र ४०० पुरुष तथा १० विदेशी पुरुष गरी जम्मा ५१० जनालाई प्रतक्ष्य रोजगारी प्रदान गरिएको छ ।

आयोजना कार्यान्वयनमा देखा परेका मुख्य समस्याहरू

कोभिड-१९ को कारण निर्माण कार्यमा निरन्तरता नरहेको, योजना र कार्यक्रम तालिका अनुसारको श्रोत व्यवस्थापन दक्ष्यतामा कमी, आयोजनामा प्रयोग हुने ठुला यन्त्र तथा उपकरणको व्यवस्थापन तथा पैठारीमा समय लाग्ने गरेको, दक्ष प्राविधिक जनशक्तिको अभाव, जग्गा प्राप्तिमासमस्या तथा प्रकृयागत जटिलता रहेको साथै ऐलानी जग्गाको सन्दर्भमा स्पष्ट नीति तथा कार्यविधिको अभाव रहेको, वन तथा राष्ट्रिय निकुञ्ज क्षेत्रमा निर्माण सम्बन्धी कार्यहरू गर्दा प्रकृयागत जटिलतो, परामर्शदाता MGCE (International) र ECoCoDE (National) को आन्तरिक विवादका कारण २०७७ माघ १९ देखि आयोजनामा National परामर्शदाता छुट्टिएको र हाल विदेशी परामर्शदाताद्वारा मात्रै परामर्शको कार्य भैरहेकोमा बैकिङ्ग ब्लक जस्ता समस्याहरू आयोजनामा रहेका जानकारी प्राप्त भएको छन् ।

६.१.४ राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समिति अर्न्तगत बुटवल कार्यालय र कार्यक्षेत्र

नेपाल सरकारले आर्थिक वर्ष २०६६/६७ देखि चुरे संरक्षणलाई अभियानका रूपमा संचालन गर्न राष्ट्रपति चुरे संरक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ गरेको छ । पूर्व इलामदेखि पश्चिम कञ्चनपुरसम्म ३७ वटा जिल्लाहरूमा फैलिएको यस चुरे क्षेत्रको भूभाग देशको कुल भू-भागको १२.७८ प्रतिशत पर्दछ । चुरे संरक्षणको काम बहु-आयामिक, बहु-पक्षीय र बहु-सरोकारवालाहरूसंग सम्बन्धित विषय भएकाले यसलाई समन्वयात्मक ढंगले संचालन गर्न नेपाल सरकारले २०७१ साल असार २ गते विकास समिति ऐन २०१३ को दफा ३ ले दिएको अधिकार प्रयोग गरी “राष्ट्रपति चुरे-तराई मधेश संरक्षण विकास समिति”(गठन) आदेश २०७१ जारी गरेको छ ।

यस राष्ट्रपति चुरे(तराई मधेश संरक्षण विकास समिति अर्न्तगत बुटवल कार्यालयको स्थापना वि.स. २०७६/०५/१८ भएको छ । यस कार्यालयको कार्यक्षेत्र अर्न्तगत तनहुँ, नवलपरासी, रुपन्देही, पाल्पा, अर्घाखाँची, कपिलवस्तु, दाङ, प्यूठान र सल्यान गरी ९ जिल्लाहरू रहेका छन् । यस आयोजनामा १० वटा प्राथमिकता प्राप्त नदी प्रणाली रहेका छन् भने ८ वटामा मात्र काम भैरहेको छ । यस आयोजनाले ५२,२५० महिला र ६३,८६४ पुरुषलाई रोजगारी प्रदान गरेको छ ।

६.१.५ रेसुङ्गा विमानस्थल

गुल्मी जिल्लाको रेसुङ्गा नगरपालीका वडा नं.-१० मा रहेको रेसुङ्गा विमानस्थल समुद्री सतहबाट १,५५४ मिटर उचाइमा रहेकोछ । साविक सिमिचौर गा.वि.स., वडा नं. ५ मा अवस्थित यस विमानस्थल सदरमुकाम तम्घासदेखि ५ किलामिटरको दुरीमा रहेको छ । यस जिल्लामा रहेका पर्यटकीय स्थल रेसुङ्गा तपोभूमि, अर्जुन भगवती मन्दिर, रिडीको ऋषिकेशव मन्दिर तथा हालै निर्माण सम्पन्न भएको गुल्मी, पाल्पा र स्याङ्जा जिल्लाहरू जोड्ने तिनमुखे पुल लगायतका पर्यटकीय क्षेत्रलाई पर्यटन सर्किटको रूपमा विकास गरी आर्थिक गतिविधिलाई बढाउने उद्देश्य यो विमानस्थलले लिएको छ ।

यो विमानस्थलका लागि ७६ रोपनी सार्वजनिक र २६ घरपरिवारको ५१ रोपनी नीजि गरी कुल १२७ रोपनी जग्गा अधिकरण गरिएको छ भने विस्थापित २६ घरपरिवारलाई मुआब्जा दिई व्यवस्थापन गरिएको छ । यो विमानस्थलको कुल ६१० मिटर लम्बाईको धावनमार्गमो ८५.२५ प्रतिशत र ६० मिटर चौडाईमा ३३.३३ प्रतिशतमा कालोपत्रे कार्य सम्पन्न भएको छ भने निर्माण कार्य सम्पन्न भैसकेको टर्मिनल भवनमा राडार तथा अन्य महत्वपूर्ण उपकरण/मेशिनरीको जडान कार्य बाँकी रहेको छ । एक पटकमा २२ यात्रुले सेवा लिन सक्ने यस विमानस्थलको दुईवटा ट्वीनेटर विमान पार्किङ गर्न सक्ने क्षमता रहेको छ । यस विमानस्थलको परिक्षण उडान धावनमार्ग कालोपत्रे कार्य पूर्ण हुनुपूर्व २०७६ जेठमा सम्पन्न भइसकेको छ ^४।(स्रोत:स्थलगत भ्रमणको क्रममा विमान स्थलका आधिकारिक कर्मचारी तथा स्थानीयहरूसँगको भेटघाट तथा छलफलमा आधारित)

६.१.६ अर्घाभगवती विमानस्थल

अर्घाखाँची जिल्लाको सन्धीखर्कमा अवस्थित अर्घाभगवती विमानस्थल निर्माण चरणमा रहेको छ । मिति २०७९ साउन मसान्तसम्म धावनमार्ग ६५० मिटर ग्राभेल भई थप २५० मिटर विस्तार गरी ९०० मिटरका लागि जमिन सम्याउने कार्य भैरहेको छ भने ग्याविन वाल लगाउने कार्यको करिब ७५ प्रतिशत कार्य सम्पन्न भैसकेको छ । यस स्थानको पश्चिमतर्फ रहेको डाँडा कटान गरी निर्माण गरिदै गरेको यस विमानस्थलमा ४८ सिटसम्म क्षमताको विमान उडान तथा अवतरण गर्न सक्न जनाईएको छ। यस विमानस्थलबाट अर्घाखाँची जिल्लाको अतिरिक्त गुल्मी, वाग्लुङ, प्युठान र रोल्पा लगायतका जिल्लावासीहरूले समेत सेवा पाउनेछन् । विमानस्थल सञ्चालनमा आए पश्चात् जिल्लाको आर्थिक गतिविधिमा थप योगदान पुग्ने देखिन्छ । मुख्य रूपमा यस जिल्लामा रहेका पर्यटकिय क्षेत्रहरू अर्घाभगवती मन्दिर, नरसिङ्गथान मन्दिर, मालारानी, छत्रदेव, जंगबहादुर राणा जन्मेको स्थान मथुराधाम, संस्कृत व्याकरणका रचयिता पाणिनी ऋषिले तपस्या गरेको स्थल पाणीनी तपोभूमि, सुपादेउराली मन्दिर, जंगबहादुर राणाको न्वरान भएको ऐतिहासिक बलकोट पौवा, खाँचीकोटदरवार लगायतका क्षेत्रहरूलाई पर्यटन सर्किटको रूपमा विकास गरि स्वदेशी तथा भारतीय पर्यटक भित्र्याई जिल्लावासीको आर्थिक स्तर उकास्ने सम्भावना रहेको छ ^५।

६.१.७ सिद्धबाबा सुरुङ मार्ग

रुपन्देही र पाल्पा जिल्लामा अवस्थित सिद्धबाबा सुरुङ मार्ग आयोजनाको निर्माण कार्यका लागि Engineering Procurement and Construction (EPC) Modality मा निर्माण व्यवसायी श्री China State Construction Engineering Co. Ltd संग मिति ९ मार्च २०२२ मा ५ वर्ष (१८२५ दिन) को म्याद राखी कार्य सम्भौता भएको छ । सिद्धबाबा सुरुङ मार्ग आयोजना निर्माण कार्यको ठेक्का रकम भ्याट सहित रु. ७ अर्ब ३४ करोड २१ लाख ४ हजार ७३४.१४ रहेको छ । सो आयोजना अन्तर्गत १,१२६ मीटर लामो Main Tunnel, क्रमशः १५५ मीटर, २४५ मीटर र १३१ मीटर लम्बाईका तीनवटा Escape Tunnel का साथै ७८० मीटर को Pedestrian Rock Shed तथा ९०४ मीटर र ५५० मीटरका Approach Road हरू रहेका छन् । निर्माण व्यवसायी श्री China State Construction Engineering Co. Ltd द्वारा हाल सो आयोजनाको डिजाइन कार्य अघि बढाईएको जानकारी प्राप्त भएको छ ।

^४ (स्रोत:स्थलगत भ्रमणको क्रममा विमान स्थलका आधिकारिक कर्मचारी तथा स्थानीयहरूसँग भेटघाट तथा छलफलमा आधारित)

^५ (स्रोत:स्थलगत भ्रमणको क्रममा विमान स्थलका आधिकारिक कर्मचारी तथा स्थानीयहरूसँग भेटघाट तथा छलफलमा आधारित)

६.१.८ तिनाउ दानव कोरिडोर सडक परियोजना

लुम्बिनी प्रदेशको रुपन्देही जिल्लामा निर्माणाधीन तिनाउ दानव कोरिडोर सडक परियोजनाको कुल अनुमानित लागत रु.१ अर्ब ३३ करोड रहेको छ । यस परियोजनाको प्रस्तावक, सडक विभाग अर्न्तगत रहेको सडक डिभिजन बटवल रहेको छ भने यो सडकको कुल लम्वाई ५०.३३ कि.मी. रहेको छ । यो सडक परियोजना बटवल उप-महानगरपालिका, तिलोत्तमा नगरपालिका, सियारी गाँउपालिका, शुद्धोदन गाउपालिका र सैनामैना नगरपालिका अर्न्तगत पर्दछ भने सडक कोरिडोर चार सेक्सनहरूमा विभाजित गरिएको छ । यस सडकको निर्माण कार्य एवं स्थरवृद्धि गतिविधिलमा सडक खण्डको आवश्यकता अनुसार बिटुमिन सडक, साइड ड्रेनको निर्माण, क्रसिङ र संरचनाहरू सहित डवल लेनमा निर्माण हुदै गरेको छ । यस सडकको निर्माण र स्तरोन्नति पश्चात् आर्थिक विकास र रोजगारीको अवसर वृद्धि हुने र ग्रामिण क्षेत्रमा बजार र सामाजिक सेवाहरूको पहुँचमा सुधार हुनेछ । सडकको प्रभावित क्षेत्रहरूमा रुपन्देही जिल्लाका प्रमुख बस्ती क्षेत्रहरूमा जीतगढी, सौराहा, टिकुलीगढ, रतनपुर, बेलबास, बनकट्टा, देवीनगर र मनहरापुर रहेका छन् ।

सकारात्मक प्रभावहरू

- निर्माण क्षेत्रमा सडक पहुँचका कारण यातायात सुविधाको साथै बहुपक्षीय प्रभाव पर्ने ।
- सडकको स्तरवृद्धि गर्ने क्रममा प्राविधिक र सीपको आधारमा स्थानिय बासिन्दाहरूलाई प्राथमिकता दिइने । यसबाट २५,७१० दिन दक्ष कामदार तथा १,०२,८२६ दिन अर्ध दक्ष कामदारले रोजगारी प्राप्त गर्ने अनुमान गरिएको छ ।
- सडक आसपासका बजार क्षेत्रको जग्गाको मुल्यमा समेत वृद्धि हुने छ ।

नकारात्मक प्रभावहरू

- निर्माण अवधिभर वायु तथा ध्वनि प्रदूषण र हिलो बाटो हुने ।
- सडक वृद्धि तथा स्तरोन्नति क्रममा १४७ वटा बिद्युत् पोल, सार्वजनिक स्थलका ३ कृषि कुलो, १२ मठमन्दिर र २ वटा चौताराहरू स्थानान्तरण गर्नुपर्ने ।
- वर्षायाममा अग्लो पारिएको माटो बगाउँदा तल्लो भागमा रहेका कृषिजन्य जमिनमा माटो थिग्रिएर उर्वराशक्ति ह्रास हुन सक्ने ।
- विभिन्न जातका करिब ५५६ वटा रुखहरू सडक किनाराबाट काटिने ।
- सडक स्तरोन्नतिको क्रममा ४५.८४ हेक्टर स्थायी जमीन मध्ये ०.८९ हेक्टर खेतियोग्य निजी जमीन, ४.५८ हेक्टर वनक्षेत्र, २५.२५ हेक्टर निजी बस्तीका जमीन र १५.२ हेक्टर खाली जमीन अधिग्रहण गर्नुपर्ने ।

६.२ पूर्वाधार क्षेत्रका सम्भावना र चुनौती

सम्भावनाहरू

- बबई तथा सिक्टा सिंचाई आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म भौतिक तथा वित्तीय औषत प्रगति ७५ प्रतिशत भन्दा माथि रहेकोले परियोजनाहरू सम्पन्न भए पश्चात् बर्दिया जिल्लाको ३६,००० हेक्टर र बाँके जिल्लाको ४२,७६६ हेक्टर कृषियोग्य भूमिमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा हुने अनुमान रहेको छ ।
- भेरी बबई डाईभर्सन आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म भौतिक तथा वित्तीय औषत प्रगति ५० प्रतिशतको हाराहारीमा रहेकोले आयोजना सम्पन्न पश्चात् वार्षिक करिब ४०० गिगावाट आवर बिद्युत उत्पादन र बर्दिया र बाँके जिल्लाका करिब ५१,००० हेक्टर कृषियोग्य जमिनमा बाह्रै महिना सिंचाई सुविधा उपलब्ध हुनेछ ।

- गुल्मीको रेसुङ्गा विमानस्थलको निर्माण कार्य सम्पन्न भई सञ्चालनमा आए पश्चात् यस जिल्लामा रहेका पर्यटकीय स्थलहरूको विकासका साथै पर्यटकीय क्षेत्रलाई पर्यटन सर्किटको रूपमा विकास हुने सम्भावना को कारणले सो जिल्लाको आर्थिक गतिविधिमा सकारात्मक प्रभाव पार्ने देखिन्छ ।
- सिद्धार्थ राजमार्ग अन्तर्गत उच्च जोखिम अवस्थामा रहेको पाल्पाको सिद्धबाबा दोभान सडकखण्डमा सिद्धबाबा सुरुङ्ग मार्ग आयोजनाको निर्माण कार्य सम्पन्न पश्चात् पाल्पा, गुल्मी, स्याङ्जा तथा सिद्धार्थ राजमार्गको आसपासका क्षेत्रहरू जेड्ने राजमार्गमा सुधार आई सो बाट आर्थिक गतिविधि विस्तार हुने एवं जनधनको सुरक्षा हुने ।
- तिनाउ दानव कोरिडोर सडक प्रभावित क्षेत्रमा सडक पहुँचका कारण यातायात सुविधाको साथै बहुपक्षीय प्रभाव पर्ने एवं सडकको स्तरवृद्धि गर्ने क्रममा प्राविधिक र सीपको आधारमा स्थानिय बासिन्दाहरूलाई प्राथमिकता दिइने कारणले रोजगारीमा वृद्धि एवं यो सडकलाई पूर्व पश्चिम राजमार्गबाट दक्षिण भारतीय सिमानामा जोड्ने बैकल्पिक काटोको रूपमा प्रयोग गर्न सकिनेसम्भावना रहेको ।

चुनौतीहरू

बबई सिंचाई आयोजना

- हरेक वर्ष ७ महिना नहरमा पानी संचालन गर्नुपर्ने भएको कारण बाँकी ५ महिनामा नहर निर्माण कार्यले वार्षिक प्रगति लक्ष्य अनुसार हासिल गर्ने कार्य ।
- सामाजिक तथा प्रकृयागत जटिलताका कारण अझै पनि मुआब्जा दर निर्धारण गरी जग्गा प्राप्त गर्ने कार्य ।
- राष्ट्रिय निकुञ्ज क्षेत्र भित्र आयोजना परेकोले मानव, मेसिनरी, ढुङ्गा, गिट्टी र बालुवा जस्ता नदीजन्य निर्माण सामाग्रीको ढुवानी र आवागमनमा अवरोधका साथै बिजुली, इन्टरनेट, टेलिफोन, सवारी साधन तथा अन्य आवश्यक स्रोत साधनलाई सहजता प्रदान गर्ने कार्य ।
- बर्दिया जिल्लाको विभिन्न भागमा बाढी, भूक्षय, ढुवान र कटानका कारण पानीको निकास गर्ने कार्य ।
- बबई नदीमा पानीको श्रोतको कमी ।
- गुर्योजनाले प्रक्षेपण गरे अनुसार वार्षिक बजेट विनियोजन हुने कार्य ।

सिक्टा सिंचाई आयोजना

- परियोजनालाई आवश्यक जग्गा सहजरूपमा अधिग्रहण गर्ने कार्य ।
- ढलको रूपमा प्रयोग भईरहेको डुडुवा नहरलाई अतिक्रमण हुनबाट रोक्ने कार्य ।
- ठेक्काहरू समयमा सम्पन्न हुन नसक्नु र कम रकममा ठेक्का स्वीकार गर्नु तर निर्माण कार्यमा तोकिए वमोजिम कार्य सम्पन्न नगनु ।
- आयोजना राष्ट्रिय निकुञ्ज भित्र रहेको, निर्माण सामाग्रीको अभाव र वन्यजन्तुको त्रासका कारण निरन्तर निर्माण कार्य ।
- परियोजना स्थलको माटो घुलनसिल प्रकृतिको रहनु साथै जनशक्ति लगायत अन्य स्रोत साधनको सहज आपूर्ति गर्ने कार्य ।

भेरी बबई डाईभर्सन बहुउद्देशीय आयोजना

- यो आयोजनाबाट वर्षै भरी सिंचाई सुविधा उपलब्ध गराउने लक्ष्य रहेतापनि तोकेको समय, लागत अनुमान तथा गुणस्तरमा सम्पन्न गर्ने कार्य र आयोजना सम्पन्न पश्चात निरन्तर सञ्चालन तथा व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।
- आयोजनाबाट डाईभर्ट गरिएको पानी सिंचाई सुविधा उपलब्ध हुने जमिन कृषिको लागि सुरक्षित रूपमा जोगाईराख्ने कार्य ।
- सम्पूर्ण सरोकारवालाको यस आयोजना प्रति उच्च आकांक्षा रहेकोले स्रोत साधन लगायत विभिन्न किसिमका सिमितताका बीच आयोजनालाई द्रुत गतिमा विकास गर्ने कार्य ।
- आयोजना दुई वटा प्रदेशमा अवस्थित रहेको र हालको संरचनामासंघ-प्रदेश, प्रदेश-प्रदेश र स्थानियतह बीच उपलब्ध जलश्रोतको बाडँफाडँको विषयमा उठ्न सक्ने विवादहरूका कारण संघ, प्रदेश र स्थानियतह बीच उपयुक्त समन्वय तथा प्रतिफल बाँडफाँडको विषयमा भविष्यमा हुन सक्ने द्वन्द्व व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।
- आयोजनाको जलाधार तथा कमाण्ड क्षेत्रमा जलवायु परिवर्तनको कारणबाट पानीको उपलब्धता, बाढी, पहिरो, भू-क्षय जस्ता प्राकृतिक प्रकोपबाट उत्पन्न जोखिमको पर्याप्त अध्ययन र सोको आपत्कालिन व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।

राष्ट्रपति चुरे- तराई मधेश संरक्षण विकास समिति अर्न्तगत बुटवल कार्यालय खण्ड

- चुरे संरक्षण सम्बन्धी ऐन तथा कानून नभएको कारण चुरे क्षेत्रबाट आउने समस्याको सम्बोधन ।
- स्थलगत आवश्यकता बमोजिम बजेट कमिका कारण गुणात्मक र परिमाणात्मक प्रगति प्राप्त गर्ने ।
- स्थानिय जनप्रतिनिधिबाट हुने दवाबका कारण आवश्यक स्थान भन्दा बाहिर काम गराउने कार्य ।
- जिल्ला दर रेट अनुसार निर्माण सामाग्री नपाउनु, जनशक्ति अभाव र कार्यक्षेत्र अनुसार ठुलो सवारी साधनको अभावका कारण निर्माण कार्यलाई निरन्तरता दिने कार्य ।

रेसुङ्गा विमानस्थल

- विमानस्थल आसपास रहेका दुईवटा पानीका मुहान सुकेका कारण स्थानिय तहमा खानेपानीको समस्या उत्पन्न भएको।
- विमानस्थलको नालाबाट बगेको वर्षातको पानीको कारण तल्लो भागमा रहेको गाँउ तथा आसपास क्षेत्रमा पहिरोको जोखिम न्यूनीकरण गर्ने कार्य ।
- नेपालबाट साना ट्वीनेटर विमान विस्थापित हुदै गएको परिप्रेक्ष्य एवं सहज सडक सुविधाका कारण यस विमानस्थलको उपादेयता एवं प्रयोग र मभौला ३०/४० सीट क्षमताका विमान अवतरण गराउनका लागि विमानस्थलको धावनमार्ग विस्तार गर्ने कार्य ।
- यस विमानस्थलबाट करिब ४०/५० किलोमिटर भित्रै छिमेकी अर्घाखाँची जिल्लाको सन्धिखर्कमा र बाग्लुङ्ग जिल्लाको बलेवामा साना विमानथलहरू निर्माणाधीन अवस्था रहेको कारण विमानस्थल सञ्चालनको दीगोपनाका लागि पर्याप्त हवाई यात्रु उपलब्ध गराउने कार्य ।

सिद्धबाबा सुरुङ मार्ग

- आयोजना स्थलको भौगोलिक संरचना कमजोर प्रकृतिको रहेकोले आयोजनाको लागि विस्फोटक पदार्थ प्रयोग गर्ने एवं आवश्यक रूपमा सो उपलब्ध गराउने कार्य ।
- पुरातात्विक महत्वका सिद्धबाबा मन्दिर वरपर टासिएर रहेको स-साना मठमन्दिरहरु स्थानान्तरण गर्ने कार्य ।
- जटिल प्रकृतिको परियोजना भएको कारण निर्माण कार्य व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।

तिनाउ दानव कोरिडोर सडक परियोजना

- सडक निर्माण गर्ने क्रममा १४७ वटा बिद्युत् पोल, सार्वजनिक स्थलका ३ कृषि कुलो, १२ मठमन्दिर र २ वटा चौताराहरु स्थानान्तरण गर्ने कार्य र सो मा स्थानियको अवरोध ।
- वर्षायाममा अग्लो पारिएको माटो बगाउँदा तल्लो भागमा रहेका कृषिजन्य जमिनमा माटो थिग्रिएर उर्वराशक्ति ह्रास हुनबाट रोक्ने कार्य ।
- सडक परियोजना नदी किनारामा रहेकोले विभिन्न जातकारुखहरु सडक किनाराबाट काटिने हुदा सो बाट पर्ने पर्यावरणीय असर ।
- निर्माणको क्रममा निजी बस्तीका जमीन र खाली जमीन अधिग्रहण गर्ने कार्य ।

६.३ रोजगारी

६.३.१ प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम

श्रम, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय, प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार लुम्बिनी प्रदेशमा आ.व.२०७८/७९ मा ८६ हजार ८ सय ८२ जना सुचिकृत बेरोजगारी रहेका छन् । जस मध्ये पुरुषको संख्या ४४ हजार ५ सय १४ छ भने महिला ४२ हजार ३ सय ६९ रहेका छन् । कुल सुचिकृत बेरोजगार संख्या मध्येबाट २१ हजार ८ सय २३ जना प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रममा खटिएका छन् । यस कार्यक्रम अन्तर्गत ३ हजार १ सय ९ आयोजनाहरु सञ्चालनमा रहेका छन् । यस कार्यक्रम अन्तर्गतका आयोजनाहरु, रोजगारी जस्ता जिल्लागत विवरणहरु **तालिका ६.१** मा उल्लेख गरिएको छ ।

| तालिका ६.१ : लुम्बिनी प्रदेशमा प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम | | | | | | |
|---|--------|------|--------|-------------------------|-------------------|---------------|
| सुचिकृत बरोजगार | | | | रोजगारीमा खटिएका संख्या | जम्मा रोजगारी दिन | आयोजना संख्या |
| पुरुष | महिला | अन्य | जम्मा | | | |
| ४४,५१४ | ४२,३६९ | ६ | ८६,८८२ | २१,८२३ | १२,४८,१३२ | ३,१०९ |

स्रोत : श्रम, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा मन्त्रालय, प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम

उल्लेखित आयोजनाहरुमा आ.व.२०७८/७९ मा कुल १२ लाख ४८ हजार १ सय ३२ रोजगारी दिन सृजना भएको छ । जिल्लागतरूपमा विश्लेषण गर्दा समिक्षा अवधिमा सुचिकृत बेरोजगार संख्यामा खटिने युवाहरुको संख्या सवैभन्दा बढी र गुल्मीमा ३ हजार ६ सय ७२ रहेको छ भने सवैभन्दा कम रुकुम-पुर्वबाट ६ सय १९ जना रहेका छन् (**तालिका ६.२**) ।

| तालिका ६.२: जिल्लागत रोजगारीको विवरण | | | | |
|--------------------------------------|---------------|-------------------------|--------------------|-----------------|
| जिल्ला | आयोजना संख्या | सुचिकृत बेरोजगार संख्या | कुल रोजगारी संख्या | कुल रोजगारी दिन |
| रुकम-पूर्व | ७० | २,०९६ | ६१९ | ५२,३४८.५ |
| रोल्पा | ३८५ | १०,००५ | २,९०४ | १,८००९३.९ |
| प्युठान | ५३३ | ९,९८३ | २,८४८ | १,५०,४०२ |
| गुल्मी | ५९६ | १,३७५५ | ३,६७२ | २,२०,६५२.१ |
| अर्घाखाँची | ३६८ | १०,७१९ | २,०६६ | १,५९,६४९ |
| पाल्पा | १७४ | ५,८९८ | १,१४१ | ९४,९०७ |
| नवलपरासी-पश्चिम | ८३ | २,१७३ | ६२२ | ४०,२४१ |
| रुपन्देही | १९९ | ४,५८६ | १,१६४ | ५३,७०७ |
| कपिलवस्तु | २०५ | ६,९४८ | २,१५८ | ७०,१५६.५ |
| दाङ | २१७ | ७,०४१ | १,६४१ | ९२,५४६ |
| बाँके | ९७ | ४,४६२ | ९३७ | ६२,५४६ |
| बर्दिया | १८२ | ९,२१६ | २,०५१ | ७०,९३२.५ |

स्रोत : प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम

६.४ रोजगारी क्षेत्रका सम्भावना र चुनौती

सम्भावनाहरू

- सिद्धबाबा सुरुङ्ग मार्ग आयोजनाको निर्माण कार्यका लागि (EPC) Modality तय भएको र पुर्वाधार लगायत अन्य विभिन्न क्षेत्रमा भएका गतिविधिले आर्थिक कृयाकलापमा थप टेवा पुग्नाले रोजगारीको संभावना बढेको देखिन्छ ।
- संघीय सरकार मार्फत सुरु गरिएको प्रधानमन्त्रि रोजगार कार्यक्रमले रोजगारी संख्यामा विस्तार हुने संभावना रहेको छ ।
- यस प्रदेशमा गौतमबुद्ध अन्तराष्ट्रिय विमानस्थल सञ्चालनमा रहेको र आसपासका क्षेत्रमा विभिन्न स्तरका पर्यटकीय होटलहरू निर्माण भैरहेको एवं अन्य व्यवसायहरू समेत बढेको र बुद्धसंग सम्बन्धित बुद्ध सर्किटका जिल्लाहरूमा धार्मिक पर्यटकहरूको आगमन बढ्ने भएकोले पर्यटन क्षेत्रसंग सम्बन्धित रोजगारी बढ्ने संभावना रहेको छ ।
- यस प्रदेशमा विभिन्न सिंचाई आयोजनाहरू निर्माणको क्रममा रहेको, संघीय तथा प्रदेश सरकारबाट सहूलियत ब्याजदरमा कृषि ऋण समेत उपलब्ध गराउने नीति रहेको, कृषिमा विभिन्न कार्यक्रमहरू तथा कृषि यान्त्रिकीकरण कार्यक्रम लगायतका कार्यक्रमहरू कार्यान्वयनमा ल्याइने प्रदेश सरकारको घोषणा रहेको कारण कृषि क्षेत्रमा रोजगारी बढ्ने सम्भावना रहेको छ ।
- भैरहवा विशेष आर्थिक क्षेत्रको थप व्यवस्थापन गर्ने सरकारको नीति एवं थप २५ वटा उद्योगहरू स्थापनाका लागि दर्ता भएको अवस्था एवं विद्युतको सहज आपूर्तिको लागि सबस्टेशन समेतको टेन्डर भैसकेकोले अन्य थप उद्योगहरू समेत स्थापना हुने संभावनाको आधारमा रोजगारी बढ्ने सम्भावना रहेको छ ।
- सरकारबाट विभिन्न योजना, नीति तथा कार्यक्रमहरू ल्याइएको, नयाँ युवा पिढीहरू प्रविधिमैत्री हुँदै गएको, वैदेशिक रोजगारीबाट फर्केका युवाहरू उद्यमशील कार्यमा संलग्न हुँदै गएको, महिला उद्यमीहरूको संख्यामा वृद्धि हुँदै गएको र प्राविधिक शिक्षाको पहुँच विस्तार हुँदै गएको र बैकिङ लगाएत आन्तरिक आर्थिक गतिविधिहरू समेत विस्तार हुँदै गएको कारण यस प्रदेशमा रोजगारीको सम्भावना रहेको छ ।

चुनौतीहरु

- यस प्रदेशमा रहेका श्रम तथा रोजगारीको हकको कार्यान्वयन गर्ने गरी कार्य गराउने ।
- उत्पादनशिल क्षेत्रमा थप रोजगारीका अवसरहरु सिर्जना गर्ने ।
- अनौपचारिक क्षेत्रको रोजगारीलाई औपचारिक क्षेत्रको दायरामा ल्याउने कार्य ।
- श्रम बजारको माग अनुरूप सीपयुक्त जनशक्तिको विकास एवं व्यवस्थापन गर्ने कार्य ।
- असल र मर्यादित औद्योगिक श्रम सम्बन्धको स्थापना र विकास ।
- शिक्षालाई सिपसंग, सिपलाई उद्योगसंग, उद्योगलाई उत्पादनसंग र उत्पादनलाई बजारसंग जोड्ने कार्य ।
- यस प्रदेशमा मर्यादित र उत्पादनशील रोजगारीका अवसर उपलब्ध गराउनको लागि सबै नागरिकलाई यथार्थपरक रूपमा सुचिकृत गर्ने कार्य ।
- प्रदेशमा उपलब्ध जनसांख्यिक लाभलाई स्थानिय सरकारका कार्यक्रमहरुमा समन्वयात्मक रूपमा प्रयोगमा ल्याउने कार्य र उच्चमशील बनाउदै श्रमलाई सम्मान गर्ने सामाजिक संस्कृति विकास गरी स्वदेशमै रोजगारी सिर्जना गर्ने कार्य ।
- अमर्यादित, असुरक्षित र अत्यन्त न्यून तलव पाइने मुलुकका लागि बैदेशिक रोजगारीमा जाने यस प्रदेशका युवाहरुलाई प्राविधिक शिक्षा, सिप र तालिम प्रदान गरी जागरुक गराउने र विस्तारै स्तरिय कामप्रति अग्रसर गराउने ।

परिच्छेद ७

संघीय एवम् प्रादेशिक कार्यक्रम तथा योजना

७.१ कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन

लुम्बिनी प्रदेश सरकारले आ.व.२०७८/७९का लागि लिएका नीति, कार्यक्रम तथा परियोजनाहरूको कार्यान्वयन अवस्था देहाय बमोजिम रहेको छ ।

- निजी क्षेत्रसंग सहकार्य गरी विद्युत्तिय बस सञ्चालन सम्बन्धमा लुम्बिनी प्रदेश यातायात लि. स्थापना गर्न सैद्धान्तिक सहमति प्राप्त भएको ।
- १२ वटै जिल्लामा कोसेली घर संचालनमा सहयोगका लागि बजेट विनियोजन भई कार्य सम्पन्न भएको ।
- थप औद्योगिक कोरिडोरको स्थापना संभाव्यता एव उद्यम विकास कोषको परिचालन गरी उद्योगको विकास र विस्तारका लागि सरल कर्जा तथा व्याजमा अनुदान दिने नीति बमोजिम ९७ वटा उद्यमलाई प्रवाह भएको कर्जाको व्याज भुक्तानी भएको ।
- स्वदेशी उन्नत तथा हाइब्रिड जात तथा नश्लको विस्तार गर्न र अन्य प्रदेशहरूमा समेत बिउ विजन निर्यात गर्न बिउ बजारीकरणमा टेवा पुऱ्याउने उद्देश्यले गत आ.व. मा १० वटा बिउ भण्डार गृह स्थापना भएको ।
- कृषि उत्पादन सामाग्री मध्ये बालीवस्तु उत्पादन तथा सिँचाई प्रवर्द्धन गर्ने उद्देश्यले ३३३० मिटर कच्चि कुला, १०५२६ मिटर पक्कि कुलो, ११७ सिमेन्ट टयाडकी, १४३ वटा पोखरी, ७ वटा लिफ्फ सिँचाई, २९४ स्यालो टयुवेल, १५ वटा डिप बोरिङ्ग, निर्माण हुनुका साथै २५५९७९ मिटर पाइप, ११४२ वटा पम्प सेट, ३०५ वटा थोपा सिँचाई सेट, ७७९ वटा स्पिडलर सिँचाई सेट, ४७६ वटा मोटर, १२०११ के.जी. पाईप वितरण हेक्टरमा सुविधा विस्तार भएको ।
- दुर्गम तथा पहुँच भन्दा टाढा रहेका स्थानहरूमा घरदैलोमा डाक्टर कार्यक्रम संचालनको लागि दुर्गम क्षेत्रमा ३ मोबाइल शिविर सञ्चालन भएको ।
- प्रदेश गौरवको आयोजना १, कृषि सडक ८, पर्यटनस्थल पहुँचमार्ग १६, सीमा क्षेत्र सडक कार्यक्रम १८, लगायतका सडक आयोजनाहरू कार्यान्वयन गरिएको ।
- यस प्रदेशका सबै जिल्लाको विशेष ठाँउ पहिचान गरी खस/आर्य, अवध, मगर, थारु, मुस्लिम समुदायको स्थानीय साँस्कृतिक परम्परागत खाना, भेषभुषा, नाचगानको संरक्षण गर्न समुदायमा आधारित साँस्कृतिक ग्राम, होमस्टे निर्माण गरी ग्रामीण पर्यटन प्रवर्द्धन गरिने कार्यक्रम अन्तर्गत विभिन्न १२ स्थानमा साँस्कृतिक ग्राम निर्माणको अवधारणा पश्चात अध्ययन सम्पन्न भएको ।
- लुम्बिनी प्रदेशमा रहेको प्राकृतिक सौन्दर्यतालाई पर्यटन विकास र ग्रामीण आयआर्जनसँग जोड्ने हेतुले रुपन्देही, पाल्पा, अर्घाखाँची, गुल्मी, रुकुमपुर्व, रोल्पा, दाँड र प्युठानमा सम्भाव्यता अध्ययन गरी हिल स्टेसनको विकास गरिने कार्यक्रम अन्तर्गत अवधारणा र कार्यक्षेत्रगत शर्तहरू तयार भएको ।
- स्मार्ट कृषि गाँउ कार्यक्रमलाई महत्वकांक्षी योजनाको रूपमा लिई शिक्षा, प्रसार र अनुसन्धानलाई एकीकृत गर्दै लिएको तथा संचालित कार्यक्रमबाट कृषि सुचना केन्द्रहरूको स्थापना हुनुका साथै कृषि यान्त्रिकरणमा वृद्धि भएको, बजार पुर्वाधारहरू विकास भएको र उन्नत प्रविधि र नश्लहरूको प्रयोग बढेको ।
- प्रदेश स्तरमा सञ्चालित सुलभ कर्जा सहजीकरण तथा व्याजमा अनुदान कार्यक्रम, प्रतिफलमा आधारित प्रोत्साहन अनुदान कार्यक्रम थप प्रभावकारी गराउनका लागि सुलभ दरमा कृषि ऋण प्रदान गर्न र सोको सहजीकरण गर्न थालनी भएको सुलभकर्जा सहजीकरण तथा व्याज अनुदान कार्यक्रमका लागि प्रदेशका सबै जिल्लामा कर्जा सहजकर्ता परिचालन गरिएको छ । तर यस कार्यक्रम अन्तर्गत जम्मा ११० आयोजना मार्फत २२ करोड ७० लाख ३५ हजार रकम ऋण स्वीकृत भएको छ । उक्त ११० आयोजनाका लागि व्याज

अनुदान बापत १ करोड २० लाख ५६ हजार १७ रुपैयाँ रकम उपलब्ध गराइएको छ । त्यसै गरि प्रतिफलमा आधारित कार्यक्रम अन्तर्गत १० जिल्लाका ६२ वटा सहकारी संस्था मार्फत करिब ६२०० दुध र मासु उत्पादनमा संलग्न कृषक घर धुरि लाभान्वित भएका ।

- अघिल्लो आर्थिक वर्षहरूमा प्रस्ताव गरिएका प्रदेश प्रहरी इकाई भवन निर्माण कार्यलाई निरन्तरता दिदै यो वर्ष नवलपरासीको बेलटार, रुपन्देहीको हाटिबनगाई, कपिलवस्तुको पकडी, बर्दियाको जयनगर र भुरीगाँउ, बाँकेको धनौली, पाल्पाको बल्डेडगढी, प्युठानको मरन्ठा, रोल्पाको नुवागाँउ र रुकुमपुर्वको काँक्रीमा भवन निर्माणका लागि रकम वण्डा गरी रुकुमपुर्वको काँक्री बाहेक अन्य सबैको बहुवर्षीय आयोजना स्वीकृत गराई ठेक्का आह्वान गरिएको ।
- जेष्ठ नागरिकसँग स्वास्थ्यकर्मि कार्यक्रम सञ्चालन निर्देशिका २०७८ तयार गरी प्रकाशत भै कार्यन्वयनमा रहेको-करिब १३००० जना ७० वर्ष पुगेका नागरिकहरूलाई उक्त सेवा प्रदान गरिएको ।
- धागो कारखाना चरडगे भुम्सा सडकमा आवश्यक पर्ने सडक पुलहरूको निर्माण कार्य सम्पन्न गरी नियमित यातायात सञ्चालन हुने व्यवस्था मिलाईने कार्यक्रम अन्तर्गत ४ वटा पुलहरूमध्ये ३ वटा पुल सम्पन्न गरिएको । सुख्खायाममा यातायात संचलन गर्न सकिने अवस्था सृजना गरिएको ।

७.१.१ प्रादेशिक सरकारी बजेटको प्रगति अवस्था

प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, बुटवलबाट प्राप्त तथ्याङ्क अनुसार समीक्षा वर्ष(आर्थिक वर्ष २०७८/७९)मा कुल बजेट रु.४२ अर्ब ९४ करोड १२ लाख विनियोजन भएकोमा ७०.७७ प्रतिशत अर्थात रु.३० अर्ब ३९ करोड ५ लाख खर्च भएको प्रारम्भिक अनुमान रहेको देखिन्छ । जस मध्ये चालु खर्च ७१.६४ प्रतिशत र पूँजीगत खर्च ७०.१४ प्रतिशत हुने प्रारम्भिक अनुमान गरिएको छ (तालिका: ७.१) ।

| तालिका ७.१: प्रादेशिक सरकारी बजेटको प्रगति विवरण (रु.दश लाखमा) | | | | | | | |
|--|--------------------------|-----------------------------|---|--------------------------|---|--|------------------|
| शिर्षक | आ.व. २०७७/७८ को बजेट रकम | आ.व. २०७७/७८ को यथार्थ खर्च | आ.व. २०७७/७८ को यथार्थ खर्च (प्रतिशतमा) | आ.व. २०७८/७९ वजेट अनुमान | आ.व. २०७८/७९ को प्रारम्भिक खर्च (असार मसान्त) | आ.व. २०७८/७९ को प्रारम्भिक खर्च (प्रतिशतमा) | प्रतिशत परिवर्तन |
| चालु खर्च | १६९४५.५३ | १३५९८.८१ | ८०.२५ | १८१२२.०२ | १२९८१.९४ | ७१.६४ | -४.५४ |
| पूँजीगत खर्च | २२२०८.६४ | १८५०४.२३ | ८३.३२ | २४८१९.१८ | १७४०८.६४ | ७०.१४ | -५.९२ |
| वित्तीय व्यवस्था | ० | ०.०० | ०.०० | ०.०० | ०.०० | ०.०० | |
| कुल | ३९१५४.१७ | ३२१०३.०४ | ८१.९९ | ४२९४१.२० | ३०३९०.५८ | ७०.७७ | -५.३३ |

स्रोत: प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, लुम्बिनी प्रदेश

खर्च

गत अवधिको तुलनामा समीक्षा वर्षमा वास्तविक चालु खर्च ४.५४ प्रतिशतले घटेर रु.१२ अर्ब ९८ करोड १९ लाख भएको छ भने पूँजीगत खर्च ५.९२ प्रतिशतले घटेर रु. १७ अर्ब ४० करोड ८६ लाख भएको छ । यसैगरी, समीक्षा वर्षमा चालु खर्च ७१.६४ प्रतिशत र पूँजीगत खर्च ७०.१४ प्रतिशत हुने प्रारम्भिक अनुमान गरिएको छ भने गत वर्षमा चालु खर्च ८०.२५ प्रतिशत र पूँजीगत खर्च ८३.३२ प्रतिशत रहेको थियो । लुम्बिनी प्रदेश सरकारको बजेट खर्च गर्ने क्षमतामा गत अवधिको तुलनामा घट्दै गएको यस विश्लेषणबाट देखिन्छ (तालिका: ७.१) ।

राजश्व

गत वर्षको तुलनामा समीक्षा वर्षमा कर राजश्व १७ प्रतिशतले वृद्धि भई रु.१२ अर्ब १५ करोड ४६ लाख पुगेको छ भने गैर कर राजश्व ३५.०७ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. १ अर्ब २७ करोड ९३ लाख पुगेको छ। यसैगरी, अन्य राजश्व ३.७७ प्रतिशतले घटेर रु.१ अर्ब २३ करोड ३९ लाख पुगेको छ (तालिका: ७.२)।

| शिर्षक | आ.व.२०७७/७८ (असार मसान्त) | आ.व.२०७८/७९ (असार सान्तसम्म) | प्रतिशत परिवर्तन |
|---------------|------------------------------|---------------------------------|------------------|
| कर राजश्व | १०३८८.४६ | १२१५४.६४ | १७.०० |
| गैर कर राजश्व | ९४७.११ | १२७९.३० | ३५.०७ |
| अन्य | १२८२.२८ | १२३३.९२ | -३.७७ |

स्रोत: प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, बुटवल

अनुदान र हस्तान्तरण

समीक्षा अवधिमा गत अवधिको तुलनामा समानीकरण अनुदान ५.०९ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ८ अर्ब २ करोड ५७ लाख भने विशेष अनुदान ५९.३४ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ३३ करोड ४६ लाख पुगेको छ। यसैगरी, समपूरक अनुदान १५.८९ प्रतिशत र सशर्त अनुदान २२.८५ प्रतिशतले हास भइ क्रमशः रु.४० करोड ६५ लाख र रु. ६ अर्ब ९७ करोड ८६ लाख पुगेको छ (तालिका: ७.३)।

| शिर्षक | आ.व.२०७७/७८ (असार मसान्तसम्म) | आ.व.२०७८/७९ (असार मसान्तसम्म)* | प्रतिशत परिवर्तन |
|----------|----------------------------------|-----------------------------------|------------------|
| समानीकरण | ७६३७.१० | ८०२५.७० | ५.०९ |
| समपूरक | ४८३.३० | ४०६.५० | -१५.८९ |
| विशेष | २१०.०० | ३३४.६२ | ५९.३४ |
| सशर्त | ९०४६.१६ | ६९७८.६९ | -२२.८५ |

स्रोत: प्रदेश लेखा नियन्त्रक कार्यालय, बुटवल

७.१.२ स्थानीय तहको कार्यक्रम तथा परियोजना कार्यान्वयन

खर्च

लुम्बिनी प्रदेशका १०९ वटा स्थानीयतह मध्ये छनोटमा परेका १ नगरपालिकाका र ४ उपमहानगरपालिकाहरूको समीक्षा अवधिमा एकीकृत कुल खर्च गत अवधिको तुलनामा १२.१८ प्रतिशतले वृद्धि भई रु. ८ अर्ब ६ करोड ९३ लाख भएको छ। समीक्षा अवधिमा कुल खर्च अर्न्तगत चालु खर्च २२.१२ प्रतिशत, पूंजीगत खर्च २.०९ प्रतिशत र वित्तीय व्यवस्था १२.९६ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ।

| स्थानीय तहको नाम | अनुमानित (रु.दश लाख) | वास्तविक (रु.दश लाख) | वास्तविक खर्च (प्रतिशत) |
|---------------------------|-------------------------|-------------------------|--------------------------|
| सिद्धार्थनगर नगरपालिका | १२५३.५५ | ८७८.३० | ७०.०७ |
| बुटवल उप-महानगरपालिका | २७४२.८८ | २२६९.२८ | ८२.४४ |
| तुल्सीपुर उप-महानगरपालिका | २८२९.१३ | १६८१.४३ | ५९.४३ |
| घोराही उप-महानगरपालिका | २२०२.८७ | १८४४.८९ | ८३.७५ |
| नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिका | १८३२.२५ | १४०३.१३ | ७६.५८ |
| कुल खर्च रकम | १०८६०.६८ | ८०६९.०३ | ७४.२९ |

स्रोत: छनौटमा परेका स्थानीय तहहरू

कुल खर्चको स्थानीय तहगत विश्लेषण गर्दा समिक्षा अवधिमा कुल अनुमानित खर्चको सिद्धार्थनगर नगरपालिकाले ७०.०७ प्रतिशत, बुटवल उप-महानगरपालिकाले ८२.४४ प्रतिशत, तुलसीपुर उप-महानगरपालिकाले ५९.४३ प्रतिशत, घोराही उप-महानगरपालिकाले ८३.७५ प्रतिशत र नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिकाले ७६.५८ प्रतिशत गरेको देखिन्छ (तालिका: ७.४)।

राजश्व

छनौटमा परेका ५ वटा स्थानीय तहहरूको समिक्षा अवधिमा कुल राजश्व संकलन गत अवधिको तुलनामा १८.७० प्रतिशतले वृद्धि भई रु. १ अर्ब ३६ करोड ४१ लाख ५० हजार भएको छ। समीक्षा अवधिमा कुल राजश्व संकलन अर्न्तगत कर राजश्व १३.०० प्रतिशत र गैरकर राजश्व २८.७६ प्रतिशतले भैको देखिन्छ।

| तालिका ७.५: छनौटमा परेका स्थानीय तहहरूको राजश्व संकलनको स्थिति | | | |
|--|-------------------------|-------------------------|---------------------------------------|
| कार्यालयको नाम | अनुमानित (रु.दश लाख) | वास्तविक (रु.दश लाख) | वास्तविक राजश्वको हिस्सा (प्रतिशत) |
| सिद्धार्थनगर नगरपालिका | १९०.०० | १४४.०६ | ७५.८२ |
| बुटवल उप-महानगरपालिका | १३१२.५० | ५३३.७६ | ४०.६७ |
| तुलसीपुर उप-महानगरपालिका | ६००.०० | ३३०.०८ | ५५.०१ |
| घोराही उप-महानगरपालिका | १०६.९० | १६९.१३ | १५८.२१ |
| नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिका | १४९.९० | १८७.१२ | १२४.८३ |
| जम्मा | २३५९.३० | १३६४.१५ | ५७.८२ |

स्रोत: छनौटमा परेका स्थानीय तहहरू

कुल राजश्व संकलनको स्थानीय तहगत विश्लेषण गर्दा समिक्षा अवधिमा सिद्धार्थनगर नगरपालिकाले अनुमानित राजश्वको ७५.८२ प्रतिशत, बुटवल उप-महानगरपालिकाले ४०.६७ प्रतिशत, तुलसीपुर उप-महानगरपालिकाले ५५.०१ प्रतिशत, घोराही उप-महानगरपालिकाले १५८.२१ प्रतिशत र नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिकाले १२४.८३ प्रतिशत राजश्व संकलन गरेका छन् (तालिका: ७.५)।

अनुदान तथा हस्तान्तरण र कुल ऋण

छनौटमा परेका स्थानीय तहहरूको समिक्षा अवधिमा कुल अनुदान तथा हस्तान्तरण रकम गत अवधिको तुलनामा १९.०७ प्रतिशतले ह्रास भई रु. ४ अर्ब ४५ करोड ३२ लाख ३० हजार भएको देखिन्छ। समीक्षा अवधिमा कुल अनुदान तथा हस्तान्तरण अर्न्तगत समानिकरण अनुदान ०.७५ प्रतिशत र विशेष अनुदान ७.५७ प्रतिशतले बढेको देखिन्छ भने समपुरक अनुदान ७०.०२ प्रतिशत र सशर्त अनुदान १६.८२ प्रतिशतले घटेको देखिन्छ। यसैगरी, अवधिमा कुल ऋण गत अवधिको तुलनामा ९.१६ प्रतिशतले ह्रास भई रु. ४ करोड १७ लाख ५० हजार भएको देखिन्छ।

कुल अनुदान तथा हस्तान्तरणको स्थानीय तहगत विश्लेषण गर्दा समिक्षा अवधिमा अनुमानित अनुदान तथा हस्तान्तरणमा सिद्धार्थनगर नगरपालिकाले ९९.९२ प्रतिशत, बुटवल उप-महानगरपालिकाले २५.३१ प्रतिशत, तुलसीपुर उप-महानगरपालिकाले १००.०० प्रतिशत, घोराही उप-महानगरपालिकाले ९८.७५ प्रतिशत र

नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिकाले ९६.६७ प्रतिशत हिस्सा वास्तविक अनुदान तथा हस्तान्तरण प्राप्त गरेको देखिन्छ (तालिका: ७.६) ।

| तालिका ७.६: छनौटमा परेका स्थानीय तहहरूको अनुदान तथा हस्तान्तरणको स्थिति | | | |
|---|-------------------------|-------------------------|---|
| कार्यालयको नाम | अनुमानित (रु.दश लाख) | वास्तविक (रु.दश लाख) | वास्तविक अनुदान तथा हस्तान्तरणको हिस्सा (प्रतिशत) |
| सिद्धार्थनगर नगरपालिका | ५४५.३९ | ५४४.९८ | ९९.९२ |
| बुटवल उप-महानगरपालिका | १५५२.०५ | ३९२.८३ | २५.३१ |
| तुलसीपुर उप-महानगरपालिका | ११८९.६६ | ११८९.६६ | १००.०० |
| घोराही उप-महानगरपालिका | १२६४.३८ | १२४८.५९ | ९८.७५ |
| नेपालगञ्ज उप-महानगरपालिका | १११४.२७ | १०७७.१७ | ९६.६७ |
| जम्मा | ५६६५.७५ | ४४५३.२० | ७८.५९ |

स्रोत: छनौटमा परेका स्थानीय तहहरू

७.२ अन्य कार्यक्रमको कार्यान्वयन

७.२.१ रिडी संगम भोलुङ्गे पुल

रुरु क्षेत्र धाम रिडीमा निर्माणको अन्तिम चरणमा रहेको रिडी संगम भोलुङ्गे (तिनमुखे) पुलको लम्वाई ३*१७७.४ मीटर रहेको छ । पाल्पा, गुल्मी र स्याङ्जा जिल्लाहरूलाई आर्थिक रुपमा प्रत्यक्ष जोड्ने तथा आन्तरिक पर्यटन प्रवर्द्धन दृष्टिकोणले यो पुल गुल्मी जिल्लाको रुरु गाँउपालिका वडा नं. १, पाल्पा जिल्लाको तानसेन नगरपालिका वडा नं. १४ तथा स्याङ्जा जिल्लाको कालिगण्डकी गाँउपालिका वडा नं. १ मा अवस्थित रहेको छ । पुल निर्माणका लागि मिति २०७१/०३/१० गते मिति २०७४/०३/०९ मा निर्माण सम्पन्न गर्ने गरी शहरी विकास मन्त्रालय स्थानिय पुर्वाधार विभाग र निर्माण कम्पनि विचमा सम्झौता भएको थियो । सम्झौता मितिमा निर्माण सम्पन्न हुन नसके पछि पुनः २०७९/०६/३० सम्मका लागि म्याद थप गरिएको छ । यस पुलको कुल निर्माण लागत रु. १४ करोड ३६ लाख १२ हजार ५ सय २३.६८ रहेको छ भने आ.व. २०७८/७९ सम्म भौतिक प्रगति ९५ प्रतिशत र आर्थिक प्रगति ६० प्रतिशत भएको छ । यो पुल आवत जावतका लागि खुला गरिए तापनि विद्युतीकरण तथा फिनिसिङ्को कार्य अन्तिम चरणमा रहेको छ । (स्रोत : शहरी विकास मन्त्रालय, स्थानिय पुर्वाधार विभाग, सस्पेन्सन ब्रिज डिभिजन)

आयोजनाले आसपासका क्षेत्रमा पारेको प्रभाव

भोलुङ्गे पुल निर्माण भए पश्चात आन्तरिक पर्यटन तथा रुरु क्षेत्र धाममा धार्मिक पर्यटकको सख्यामा उल्लेख्य वृद्धि हुदै गएको छ । हाल गुल्मी जिल्ला तर्फ रिडी बजारमा नयाँ आधुनिक सुविधा सहितका होटलहरू निर्माण हुने क्रम वृद्धि हुदै गएको छ ।

समस्या तथा चुनौती

- योजना निर्माणका क्रममा यथोचित निर्माण उपकरण सहजरुपमा उपलब्ध नहुनुको साथै निर्माण व्यावसायिको निर्माण व्यवस्थापनको कमजोरीका कारण तोकिएको समयावधिमा निर्माण गर्ने कार्य ।

- स्याङ्जा जिल्ला तर्फ आकलन गरिए भन्दा कमजोर भौगोलिक अवस्था रहेको र गुल्मी जिल्ला तर्फ कालिगण्डकी कोरिडोर क्रस गर्ने कार्य सहज नरहेको कारण निर्माण सम्पन्न गर्ने कार्यमा चुनौती थपिएको ।
- नदीको Center Pylon भागमा भौतिक संरचना निर्माण गरिएको कारण बाढीको समयमा स्याङ्जा जिल्ला तर्फ भौतिक क्षति, दुर्घटना र मानवीय क्षति जस्ता सम्भावित क्षति हुन सक्ने भएकोले सो को न्यूनीकरण गर्ने कार्य ।

७.२.२ फोहोरमैला व्यवस्थान परियोजना तिलोत्तमा नगरपालिका

फोहोरमैला व्यवस्थापन कार्यलाई वातावरण मैत्रि तथा वैज्ञानिक व्यवस्थापन गर्ने प्रमुख उद्देश्यले २०७२ सालमा जनसहभागिता स्वास्थ्य सहकारी संस्था (वास) बाट स्थापना भई संचालन भएको भएको विशिष्टकृत परियोजना हो यो । यस परियोजनाले २०७४ असोज देखि तिलोत्तमा नगरपालिकाका केहि वडामा फोहोरमैला व्यवस्थापन गर्दै आइरहेको छ । मिति २०७८-०२-२१ गते फोहोरमैला व्यवस्थापन कार्यलाई दिगो, वातावरण मैत्रि बनाउन UNDP को Promoting Green Recovery (PGRP) प्रोजेक्ट अन्तर्गतबाट प्रस्ताव माग भए बमोजिम सबैभन्दा उत्कृष्ट प्रस्ताव पेश गरी फोहोरमैला व्यवस्थापनमा यो परियोजना छनौट भएको छ । तिलोत्तमा नगरपालिकाबाट रु. १ करोड ७१ लाख ४० हजार, UNDP बाट रु. १ करोड ६३ लाख ९७ हजार र जनसहभागिता स्वास्थ्य सहकारी संस्था(वास) बाट रु.५७ लाख ५० हजार अनुदान उपलब्ध गराउने गरी त्रिपक्षीय सम्झौतामा यो परियोजनाको निर्माण कार्य १८ जुलाई २०२१ मा सुरु भई ३० जुन २०२२ मा अन्त्य गर्ने सम्झौता भएता पनि विभिन्न कारणले ३० जुलाई २०२२ सम्म म्याद थप गरी प्रोजेक्टको निर्माण कार्य सम्पन्न गरिएको छ । यस परियोजना अन्तर्गत सबै स्वदेशी र बहुसंख्यक स्थानिय स्तरका व्यक्तिले रोजगारी पाएका छन् । सिपमुलक तालिम लिई गरी करीब २०० जनाले अप्रत्यक्ष रोजगारी पाएका छन् । यस परियोजनामा १६ जना पुरुष तथा ४० जना महिला गरी जम्मा ५६ जनाले प्रत्यक्ष रोजगारीमा रहेका छन् । (स्रोत : तिलोत्तमा नगरपालिकाको कार्यालय, रुपन्देही ।)

आयोजनाले आसपासका क्षेत्रमा पारेको प्रभाव

- वैज्ञानिक फोहोर व्यवस्थापनका कारण करिब ८० प्रतिशत फोहोर पुनः प्रयोग गर्न सकिएको ।
- फोहोर बेचबिखनबाट मासिक करिब रु. २ लाख आम्दानी भएको ।
- सहकारी मार्फत कार्यान्वयन भएको हुदां स्थानीयले प्रत्यक्ष लाभ लिईरहेको ।
- स्थानिय स्तरमा तयार भएको गड्यौला मल (भर्मिक कम्पोस्ट) सहकारीले खरिद गर्ने र बजारीकरण समेतमा सहयोग गरेको कारण कुहिने फोहोरमा कमी आई व्यवस्थापन कार्यमा सहजता भएको साथै स्थानिय आयश्रोतमा वृद्धि भएको ।
- प्रतक्ष्य तथा अप्रत्यक्ष रोजगारी बढेको ।

समस्या तथा चुनौतिहरु

- श्रोतमा फोहोर वर्गिकरणका लागि स्थानिय स्तरमा सचेतना बढाउने कार्य ।
- फोहोर व्यवस्थापन केन्द्रमा स्थानीयको अवरोध हटाउने कार्य ।
- प्रयाप्त मात्रामा चाहिने आवश्यक मेशिनरी तथा औजार प्राप्त गर्ने कार्य ।

७.२.३ आम्दा नेपाल अस्पताल

आम्दा ईन्टरनेशनल जापानको राष्ट्रिय शाखाको रुपमास्थापना भएको आम्दा नेपाल अस्पताल स्थापना काल देखि नै खास गरेर बाल तथा महिलाको स्वास्थ्य अवस्था सुधारको कार्य गरिरहेको छ र यस अस्पताल बुटवल उपमहानगरपालिका र बुटवल उद्योग वाणिज्य संघ बीच त्रैपक्षिय सम्झौता अनुसार बुटवलमा पनि संचालनमा

रहेको छ । राष्ट्रको बाल तथा मातृ मृत्यु दर घटाउने र अति विपन्न तथा सिमान्तकृतलाई सेवा पुऱ्याउने यस अस्पतालको मुख्य उद्देश्य रहेको छ । नेपाल सरकारबाट १०० बेड संचालन स्वीकृत प्राप्त गरी सञ्चालनमा रहेको यस अस्पतालमा २१ जना चिकित्सक सहित प्रशासनिक, नर्सिङ तथा प्यारामेडिक्स गरि १७० जना कर्मचारीहरु आवद्ध रहेका छन् । आगामी वर्षहरुमा शैक्षिक कार्यक्रम संचालन गर्ने र १०० बेडलाई ३०० बेडमा स्तरोन्नति गर्ने यो अस्पतालको योजना रहेको छ ।

आसपासका क्षेत्रमा पारेको प्रभाव

यो अस्पताल बुटवलमा स्थापित रहेकोले अन्य प्रदेश तथा जिल्लाहरुबाट समेत बाल तथा महिला विमारीहरुले प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त गरेका छन् भने भारतबाट समेत उपचारको लागि आउने गरेका छन् ।

सम्भावनाहरु

- यो अस्पतालमा दैनिक औसतमा ३०० भन्दा बढी बालबालिका र महिला विरामीहरु सेवा लिने गरेका कारण बेडमा स्तरोन्नति भए पश्चात् सेवाग्राहीको संख्या वृद्धि हुने सम्भावना रहेको छ ।
- गैर सरकारी संस्थाको रुपमा यस अस्पताललाई स्थापना कालदेखि नै बुटवल नगरपालिकाले संरक्षण गर्दै आएको छ । अत्यन्त न्युन शुल्कमा गुणस्तरीय स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान गर्नका लागि नगरले महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गर्ने योजना ल्याएका कारण सेवा थप स्तरीय हुने सम्भावना रहेको छ ।
- लुम्बिनी प्रादेशिक अस्पताल बाहेक यस्तो प्रकृतिको स्वास्थ्य सेवा प्रदान गर्ने एक मात्र आम्दा नेपाल अस्पतालको प्रशस्त सम्भावनाहरु रहेका छन् ।
- १० विगाहा क्षेत्रफलमा फैलिएको र PPP (Public Private Partnership) मोडेलमा ३ वटा संस्थाको संयुक्त प्रयासमा संचालनमा रहेको यस अस्पतालको बृहत्तर विकासको सम्भावना रहेको छ ।

चुनौतीहरु

- यो अस्पताल गैर सरकारी नाफा रहित संस्था भएकोले निरन्तर रुपमा आत्म निर्भर भई सञ्चालन गर्ने कार्य ।
- आर्थिक अभावका कारण आधुनिक प्रविधिहरु अस्पतालमा भित्राउने कार्य ।

७.२.४ सिद्धार्थ केवलकार प्रा.लि.

पाल्पाको तिनाउ-२ मा अवस्थित नुवाकोट गढीको पर्यटकीय गतिविधि प्रवर्द्धन गर्ने उद्देश्यले निर्माण हुँदै गरेको सिद्धार्थ केवलकारमा लगानीकर्ताको शेयर लगानीबाट रु. ३४ करोड ३ लाख ४६ हजार ७२ र ऋण लगानी रु. ५१ करोड ५ लाख ४६ हजार १०८ गरी कुल रकम रु. ८५ करोड ९ लाख १० हजार १८० लगानी गर्ने प्रस्ताव रहेको छ । यो केवलकारको लम्बाई २ कि.मि ९० मिटर रहने छ । अधिकतम ९० वटा डिब्बा रहने यस केवलकारको दैनिक ५ हजार यात्रु बोक्ने क्षमता रहेको छ । गौतम बुद्ध अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल देखि २७ कि.मि. दुरीमा रहेको यो केवलकार बुटवल वडा न. १ देखि पाल्पा तिनाउँ गाउँपालिका वडा न. २ को नुवाकोट क्षेत्रमा रहेका भैरव कामना मन्दिर, तिरुपति बालाजी मन्दिर र ऐतिहासिक भैरवको मन्दिर लगायत अन्य ऐतिहासिक, प्राकृतिक आकर्षणको रुपमा विकास गरी आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटक आकर्षण गर्नु प्रमुख लक्ष्य रहेको छ । यस केवलकारको २०७९ साउन मसान्त सम्म ४५ प्रतिशत भौतिक प्रगति र ५५ प्रतिशत वित्तीय प्रगति रहेको देखिन्छ ।

परिच्छेद ८ आर्थिक परिदृश्य

लुम्बिनी प्रदेश अन्तर्गत आर्थिक गतिविधि अध्ययनमा संलग्न रहेका जिल्लाका कृषि ज्ञान केन्द्र, भेटेनरी अस्पताल तथा पशु सेवा केन्द्र, सडक, पूर्वाधार विकास कार्यालय लगायत अन्य सरकारी कार्यालयहरू एवं विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानहरू, पर्यटन तथा होटल व्यवसाय र विभिन्न आयोजना कार्यालयहरूले उपलब्ध गराएको तथ्याङ्कहरूको तथ्याङ्कीय विश्लेषण एवं सूचनाका आधारमा आगामी आर्थिक वर्षमा यस प्रदेशको आर्थिक परिदृश्य देहाय बमोजिम रहने अनुमान गरिएको छ ।

८.१ कृषि उत्पादन

- यस प्रदेशमा अपेक्षित वर्षा नभएता पनि वाटर पम्पको सहायताले धान रोपाई कार्य समयमै सम्पन्न भएको एवं विभिन्न जिल्लाहरूमा धान पकेट क्षेत्र घोषणा गरिएकोमा ति जिल्लाहरूमा उन्नत विउँको प्रयोग, सिँचाई सुविधा विस्तार जस्ता कारण समग्र धान उत्पादनमा न्यून मात्राले (२.१० प्रतिशत) वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशमा समग्र गहुँ बालिले ढाकेको भुक्षेत्रमा कमी आएको र विभिन्न जिल्लाहरूमा पहिलो सिँदुरे रोग प्रकोप भएता पनि उत्पादनमा वृद्धि भएको देखिन्छ । हाल गहुँको उत्पादकत्व राम्रो देखिएतापनि आगामी अवधिमा विभिन्न रोग/प्रकोप नियन्त्रण र समयमै मलको उपलब्धता नभएमा गहुँ उत्पादन सामान्य मात्राले घट्ने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशमा रहेका विभिन्न जिल्लाहरूमा मकै जोन/मिसन कार्यक्रम संचालन, स्वदेशि हाइब्रिड मकैलाई सरकारबाट प्रोत्साहन, बसन्ते मकै क्षेत्र विस्तार तथा अनुकूल मौसमका कारण मकै उत्पादनमा वृद्धि भएको कारण आगामी अवधिमा मकै उत्पादन यथास्थितिमा रहने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशका कृषकहरूमा जौबालि तर्फ आकर्षण घट्दै गएकोले समग्र जौबालिले ढाकेको भुक्षेत्र र उत्पादन समेतमा ह्रास देखिन्छ । कृषकहरूलाई यसबालि तर्फ आकर्षण गर्ने नीति अवलम्बन गर्न सके आगामी अवधिमा जौबालिको उत्पादन यथास्थितिमा रहने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशको विभिन्न जिल्लाहरूमा ल्याइएका तरकारी उत्पादन प्रवर्द्धन कार्यक्रमले व्यावसायिक कृषकहरूको बढ्दो आकर्षण, उन्नत विउ विजनको प्रयोग, विभिन्न अनुदान कार्यक्रमकासाथै तरकारी बालिले ढाकेको क्षेत्रफल र उत्पादन समेतमा वृद्धि देखिएको कारण आगामी अवधिमा तरकारी उत्पादनमा वृद्धि हुने अनुमान गर्न सकिन्छ ।
- यस प्रदेशमा ड्रागन खेति, किवि खेति र विभिन्न फलफूल स्मार्ट कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेको, नवलपरासि जिल्लामा व्यावसायिक केरा खेति तर्फ कृषकहरूको बढ्दो आकर्षण, फलफूल बालिले ढाकेको क्षेत्रफल र उत्पादन समेतमा वृद्धि भएको कारण आगामी अवधिमा फलफूल उत्पादन उल्लेख्य मात्राले वृद्धि हुने अनुमान रहेको छ ।
- यस प्रदेशको रुपन्देही, बर्दिया, दाङ र बाँके लगायतका जिल्लाहरूमा माछाको व्यावसायिक उत्पादन सन्तोषजनक रहेको र गत अवधिको तुलनामा माछा उत्पादनमा ३.२९ प्रतिशतले वृद्धि भएको कारण आगामी अवधिमा माछा उत्पादन वृद्धि हुने अनुमान गरिएको छ ।

- यस प्रदेशको उन्नत पशुपालन संख्यामा वृद्धि भए संगै समग्र दुध उत्पादन गत अवधिको तुलनामा २.९४ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ । थप युवा कृषकहरुलाई यस व्यवसाय तर्फ आर्कषण गर्न सके आगामी अवधिमा दुध उत्पादन बढ्ने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशमा उन्नत जातका खसि/बोका/भेंडा, कुखुरा र सुगुर/बंगुर उत्पादन प्रवर्द्धन कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेको र समग्र मासु उत्पादन गत अवधिको तुलनामा ३.४६ प्रतिशतले वृद्धि भएको देखिन्छ । विभिन्न जिल्लाहरुमा पशुपालन प्रवर्द्धन कार्यक्रममा थप सुधार गरि अन्य कृषकहरु समेत यस व्यवसाय तर्फ थप आर्कषण गर्न सके आगामी अवधिमा मासु उत्पादन बढ्ने अनुमान गरिएको छ ।
- यस प्रदेशका रुपन्देही, अर्घाखाँची, गुल्मी, तथा कपिलवस्तु लगायतका जिल्लाहरुमा वन सर्म्बद्धन प्रणालिमा आधारित वन व्यवस्थापन कार्यक्रम सञ्चालनमा रहेको र काठ, दाउरा र अन्य उत्पादनमा समेत वृद्धि भएको छ । दिगो वन व्यवस्थापन कार्ययोजना कार्यन्वयनमा आउन सके आगामी अवधिमा वन पैदावार अर्न्तगत उत्तिस, सल्ला जस्ता काठ ,दाउरा, टिमुर, श्रीखण्ड, तेजपात, सतुवा चिउरी, मलायगिरी आदि जडिबुटि तथा अम्रिसो लगायतमा, वृद्धि हुने अनुमान रहेको छ ।
- गुल्मी र पाल्पा जिल्लाहरुमा विगत लामो समयदेखि व्यवसायिक कफि खेति गर्दै आइएता पनि कफि उत्पादनले उचित मुल्य तथा बजारीकरण पाउन नसकेको कारण समीक्षा वर्षमा उत्पादनमा ह्रास आएको देखिन्छ । यस तर्फ सरकारी निकायको उचित ध्यानाकर्षण हुन नसकेमा कफि उत्पादनमा प्रतिकूल प्रभाव पर्ने देखिन्छ ।

८.२ औद्योगिक उत्पादन

- समीक्षा वर्षमा बैकिङ्ग क्षेत्रमा देखिएको तरलता न्यूनता, लगानीयोग्य साधनको कमी, सोको कारणले बैंक व्याजमा आएको अस्थिरता, अर्न्तराष्ट्रिय बजारमा पेट्रोलियम पदार्थ र औद्योगिक कच्चा पदार्थको मूल्यमा भएको वृद्धिका कारण उद्योग क्षेत्रको उत्पादनमा प्रतिकूल प्रभाव पर्ने अनुमान रहेको छ ।
- यस प्रदेशको सिमेन्ट, क्लिंकर तथा छड उत्पादनको भारतीय बजारमा माग राम्रो रहेतापनि सोमा रहेका विभिन्न समस्याहरु, चुनढुङ्गा ढुवानीमा स्थानियको अवरोध र आन्तरिक मागमा भएको व्यापक गिराबटको कारण समीक्षा अवधिमा सिमेन्ट, क्लिंकर तथा छड उत्पादनमा कमि देखिएको छ । सरकार र निजी क्षेत्र बीच समन्वय र उद्योग मैत्री नीति अवलम्बन एवं बजारमा भएको मन्दी चिर्दै पूर्वाधार विकासमा लगानी गर्न सके आगामी अवधिमा सिमेन्ट, क्लिंकर तथा छडको उत्पादनमा अनुकूल प्रभाव पर्ने देखिन्छ ।
- अध्ययनमा समेटिएका औषधीजन्य उद्योगहरुले उत्पादन वृद्धि गर्न थप प्लान्टहरु थपिएका कारण आगामी अवधिमा औषधीजन्य उत्पादन वृद्धि हुने अनुमान रहेको छ ।

८.३ सेवा क्षेत्र

- गौतमबुद्ध अर्न्तराष्ट्रिय विमानस्थलले व्यवसायिक उडान थालेको, उक्त विमानस्थलमा रात्रीकालिन विमान सेवा विस्तार लगायत आन्तरिक वायुसेवा कम्पनीहरुको सिट क्षमता बढ्नुको साथै अर्न्तराष्ट्रिय वायुसेवा कम्पनी जिजरा समेतले उडान गरिरहेको कारणले थप अर्न्तराष्ट्रिय वायुसेवा कम्पनीहरुलाई आर्कषण गर्न र लुम्बिनी लगायतका धार्मिक स्थलहरुमा Recreation प्रकृतिको स्पट प्याकेज बढाउन सके आगामी अवधिमा यस क्षेत्रमा पर्यटकीय गतिविधी बढ्न गई आन्तरिक, तेस्रो मुलुक, भारतिय र चाइनिज पर्यटकहरुको आगमन प्रशस्त बढ्ने देखिन्छ ।
- समीक्षा वर्षमा यस प्रदेशमा बैंक तथा वित्तीय संस्थाहरुवाट हुने घरजग्गा लगानीलाई नीतिगत रुपमै कडाई गर्नाले घरजग्गा कारोवारमा मन्दी देखिएको छ । घरजग्गा लगानीसम्बन्धी नीतिगत व्यवस्था यथावत रहेमा

एवं बैकहरूमा लगानीयोग्य साधनहरूको अभाव कायम रहीरहेमा आगामी अवधिमा घरजग्गा कारोवार थप संकुचन हुने देखिन्छ ।

- लुम्बिनी प्रदेश सरकारले प्रत्येक स्थानीय तहमा विभिन्न स्वास्थ्य, शिक्षा, वातावरण संरक्षण र स्वच्छ सफा प्रदेश बनाउनका लागि प्रदेशका मुख्य नगरहरूमा प्लास्टिक पदार्थ नियन्त्रण जस्ता कार्यक्रमहरू घोषणा गरेको छ । घोषणा गरिएका कार्यक्रमहरू कार्यन्वयन हुन सकेमा आगामी अवधिमा स्वास्थ्य र शिक्षा क्षेत्रमा अनुकूल प्रभाव पर्ने देखिन्छ ।
- नेपाल सरकारद्वारा डिजेल/पेट्रोल सवारि साधनहरूको आयातमा बन्देज लगाइएता पनि यस प्रदेशमा यातायातका साधनहरूको रजिष्ट्रेशन वृद्धि भएको देखिन्छ । सो व्यवस्थाले निरन्तरता पाउने र बिजुलीको अत्याधिक उत्पादन भएमा आगामी अवधिमा विद्युतीय यातायातका साधनको माग बढ्ने देखिन्छ ।
- बैक तथा वित्तीय संस्थाहरूको बढ्दो उपस्थितिसँगै यस क्षेत्रमा प्रवाह हुने वित्तीय सेवा र थप आर्थिक गतिविधिले यस प्रदेशको आर्थिक वृद्धिमा टेवा पुग्ने अपेक्षा गरिएको छ ।

८.४ पूर्वाधार क्षेत्र

- बबई सिंचाई आयोजना र सिक्टा सिंचाई आयोजनाको २०७९ असार मसान्त सम्म वार्षिक भौतिक प्रगति र वित्तीय प्रगतिले सन्तोषजनक गति लिएको देखिन्छ । परियोजनाहरू निर्धारित समयमा सम्पन्न भए पश्चात् यस प्रदेशमा सिंचित क्षेत्र विस्तार हुने देखिन्छ ।
- यस प्रदेशमा रेसुङ्गा विमानस्थल, अर्घा भगवती विमानस्थल, गुल्मी, पाल्पा र स्याङ्जा जिल्लाहरू जोड्ने तिनमुखे पुल, सिद्धबाबा दोभान सडकखण्डमा सिद्धबाबा सुरुङ्ग मार्ग, तिनाउ दानव कोरिडोर सडक, वुटवल ग्रीड जडित सौर्य विद्युत् आयोजना, वुटवल नारायणगढ सडक स्तरोन्नती लगायतका पूर्वाधार आयोजनाहरूको विकास र विस्तारका कारण अन्य क्षेत्रहरूमा समेत सो बमोजिम अनुकूल प्रभाव पर्ने देखिन्छ ।
- कोभिड-१९ को महामारी प्रभाव कम हुँदै गएतापनि बैकिङ्ग क्षेत्रमा लगानी योग्य रकमको अभावका कारण पूर्वाधार निर्माण कार्यमा प्रतिकूल प्रभाव पर्ने देखिन्छ ।

अनुसूची

| अनुसूची १ : लुम्बिनी प्रदेश सरकारले आ.ब.२०७८/७९का लागि लिएका नीति, कार्यक्रम तथा परियोजनाहरुको कार्यान्वयन अवस्था | | |
|---|--|---|
| क्र.सं. | कार्यक्रम | लक्ष्य प्राप्तिको विद्यमान अवस्था |
| १ | इलेक्ट्रिक बस सञ्चालनमा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य | विद्युत्तिय बस सञ्चालन सम्बन्धमा लुम्बिनी प्रदेश यातायात लि. स्थापना गर्न मुख्यमन्त्रि कार्यालयबाट सैद्धान्तिक सहमति प्राप्त भएको । |
| २ | प्रदेशमा उपलब्ध कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको उत्पादनलाई प्रोत्साहन गर्ने । | १२ वटै जिल्लामा कोसेली घर सञ्चालनमा सहयोगका लागि बजेट विनियोजन भई कार्य सम्पन्न भएको । |
| ३ | चन्द्रौटा-कृष्णनगर कोरिडोरमा औद्योगिक क्षेत्रको संभाव्यता अध्ययन गर्ने । | अध्ययन सम्पन्न भएको । |
| ४ | नेपाल सरकारसँगको समन्वय र सहकार्यमा रुपन्देहीको मोतिपुर, बाँकेको नौवस्ता र दाँडको लक्ष्मपुरमा औद्योगिक क्षेत्र निर्माण कार्यलाई तिब्रता दिने । | नेपाल सरकारसँग समन्वय भई रहेको । |
| ५ | उद्यम विकास कोषको परिचालन गरी उद्योगको विकास र विस्तारका लागि सरल कर्जा तथा व्याजमा अनुदान दिने नीति अवलम्बन गरिनेछ । | ९७ वटा उद्यमलाई प्रवाह भएको कर्जाको व्याज भुक्तानी भएको । |
| ६ | विउ भण्डार गृह स्थापना । | स्वदेशी उन्नत तथा हाइब्रिड जात तथा नश्लको विस्तार गर्न र अन्य प्रदेशहरुमा समेत विउ विजन निर्यात गर्न विउ बजारीकरणमा टेवा पुऱ्याउने उद्देश्यले गत आ.व. मा १० वटा विउ भण्डार गृह स्थापना भएको । |
| ७ | सिँचाई विस्तार कार्यक्रम । | कृषि उत्पादन सामाग्री मध्ये बालीवस्तु उत्पादन तथा उत्पादकत्वमा अहम् भूमिका निर्वाह गर्ने सिँचाईलाई प्रवर्द्धन गर्ने उद्देश्यले ३३३० मिटर कच्चि कुला, १०५२६ मिटर पक्कि कुलो, ११७ सिमेन्ट टयाडकी, १४३ वटा पोखरी, ७ वटा लिफ्ट सिँचाई, २९४ स्यालो टयुवेल, १५ वटा डिप बोरिङ, निर्माण हुनुका साथै २५५९७९ मिटर पाइप, ११४२ वटा पम्प सेट, ३०५ वटा थोपा सिँचाई सेट, ७७९ वटा स्पिडलर सिँचाई सेट, ४७६ वटा मोटर, |

| | | |
|-----|--|---|
| | | १२०११ के.जी. पाईप वितरण हेक्टरमा सुविधा विस्तार भएको छ । |
| ८. | दुर्गम तथा पहुँच भन्दा टाढा रहेका स्थानहरूमा घरदैलोमा डाक्टर कार्यक्रम संचालनको लागि बजेटको व्यावस्था । | कार्यान्वयन भैरहेको (दुर्गम क्षेत्रमा ३ मोबाइल शिविर सञ्चालन भएको) । |
| ९. | लुम्बिनी प्रादेशिक अस्पतालमा क्याथ ल्याव संचालन । | खरिद भै जडान तथा संचालन हुने क्रममा रहेको । |
| १०. | लुम्बिनी प्रादेशिक अस्पताललाई एम.आर.आइ मेशिन किन्न रकम विनियोजन। | खरिद प्रक्रियाको अन्तिम चरणमा रहेको । |
| ११. | प्रदेश यातायात गुरुयोजना सम्पन्न गरिने । | SDC मार्फत परामर्शदाता छनौट गरी तथ्याङ्क संचालन कार्य सुचारु गरिएको । ७ जिल्लाको प्रारम्भिक तथ्याङ्क संकलन कार्य सम्पन्न । |
| १२. | प्रदेश गौरव तथा प्रदेश स्तरका सडक आयोजनाहरू, कृषि सडक, पर्यटनस्थल पहुँचमार्ग सिमा क्षेत्र सडक, उद्योगस्थल पहुँचमार्ग लगायतका सडक संजालको विकास र व्यवस्थापन गर्ने । | प्रदेश गौरवको आयोजना १, कृषि सडक ८, पर्यटनस्थल पहुँचमार्ग १६, सीमा क्षेत्र सडक कार्यक्रम १८, लगायतका सडक आयोजनाहरू कार्यान्वयन गरिएको । |
| १३. | लगानी सम्मेलन । | सम्पन्न हुन नसकेको । |
| १४. | पूँजी बजार विकास र बीमा व्यवसायको पहुँच विस्तारका लागि सम्भाव्यता अध्ययन । | सम्भाव्यता अध्ययन भएको । |
| १५. | वित्तीय संस्थाको स्थापनाका लागि सम्भाव्यता अध्ययन । | सम्भाव्यता अध्ययन भएको । |
| १६. | यस प्रदेशका सबै जिल्लाको विशेष ठाँउ पहिचान गरी खस/आर्य, अवध, मगर, थारु, मुस्लिम समुदायको स्थानीय साँस्कृतिक परम्परागत खाना, भेषभुषा, नाचगानको संरक्षण गर्न समुदायमा आधारित साँस्कृतिक ग्राम, होमस्टे निर्माण गरी ग्रामीण पर्यटन प्रवर्द्धन गरिने । | प्रदेशका विभिन्न १२ स्थानमा साँस्कृतिक ग्राम निर्माणको अवधारणा पश्चात अध्ययन सम्पन्न भएको । |
| १७. | लुम्बिनी प्रदेशमा रहेको प्राकृतिक सौन्दर्यतालाई पर्यटन विकास र ग्रामीण आयआर्जनसँग जोड्ने हेतुले रुपन्देही, पाल्पा, अर्घाखाँची, गुल्मी, रुकुमपुर्व, रोल्पा, दाँड र प्युठानमा सम्भाव्यता अध्ययन गरी हिल स्टेसनको विकास गरिनेछ । | अवधारणा र कार्यक्षेत्रगत शर्तहरू तयार भएको । |
| १८. | दाङ जिल्लालाई अल्लो र खुकुरी, गुल्मीलाई कफी, पाल्पालाई ढाका तथा करुवा उत्पादन र बर्दियालाई वेतवाँस उद्योग, रुकुमपुर्वलाई ऊनीको कम्बल हवको रुपमा विकास गर्दै लगिनेछ । प्रदेशमा कागज उद्योगको स्थापनाका लागि निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गरिने । | दाङ जिल्लालाई अल्लो र खुकुरी, गुल्मीलाई कफी, पाल्पालाई ढाका तथा करुवा उत्पादन र बर्दियालाई वेतवाँस उद्योग, रुकुमपुर्वलाई ऊनीको कम्बल हवको रुपमा विकास गर्न कार्यक्रम सञ्चालनका लागि बजेट विनियोजन भई कार्यक्रम संचालन भएको । कागज उद्योगको सहयोगका लागि प्युठान जिल्लामा सम्पन्न भएको । |

| | | |
|-----|---|---|
| १९. | संभाव्यता अध्ययन भई घोषण भएका १० पालिकामा औद्योगिक पुर्वाधार निर्माण गर्न प्रोत्सान गरिने । | वार्षिक बजेटमा ६ वटा औद्योगिक ग्रामको पुर्वाधार निर्माणमा सहयोगका लागि बजेट विनियोजन भएको र अर्घाखाँची र नवलपरासी जिल्लामा पुर्वाधार निर्माण भएको । |
| २०. | स्मार्ट कृषि गाँउ कार्यक्रम । | स्मार्ट कृषि गाँउ कार्यक्रमलाई महत्वकांक्षी योजनाको रूपमा लिई शिक्षा, प्रसार र अनुसन्धानलाई एकीकृत गर्दै लगिएको तथा संचालित कार्यक्रमबाट कृषि सुचना केन्द्रहरुको स्थापना हुनुका साथै कृषि यान्त्रिकरणमा वृद्धि भएको, बजार पुर्वाधारहरु विकास भएको र उन्नत प्रविधि र नश्लहरुको प्रयोग बढेको । |
| २१. | सुलभ कर्जा सहजीकरण तथा ब्याजमा अनुदान कार्यक्रम, प्रतिफलमा आधारित प्रोत्साहन अनुदान । | अनुदान कार्यक्रमलाई थप प्रभावकारी गराउनका लागि सुलभ दरमा कृषि ऋण प्रदान गर्न र सोको सहजीकरण गर्न थालनी भएको सुलभकर्जा सहजीकरण तथा ब्याज अनुदान कार्यक्रमका लागि प्रदेशका सबै जिल्लामा कर्जा सहजकर्ता परिचालन गरिएको छ । यस कार्यक्रम अन्तर्गत कुल ११० आयोजना मार्फत २२ करोड ७० लाख ३५ हजार रकम ऋण स्वीकृत भएको छ । उक्त ११० आयोजनाका लागि ब्याज अनुदान वापत १ करोड २० लाख ५६ हजार १७ रुपैयाँ रकम उपलब्ध गराइएको छ । त्यसै गरि प्रतिफलमा आधारित कार्यक्रम अन्तर्गत १० जिल्लाका ६२ वटा सहकारी संस्था मार्फत करिब ६२०० दुध र मासु उत्पादनमा संलग्न कृषक घर धुरि लाभान्वित भएका । |
| २२ | प्रदेश प्रहरी इकाई भवन निर्माण । | अघिल्लो आर्थिक वर्षहरुमा प्रस्ताव गरिएका प्रदेश प्रहरी इकाई भवन निर्माण कार्यलाई निरन्तरता दिदै यो वर्ष नवलपरासीको बेलटार, रुपन्देहीको हाटिबनगाई, कपिलवस्तुको पकडी, बर्दियाको जयनगर र भुरीगाँउ, बाँकेको |

| | | |
|-----|--|--|
| | | धनौली, पाल्पाको बल्डेङगढी, प्युठानको मरन्ठा, रोल्पाको नुवागाँउ र रुकुमपुर्वको काँक्रीमा भवन निर्माणका लागि रकम वण्डा गरी रुकुमपुर्वको काक्री बाहेक अन्य सवैको बहुवर्षीय आयोजना स्वीकृत गराई ठेक्का आव्हान गरिएको । |
| २३. | जेष्ठ नागरिकसंग स्वास्थ्यमी । | जेष्ठ नागरिकसंग स्वास्थ्यकर्म कार्यक्रम सञ्चालन निर्देशिका २०७८ तयार गरी प्रकाशत भै कार्यन्वयनमा रहेको-करिव १३००० जना ७० वर्ष पुगेका नागरिकहरुलाई उक्त सेवा प्रदान गरिएको । |
| २४. | धागो कारखाना चरडगे भुम्सा सडकमा आवश्यक पर्ने सडक पुलहरुको निर्माण कार्य सम्पन्न गरी नियमित यातायात सञ्चालन हुने व्यवस्था मिलाईने । | यस सडकमा पर्ने ४ वटा पुलहरुमध्ये ३ वटा पुल सम्पन्न गरिएको । सुख्खायाममा यातायात संचलन गर्न सकिने अवस्था सृजना गरिएको । |
| २५. | सशर्त तथा समानीकरण तर्फका निर्माणाधीन मध्ये १०१ वटा सडक पुल निर्माण सम्पन्न गरिने । | ४० वटा सडक पुलहरुको निर्माणकार्य सम्पन्न गरिएको । |